◆ वर्ष -35 ◆ अंक 66 ◆ www.skhnewstv.com ◆ 14 सितम्बर 2024 फिरोजाबाद ◆ पृष्ठ : 8 ◆ मूल्य : 1

दैनिक सच क्या है की प्रस्तुति

R.N.I.NO. 56725/89

सच क्या है

(उत्तर भारत का प्रमुख हिन्दी दैनिक)

अंदर के पेज 3 | महज दो वर्ष में इंसेफेलाइटिस पर पाया काबू : आदित्यनाथ 4 | बारिश को लेकर अधिकारी रहें अलर्ट, खुले रखें फोन : जिलाधिकारी 5 | दुनिया की सबसे बड़ी भाषा है हिन्दी: प्रो. नवीन चंद्र लोहनी 6 | गोरक्षपीठ में गुरुजनों के प्रति श्रद्धा समर्पण का साप्ताहिक पर्व आज से शुरू 7 | मक्खनपुर थाना पीपुल्स फ्रेंडली व पुलिस फ्रेंडली बना

नौसेना ने लगातार दूसरे दिन दागी वर्टिकली लॉन्च शॉर्ट रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल

-भारतीय नौसेना के युद्धपोतों पर तैनाती से पहले कुछ और परीक्षण किए जाएंगे-कम ऊंचाई पर उड़ने वाले दुश्मन के जहाज या मिसाइल को मार गिराने में सक्षम

नई दिल्ली, 13 सितम्बर (हि.स.)। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने नौसेना के साथ लगातार दूसरे दिन शुक्रवार को वर्टिकल लॉन्च शॉर्ट रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल (वीएलएसआरएसएएम) का सफल उड़ान परीक्षण किया।

दोनों परीक्षणों में मिसाइल ने समुद्र से आने वाले हवाई खतरे की नकल करते हुए उच्च गति वाले कम ऊंचाई वाले हवाई लक्ष्य को सफलतापूर्वक रोका। ओडिशा तट पर चांदीपुर में एकीकृत परीक्षण रेंज से दागी गई इस मिसाइल को फिलहाल कोई नाम नहीं दिया गया है लेकिन इसे बराक-1 की जगह जंगी जहाजों में लगाए जाने की योजना है।

भारतीय नौसेना ने परीक्षण के दौरान कम ऊंचाई पर उड़ रहे टारगेट को सतह से हवा में मार करने वाली ताकतवर गाइडेड मिसाइल से मार गिराया। कम ऊंचाई पर उड़ने वाले टारगेट का मतलब राडार को चकमा देकर आ रहा दुश्मन का विमान, ड्रोन, मिसाइल या हेलीकॉप्टर होता है। यानी भारत को अब दुश्मन इस तरीके से भी चकमा नहीं दे सकता, वर्ना भारतीय की यह मिसाइल दुश्मन की धज्जियां उड़ा देगी। यह मिसाइल 154 किलोग्राम वजनी है। इसे डीआरडीओ और भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) ने मिलकर बनाया है। यह मिसाइल करीब 12.6 फीट लंबी है। इसका व्यास 7.0 इंच है।

डीआरडीओ के अनुसार इसमें हाई-एक्सप्लोसिव प्री-फ्रैगमेंटेड वॉरहेड लगाया जाता है। वीएल-एसआरएसएएम मिसाइल की रेंज 25 से 30 किलोमीटर है। यह अधिकतम 12 किलोमीटर की ऊंचाई तक जा सकती है। इसकी गति बराक-1 से दोगुनी है। यह मैक 4.5 यानी 5556.6 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से उड़ती है। इसे किसी भी जंगी जहाज से दागा जा सकता है। इस मिसाइल की तैनाती इसी साल होनी संभावित है। इस मिसाइल की खासियत ये है कि ये 360 डिग्री में घूमकर अपने दुश्मन को खत्म करके ही मानती है।

परीक्षण के दौरान डीआरडीओ ने उड़ान मार्ग और वाहन के प्रदर्शन मापदंडों की निगरानी उड़ान डेटा का उपयोग किया। परीक्षण के लिए विभिन्न रेंज उपकरणों राडार, ईओटीएस और टेलीमेट्री सिस्टम को आईटीआर, चांदीपुर ने तैनात किया गया था। डीआरडीओ और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी प्रक्षेपण की निगरानी की। भारतीय नौसेना के जहाजों पर तैनाती से पहले कुछ और परीक्षण किए जाएंगे। एक बार तैनात होने के बाद यह प्रणाली भारतीय नौसेना के लिए बहुउपयोगी साबित होगी।

इस मिसाइल की टेस्टिंग इसलिए की जा रही है, ताकि भारतीय युद्धपोतों से बराक-1 मिसाइलों को हटाकर स्वदेशी हथियार लगाया जा सके। बराक-1 मिसाइल इजरायल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज और राफेल एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम्स ने मिलकर बनाई है। इस मिसाइल का वजन 98 किलोग्राम होता है।

बराक-1 सरफेस-टू-एयर-मिसाइल 6.9 फीट लंबी होती है। इसका व्यास 6.7 इंच होता है। इसकी खासियत ये है कि इसकी नाक में यानी सबसे ऊपरी नुकीले हिस्से में 22 किलोग्राम वॉरहेड रखा जा सकता है।

अमित शाह शनिवार को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को संबोधित करेंगे

नई दिल्ली, 13 सितंबर (हि.स.)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह शनिवार को नई दिल्ली में राजभाषा हीरक जयंती समारोह एवं चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करेंगे। राजभाषा विभाग हिंदी के राजभाषा बनने के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 14-15 सितंबर को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में चौथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित कर रहा है।

राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री ह्यराजभाषा भारतीह्ण पत्रिका के हीरक जयंती विशेषांक का विमोचन करेंगे। हीरक जयंती को यादगार बनाने के लिए अमित शाह एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी करेंगे। गृह मंत्री इस अवसर पर राजभाषा गौरव और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही कुछ और पुस्तकों और पत्रिकाओं का विमोचन भी करेंगे।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री भारतीय भाषा अनुभाग का भी शुभारंभ करेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास तथा उनके बीच बेहतर समन्वय पर जोर देते रहे हैं। संविधान की मंशा और प्रधानमंत्री के निर्देश को ध्यान में रखते हुए हिंदी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने और उनके बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना का प्रस्ताव रखा था।

दो दिवसीय चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में पिछले 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति पर गहन चर्चा होगी। सम्मेलन के पहले दिन 14 सितंबर को भोजनोपरांत सत्र में 'राजभाषा हीरक जयंती - 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति' पर चर्चा होगी। जबकि दूसरा सत्र 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी' होगा, जिसे लोकप्रिय हिंदी कवि और वक्ता डॉ. कुमार विश्वास संबोधित करेंगे।

15 सितंबर को सम्मेलन के तीसरे सत्र में देश के प्रसिद्ध भाषाविद् और कोशकार 'भाषा शिक्षण में शब्दकोष की भूमिका और देवनागरी लिपि की विशेषता' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। चौथा सत्र तकनीकी युग में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में "नगर राजभाषा समिति" का योगदान' विषय पर होगा। पांचवां सत्र 'भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023: एक परिचर्चा' पर होगा, जिसे केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल संबोधित करेंगे। अंतिम सत्र 'हिंदी भाषा के विकास का सशक्त माध्यम भारतीय सिनेमा' होगा, जिसे प्रसिद्ध अभिनेता अनुपम खेर और सुप्रसिद्ध फिल्म निमार्ता एवं निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी संबोधित करेंगे।

उद्घाटन सत्र में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय और बंदी संजय कुमार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष भर्तृहरि महताब और समिति के अन्य सदस्य, भारत सरकार के सचिव, विभिन्न बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दक्षिण भारत के दो हिंदी विद्वान प्रो. एम. गोविंदराजन और प्रो. एसआर सराज्रू तथा हिंदी जगत के दो प्रख्यात विद्वान प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित और डॉ. हरिओम पंवार उपस्थित रहेंगे।

दो दिवसीय सम्मेलन में 10,000 से अधिक प्रतिभागियों के भाग लेने की उम्मीद है, जिसमें देशभर के राजभाषा अधिकारियों के साथ-साथ हिंदी विद्वान और भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल होंगे।

देश में बारिश से सामान्य जनजीवन बेहाल , दिल्ली-एनसीआर तरबतर, उत्तराखंड में केदारनाथ यात्रा रोकी गई

नई दिल्ली, 13 सितंबर (हि.स.)। देश के अधिकांश हिस्सों में बरसात से सामान्य जनजीवन बेहाल है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और आसपास का इलाका बरसात से तरबतर है। पिछले 48 घंटे से कभी मध्यम तो कभी तेज बरसात हो रही है। आज भी दिल्ली-एनसीआर को कोई राहत मिलती नहीं दिख रही। उत्तराखंड में तो आज बारिश कहर बरपा सकती है। भारत मौसम विज्ञान विभाग का पूवार्नुमान यही संकेत दे रहा है। खराब मौसम की वजह से गुरुवार को केदारनाथ यात्रा रोक दी गई।

इन राज्यों को चेताया गया

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने आज दिल्ली के लिए येलो, उत्तराखंड के लिए रेड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल ओडिशा, मिजोरम, नगालैंड, मणिपुर और त्रिपुरा के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। विभाग ने मानसून के बारे में एक तात्कालिक चेतावनी जारी की है। इसमें कहा गया है कि मौजूदा मौसम प्रणाली अगले नौ घंटों तक उत्तर भारत के क्षेत्र को प्रभावित करेगी। राजस्थान में धौलपुर और आसपास के क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश के कारण पार्वती बांध के 10 गेट खोल दिए गए हैं। इससे 50 गांव संकट से घिर गए हैं।

मानसून की वापसी अगले हफ्ते से संभव

मौसम विज्ञान विभाग का पूवार्नुमान है कि आज दिल्ली में दिन भर बादल छाए रहेंगे। अधिकांश हिस्सों में बारिश होती रहेगी। इस दौरान 25 से 35 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। अधिकतम तापमान 31 और न्यूनतम 21 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। विभाग का कहना है कि देश को अगले सप्ताह से कुछ राहत मिलेगी। मौसम विज्ञानियों का मानना है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून 19 से 25 सितंबर के बीच देश से लौटने लगेगा।यह आमतौर पर पहली जून तक केरल में प्रवेश करता है और आठ जुलाई तक पूरे देश में पहुंच जाता है। यह 17 सितंबर के आसपास उत्तर-पश्चिम भारत से हटना शुरू हो जाता है। 15 अक्टूबर तक पूरी तरह लौट जाता है।

कहीं अधिक, कहीं कम पानी बरसा

भारत मौसम विज्ञान विभाग के अधिकारियों के अनुसार, देश में एक जून से अब तक के मानसून सीजन में 836.7 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है। यह सामान्य वर्षा से आठ प्रतिशत अधिक है। पूर्व और पूर्वोत्तर भारत में सामान्य से 16 प्रतिशत कम, उत्तर-पश्चिम, मध्य और दक्षिण भारत में क्रमशः चार, 19 और 25 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई है।

48 घंटे में 47 लोगों की मौत

देश के अलग-अलग हिस्सों में भारी बारिश ने 48 घंटों में 47 लोगों की जान ली। इनमें उत्तर प्रदेश में 32, मध्य प्रदेश में 11 और राजस्थान में चार लोग काल-कलवित हुए। उत्तराखंड में केदारनाथ यात्रा रोकने के साथ प्रदेश में आज 12वीं कक्षा तक के सभी स्कूलों को बंद रखने का आदेश दिया गया है। विभाग ने अभी तीन दिन और हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड समेत 14 राज्यों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है।

तीन दिन भारी

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने आगामी तीन दिन तक उत्तर से लेकर पूर्वोत्तर के राज्यों में अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत अधिक बारिश की चेतावनी दी है। इन प्रदेशों में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और झारखंड शामिल हैं।

सोनप्रयाग में 2500 यात्री फंसे

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में भारी बारिश की वजह से कल केदारनाथ पैदल मार्ग को बंद करना पड़ा। सुरक्षा के दृष्टिगत केदारनाथ धाम से किसी को नीचे नहीं भेजा गया। यात्रा बंद होने के कारण सोनप्रयाग में लगभग 2,500 यात्री फंसे हुए हैं। राज्य में बारिश और भूस्खलन के कारण 168 मार्ग बंद हैं। इसमें राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, बार्डर रोड से लेकर ग्रामीण मोटर मार्ग शामिल हैं। मौसम विज्ञान केंद्र ने देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी, बागेश्वर, नैनीताल, चंपावत और ऊधमसिंह नगर जिले के अधिकतर हिस्सों में भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। अन्य जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। हिमाचल प्रदेश के 12 में से पांच जिलों में आज के लिए यलो अलर्ट जारी किया गया है।

इसे कहते हैं येलो अलर्ट

भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, यलो अलर्ट मौसम बिगड़ने की संभावना को देखते हुए जारी किया जाता है। इसके तहत लोगों को लगातार मौसम का अपडेट लेने की सलाह दी जाती है।

इसे कहते हैं ऑरेंज अलर्ट

ऑरेंज अलर्ट तब जारी किया जाता है, जब मौसम का स्तर अधिक गड़बड़ होता है। इस स्थिति में आंधी-तूफान व तेज बारिश की भी संभावना होता है। लोगों को अनावश्यक रूप से बाहर न निकलने के लिए सतर्क किया जाता है।

इसे कहते हैं रेड अलर्ट

रेड अलर्ट तब जारी किया जाता है, जब मौसम बहुत अधिक खराब होता है। इसके तहत तेज बारिश होने की संभावना और बादल फटने की आशंका होती है। इस स्थिति में जान-माल का अधिक नुकसान होने की आशंका रहती है। अगर रेड अलर्ट है तो लोगों को घरों से बाहर नहीं निकलना चाहिए।

'भारत की विकास क्षमता 7.5 फीसदी से अधिक है' : शक्तिकांत दास

सिंगापुर/नई दिल्ली, 13 सितंबर (हि.स.)। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने

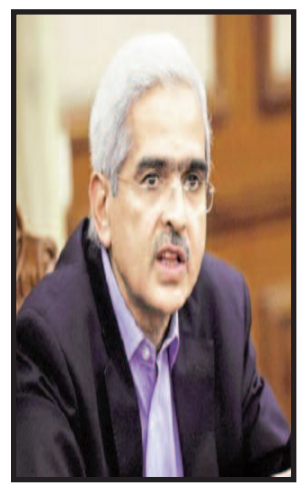

शुक्रवार को कहा कि भारत में कम से कम 7.5 फीसदी की वृद्धि की संभावना है। वह सिंगापुर में ब्रेटन वुड्स कमेटी द्वारा आयोजित ह्यफ्यूचर ऑफ फाइनेंस फोरम 2024ह्ण को संबोधित कर रहे थे।

शक्तिकांत दास ने कहा कि भारत का वृद्धि परिदृश्य देश के वृहद आर्थिक बुनियाद की मजबूती को बताता है।

उन्होंने कहा कि इसमें निजी उपभोग और निवेश जैसे घरेलू तत्व प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। आरबीआई गवर्नर का यह अनुमान भारतीय रिजर्व बैंक के चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 7.2 फीसदी की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान से थोड़ा ऊपर है। हालांकि, दास ने मुद्रास्फीति में गिरावट के बावजूद फिलहाल ब्याज दरों में कटौती से इनकार किया।

उन्होंने ब्रेटन वुड्स कमेटी के वार्षिक फ्यूचर ऑफ फाइनेंस फोरम 2024 को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आर्थिक वृद्धि को वृहत आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के माहौल का समर्थन है।

आरबीआई गवर्नर ने कहा कि मुझे लगता है कि आज भारत की संभावित वृद्धि...लगभग साढ़े सात फीसदी से अधिक है। दास ने दुनिया को बढ़ते वैश्विक कर्ज के बारे में आगाह किया है, जो 2024 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 333 फीसदी के बराबर 315 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ गया है।

आरबीआई गवर्नर ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में बढ़ रही चुनौतियों के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान किया। शक्तिकांत दास ने साझा वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों को मजबूत करने की वकालत की। साथ ही उन्होंने सतत आर्थिक विकास और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को भी रेखांकित किया।

दास ने राष्ट्रों से सभी के लिए एकीकृत भविष्य की दिशा में काम करने का आग्रह किया।

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी: पाकिस्तान के खिलाफ हाई-वोल्टेज मुकाबले के लिए तैयार भारतीय हॉकी टीम

नई दिल्ली, 13 सितंबर (हि.स.)। भारत एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के अपने आखिरी ग्रुप चरण मैच में 14 सितंबर को चीन के हुलुनबुइर में मोकी हॉकी ट्रेनिंग बेस में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगा।

जहां शीर्ष ड्रैग फ्लिकर हरमनप्रीत सिंह के नेतृत्व में भारत टेबल टॉपर के रूप में मैच में उतरेगा, वहीं अम्माद बट के नेतृत्व वाला पाकिस्तान अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम के रूप में भारत से भिड़ेगा।

गत चैंपियन ने टूनार्मेंट को पसंदीदा के रूप में खेला है और प्रत्येक मैच जीता है। भारत ने पहले मैच में मेजबान चीन को 3-0 से हराया, दूसरे मैच में जापान को 5-1 से हराया, तीसरे मैच में मलेशिया को 8-1 से हराया और पिछले मैच में कोरिया के खिलाफ 3-1 से जीत हासिल की।

भारत टूनार्मेंट में सेमीफाइनल में जगह पक्की करने वाली पहली टीम थी।

दूसरी ओर, पाकिस्तान इस अभियान में लचीला रहा है। हॉकी के दिग्गज ताहिर जमान के सतर्क मार्गदर्शन में खेल रही

टीम ने मलेशिया और कोरिया के खिलाफ 2-2 से ड्रा खेला, जापान को 2-1 से और चीन को 5-1 से हराकर अंक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत ने कहा, ''मैं अपने जूनियर दिनों से ही पाकिस्तान टीम के कुछ खिलाड़ियों के साथ खेल रहा हूं और हमारा उनके साथ एक विशेष रिश्ता है। वे मेरे भाई जैसे हैं. बेशक, मैदान पर हम मैच के बारे में वैसे ही सोचेंगे जैसे हम किसी अन्य प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि हम अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें।'' हरमनप्रीत ने कहा, "विश्व हॉकी में, दोनों टीमों के बीच की प्रतिद्वंद्विता अद्वितीय है और मुझे यकीन है कि दुनिया भर के प्रशंसक भारत-पाकिस्तान मैच का इंतजार कर रहे होंगे।" पाकिस्तान के कप्तान अम्माद ने कहा, ह्लभारत ने टूनार्मेंट में अब तक सच्चे प्रबल दावेदार की तरह खेला है। हमने जो मैच खेले हैं उनसे हमें प्रेरणा मिलेगी और मुझे कहना होगा कि हमने हर एक गेम में सुधार किया है, बिना कार्ड गंवाए और अनुशासित हॉकी खेली है। हम कल भारत के खिलाफ भी ऐसा ही करने को उत्सुक हैं।ह्व

उन्होंने कहा, "पिछले कुछ मैचों में, हमने अपने विरोधियों के खिलाफ बहुत अच्छा बचाव किया है और भारत के खिलाफ भी, हम विशेष रूप से पीसी रक्षा में अच्छा बचाव करना चाहेंगे।"

हाल के दिनों में भारत ने पाकिस्तान को काफी मजबूती से पछाड़ दिया है। पिछले साल हांगझू में एशियाई खेलों में, भारत ने पूल मैच में पाकिस्तान को 10-2 से हराया था, और उससे कुछ महीने पहले ही, चेन्नई में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तान को 4-0 से हराया था। हरमनप्रीत सिंह का मानना है कि पाकिस्तान से भिड़ने से पहले आंकड़ों की स्लेट साफ हो जाएगी। उन्होंने कहा,ह्लजब हम पाकिस्तान जैसी टीम से भिड़ेंगे तो पिछले नतीजे कोई मायने नहीं रखेंगे। वे एक कठिन टीम हैं और खेल के किसी भी चरण में वापसी करने की क्षमता रखते हैं। हम कल एक अच्छे मैच की उम्मीद करेंगे। दिन के अन्य मैचों में मलेशिया का मुकाबला कोरिया से होगा जबकि मेजबान चीन का मुकाबला जापान से होगा।

भारतीय मूल के दक्षिण अफ्रीकी नेता प्रवीण गोरधन नहीं रहे, राष्ट्रपति रामफोसा ने दुख जताया

जोहानिसबर्ग, 13 सितंबर (हि.स.)। भारतीय मूल के दक्षिण अफ्रीकी नेता और देश के पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रवीण गोरधन नहीं रहे। कैंसर पीड़ित गोरधन ने आज सुबह यहां एक अस्पताल में 75 वर्ष की आयु में आखिरी सांस ली। शोक संतप्त उनके परिवार ने यह जानकारी दी। वह दक्षिण अफ्रीका की राजनीति में नब्बे के दशक से लगभग चार माह पहले तक सक्रिय रहे।

दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख समाचार पत्र द मेल ऐंड गार्जियन के अंग्रेजी संस्करण की खबर के अनुसार, नेशनल असेंबली के पूर्व अध्यक्ष और भारतीय मूल के प्रवीण गोरधन ने रंगभेद-विरोधी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने चार माह पूर्व सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की। राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने शोक संदेश में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के सदस्य रहे गोरधन की सराहना करते हुए उन्हें एक उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का प्रमुख प्रणेता बताया है। उन्होंने परिवार के प्रति संवेदना जताते हुए गोरधन के निधन पर दुख जताया है।

द मेल ऐंड गार्जियन के मुताबिक, गोरधन 'संक्रमणकालीन कार्यकारी परिषद' के सह-अध्यक्ष रहे हैं। इसका गठन रंगभेद नीति के खिलाफ संघर्ष के लिए जेल में बंद नेल्सन मंडेला की रिहाई के बाद किया गया। गोरधन ने 2009 से 2014 तक और इसके बाद 2015 से 2017 तक वित्तमंत्री के रूप में दो कार्यकाल पूरे किए। उन्होंने 2014 से 2015 तक सहकारी शासन और पारंपरिक मामलों के मंत्री के रूप में भी कार्य किया। वह सार्वजनिक उद्यम मंत्री भी रहे। उन्हें परिवार ने इस सप्ताह की शुरूआत में कैंसर के इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया था। गोरधन के अंतिम क्षणों में अस्पताल में उनके परिवार के सदस्य और करीबी दोस्त मौजूद रहे। उन्होंने एक दशक तक दक्षिण अफ्रीकी राजस्व सेवा के आयुक्त के रूप में भी कार्य किया।

सम्पादकीय

कहां है पगड़ी पर पाबंदी ?

राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष हैं। भारतीय लोकतंत्र में विपक्ष का प्रथम चेहराह्ल। हम पहले भी लिख चुके हैं कि ऐसे राजनेता को ह्यछाया प्रधानमंत्रीह्ल माना जाता है, क्योंकि प्रधानमंत्री के बाद उसे ही सर्वाधिक समर्थन और बहुमत हासिल होता है। लिहाजा हम बार-बार उनके कथनों, गलत तथ्यों और भारत-विरोध के मद्देनजर सवाल नहीं उठाना चाहते। प्रधानमंत्री मोदी ने भी जब विदेशी जमीं पर या संसद के भीतर अथवा चुनाव प्रचार के दौरान आपत्तिजनक और अमर्यादित टिप्पणियां की हैं, तो मीडिया में उनकी पर्याप्त आलोचना की गई है, लेकिन यह नहीं हो सकता अथवा यह कुतर्क है कि प्रधानमंत्री ने विदेश में भारत का अपमान किया है, तो नेता प्रतिपक्ष भी देश की प्रतिष्ठा पर कालिख पोतने की कोशिश करेंगे। यह राहुल गांधी की राजनीति है अथवा वह वाकई भारत को बेइज्जत करने पर आमादा रहते हैं, लेकिन यह तय है कि वह अक्सर गलत, भ्रामक तथ्य पेश करते रहे हैं। ताजा संदर्भ सिखों का है। अमरीका प्रवास के दौरान उन्होंने मंच से एक सिख नौजवान का नाम पूछा और फिर आशंका जताई कि सिख भारत में पगड़ी और कड़ा पहन पाएंगे या नहीं! वे गुरुद्वारे में प्रवेश पा सकेंगे या नहीं! दरअसल राहुल की यह सवालिया आशंका ही निर्मूल है, क्योंकि भारत में ऐसी स्थिति नहीं है। कहीं भी पगड़ी, कड़े पर पाबंदी नहीं है। राहुल ने दावा किया कि वह यह लड़ाई लड़ रहे हैं। सवाल है कि किसके खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं, जबकि ऐसे हालात ही नहीं हैं। भारत में प्रतिबंधित खालिस्तानी संगठन ह्यसिख फॉर जस्टिसह्ल के आतंकी नेता पन्नू ने राहुल गांधी के इस बयान को ह्यबोल्डह्ल करार दिया और उनका समर्थन भी किया। पन्नू अमरीका और कनाडा में सक्रिय है। यदि वह भारत आता है, तो फांसी तक की सजा दी सकती है, उसके खिलाफ इतने और ऐसे केस दर्ज हैं। यहां भी सवाल है कि क्या राहुल भारत में ह्यखालिस्तानह्ल बनाने की मांग की पुष्टि करते हैं? क्या ऐसी ताकतों के समर्थन में ही वह जहर उगलते रहे हैं? देश का कैसा दुर्भाग्य है कि ऐसा नेता प्रतिपक्ष मिला है, जो ह्यखालिस्तानी खाडकुओंह्ल के साथ खड़ा है और उनकी ही पैरोकारी करता है? शायद राहुल गांधी 1984 का वह दौर भूल गए हैं, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री एवं उनकी आदरणीय दादी इंदिरा गांधी की हत्या, प्रधानमंत्री आवास में ही, कर दी गई थी। प्रतिक्रिया में देश में सिख-विरोधी दंगे भडकाए गए थे। वास्तव में वे नरसंहार ही थे, जिनमें करीब 3000 सिखों की हत्या कर दी गई थी। कांग्रेस के तत्कालीन नेता सज्जन कुमार बीते कई सालों से जेल में हैं और पूर्व मंत्री जगदीश टायटलर पर केस चलेगा।

गांधी परिवार ने आज तक सिखों से सार्वजनिक माफी तक नहीं मांगी। उस दौर के कुछ अपवाद हमने अपनी आंखों से देखे हैं, जब सिखों के एक वर्ग को अपने केश कटवाने पड़े थे, लिहाजा पगड़ी भी नहीं पहनी गई थी। सिखों के केश पकड़ कर भीड़ उन्हें ऐसे झुलाती थी मानो किसी खिलौने से खेल रहे हों! सिखों ने ऐसी शारीरिक और मानसिक यंत्रणाएं झेली हैं कांग्रेस शासन के दौरान! इसके बावजूद सिख भारत के साथ एकजुट खड़े रहे, मुख्यधारा में रहे और यहां तक कि कांग्रेस को भी समर्थन दिया। अफगानिस्तान में जब तालिबान हुकूमत आई और चारों ओर अराजकता और बर्बरता थी, तब मोदी सरकार के सिख मंत्री हरदीप सिंह को भेजा गया। उन्होंने ह्यपवित्र ग्रंथ साहिबह्ल को सिर पर धारण किया, कई सिखों का बचाव किया और उस पवित्र ग्रंथ को भारत लाकर स्थापित किया। सिख तब से हमारे साथ हैं, जब भारत में मुगल हुकूमत का ह्यकसाई राजह्ल था। सिख गुरुओं ने हिंदुस्तान और सनातन धर्म की हिफाजत के लिए कुर्बानियां दीं। परिवार का सबसे ज्येष्ठ पुत्र ह्यसिक्खीह्ल धारण करता था। राहुल गांधी को इस पवित्र इतिहास की कहां जानकारी होगी? वह अब भी दोहरा रहे हैं कि भारत में पिछले 10 सालों में लोकतंत्र को बहुत नुकसान हुआ है। संविधान पर आरएसएस-भाजपा लगातार हमले कर रही हैं। चुनाव आयोग ने निष्पक्ष चुनाव नहीं कराया। यदि ऐसा है, तो वह रायबरेली सीट से 3.90 लाख वोट से कैसे जीत गए? कांग्रेस के 52 की जगह 99 सांसद जीत कर संसद तक कैसे आ गए? ऐसे ढेरों मुद्दे हैं, जिन पर राहुल ने देश को गुमराह किया है। पता नहीं, उनके मंसूबे क्या हैं? महज सियासत के लिए ऐसे आरोप नहीं लगाए जाने चाहिए। भारत में लोकतंत्र आज भी जीवित है और सभी को अपनी बात कहने का हक है।

जन्म के रुदन की भी भाषा है हिंदी!

हिंदी दिवस (14 सितंबर) पर विशेष

डॉ. श्रीगोपाल नारसन

हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली संसार की तीसरी भाषा है। भारत के साथ मॉरीशस, युगांडा, गुयाना, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, सूरीनाम, त्रिनिदाद, साउथ अफ्रीका में हिंदी बोलने व हिंदी में लिखने वालों की संख्या बढ़ी है। अमेरिका, यूरोपीय, एशियाई व खाड़ी के देशों में भी हिन्दी का निरन्तर विकास हुआ है। रूस के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य में शोध हुआ है। हिन्दी साहित्य में जितना अनुवाद रूस ने कराया, उतना किसी अन्य भाषा के साहित्य का नहीं कराया गया। यह हिंदी के प्रति बढ़ते रुझान का प्रमाण है।

हम हिंदी को मात्र भारत की भाषा तक सीमित नहीं रख सकते। 'अ', 'आ','इ', 'ई','ओ','उ' आदि हिंदी के अक्षरों में जो स्वर ध्वनि उनके उच्चारण से प्रकट होती है, वही ध्वनि नवजात शिशु के रुदन से भी प्रकट होती है। संसार के सभी नवजातों के रुदन की ध्वनि एक ही प्रकार की है। इसलिए हम कह सकते हैं कि हिंदी हर मनुष्य के जन्म की भाषा है। अपने देश की विभिन्न भाषाओं में सबसे प्रभावी किसी एक भाषा को चुन कर उसे राष्ट्रीय अस्मिता का आवश्यक उपादान समझते हुए जब सम्मान व आत्मसात किया जाता है तो वही भाषा राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य हो जाती है।

चूंकि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी स्वाधीनता सेनानियों के सम्पर्क की भाषा रही, इसीलिए हिंदी राष्ट्रभाषा कहलाई। वास्तव में 'राष्ट्रभाषा' शब्द कोई संवैधानिक शब्द नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक व जनमान्यता प्राप्त शब्द है। हिंदी जिसे हम राष्ट्रभाषा मानते हैं, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है। इसकी प्राथमिकता देश में विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करना भी है। राष्ट्रभाषा हमेशा स्वभाषा ही हो सकती है क्योंकि उसी के साथ जनता का भावनात्मक लगाव होता है। राष्ट्रभाषा का स्वरूप लचीला होता है और इसे जनता के अनुरूप किसी रूप में ढाला जा सकता है।

भारत में हिंदी दीर्घकाल से जन-जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तर भारत ही नहीं, दक्षिण भारत के आचार्यों वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद, शंकराचार्य आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था। अहिंदी भाषी राज्यों के भक्त-संत कवियों जैसे, असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य आदि ने इसी भाषा को अपने धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया था।

जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापना के क्रम में जब फारसी या अंग्रेजी के माध्यम से परेशानी हुई तो अंग्रेजों ने फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदी विभाग खोल कर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था की। यहाँ से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देकर मुक्त कंठ से हिंदी को सराहा। सी. टी. मेटकाफ ने 1806 ई. में अपने गुरु जॉन गिलक्राइस्ट को लिखा-'भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा, कलकत्ता से लेकर लाहौर तक, कुमाऊँ के पहाड़ों से लेकर नर्मदा नदी तक मैंने उस भाषा का आम व्यवहार देखा है, जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी है। मैं कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक या जावा से सिंधु तक इस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हिन्दुस्तानी बोल लेते होंगे।'

टॉमस रोबक ने 1807 ई. में लिखा-'जैसे इंग्लैण्ड जाने वाले को लैटिन सेक्सन या फ्रेंच के बदले अंग्रेजी सीखनी चाहिए, वैसे ही भारत आने वाले को अरबी-फारसी या संस्कृत के बदले हिन्दुस्तानी यानि हिंदी सीखनी चाहिए।' विलियम केरी ने 1816 ई. में लिखा- 'हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।' एच. टी. कोलब्रुक ने लिखा-'जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रान्त के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है, जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े बहुत लोग अवश्य ही समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम हिंदी है।' जार्ज ग्रियर्सन ने हिंदी को 'आम बोलचाल की महाभाषा' कहा है।

हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता, देशव्यापी प्रसार एवं प्रयोगगत लचीलेपन के कारण अंग्रेजों ने हिंदी को अपनाया। उस समय हिंदी और उर्दू को एक ही भाषा माना जाता था। अंग्रेजों ने हिंदी को प्रयोग में लाकर हिंदी की महती संभावनाओं की ओर राष्ट्रीय नेताओं एवं साहित्यकारों का ध्यान खींचा था। ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने सन 1828 में कहा, इस समग्र देश की एकता के लिए हिंदी अनिवार्य है। ब्रह्मसमाजी केशव चंद्र सेन ने 1875 ई. में एक लेख लिखा, भारतीय एकता कैसे हो, 'जिसमें उन्होंने लिखा- उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार। अभी जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिंदी अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बन जाए तो यह काम सहज और शीघ्र ही सम्पन्न हो सकता है। एक अन्य ब्रह्मसमाजी नवीन चंद्र राय ने पंजाब में हिंदी के विकास के लिए स्तुत्य योगदान दिया।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती गुजराती भाषी थे एवं गुजराती व संस्कृत के अच्छे जानकार थे। हिंदी का उन्हें सिर्फ.कामचलाऊ ज्ञान था, पर अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा देश की एकता को मजबूत करने के लिए उन्होंने अपना सारा धार्मिक साहित्य हिंदी में ही लिखा। उनका कहना था कि हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। वे इस 'आर्यभाषा' को सर्वात्मना देशोन्नति का मुख्य आधार मानते थे। उन्होंने हिंदी के प्रयोग को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। वे कहते थे, 'मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँगे।'

महर्षि अरविन्द घोष की सलाह थी कि 'लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिंदी को ग्रहण करें।'

एनी बेसेंट ने कहा था, "भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में जो अनेक देशी भाषाएँ बोली जाती हैं, उनमें एक भाषा ऐसी है जिसमें शेष सब भाषाओं की अपेक्षा एक भारी विशेषता है, वह यह कि उसका प्रचार सबसे अधिक है। वह भाषा हिंदी है। हिंदी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिंदी बोलने वाले मिल सकते हैं। भारत के सभी स्कूलों में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।"

सन 1885 ई. में स्थापित कांग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन जैसे-जैसे जोर पकड़ता गया, वैसे-वैसे राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय झण्डा एवं राष्ट्रभाषा के प्रति आग्रह बढ़ता ही गया। 1917 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा, "मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" तिलक ने भारतवासियों से आग्रह किया कि वे हिंदी सीखें। महात्मा गाँधी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा को नितांत आवश्यक मानते थे। उनका कहना था, "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।" गाँधीजी हिंदी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे- "हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।" सन 1927 में सी. राजगोपालाचारी ने दक्षिण वालों को हिंदी सीखने की सलाह दी और कहा, "हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।" 1929 में सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी को ही मिला है।"

सन 1928 ई. में प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट में भाषा सम्बन्धी सिफारिश में कहा गया था, "देवनागरी अथवा फारसी में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी भारत की राष्ट्रभाषा होगी, परन्तु कुछ समय के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा।" सिवाय 'देवनागरी या फारसी' की जगह 'देवनागरी' तथा 'हिन्दुस्तानी' की जगह 'हिंदी' रख देने के अंततः स्वतंत्र भारत के संविधान में इसी मत को अपना लिया गया।

इंटरनेट पर हिंदी भाषा सामग्री लिखने व पढ़ने वालों की संख्या में हर साल 94 प्रतिशत से अधिक बढ़ोतरी हो रही है। अंग्रेजी भाषा में हर साल 17 प्रतिशत की गिरावट भी हिंदी के बढ़ने का एक बड़ा कारण है। इस साल के अंत तक दुनिया में 20 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी को अपनाने लगेंगे। संसार के 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। हिन्दी भाषा का अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान निरन्तर बढ़ रहा है। फिजी में हिन्दी को राजभाषा का अधिकारिक दर्जा मिला प्राप्त है। जो अवधी, भोजपुरी और क्षेत्रीय बोलियों से मिलकर बनी है।अमेरिका के तीस से अधिक विश्वविद्यालयो में हिंदी पर काम हो रहा है।जापान में हिंदी के प्रति रुचि और इसे कैरियर व व्यवसाय से जोड़कर हिंदी के पाठ्यक्रम शुरू किए गए है।जो हिंदी के लिए एक शुभ संकेत है।

(लेखक, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ के उपकुलपति व वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

आज का राशिफल

मेष : अपने काम को प्राथमिकता से करें। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। स्वभाव में सौम्यता आपकी मदद करेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-3-5-7

वृष : समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-2-4-6

मिथुन : जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। मायूस न हो समय चक्र हैं। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। शत्रुभय, चिंताए संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। धन के लेन-देन में सतर्क रहें। शुभांक-2-5-8

कर्क : परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। वैवाहिक जीवन में प्रेम-प्रीति बढ़ेगी। जीवन साथी से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। राजकीय सम्मान प्राप्त होने के योग हैं। शांतिपूर्वक कार्य करें, जान है तो जहान है, वाहन आदि चलाने में सावधानी बरतें। अपना कार्य स्वयं करें, किसी के भरोसे न रहें। शुभांक-1-5-8

सिंह : नये लोगों से मेल-मिलाप भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा। घर तथा व्यावसाय को एक-दूसरे से दूर ही रखें। व्यापारिक संबंधों में प्रगति के योग हैं। स्थान परिवर्तन की संभावना है। कार्य स्थल पर नियमपूर्वक व्यवहार लाभकारी होगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। शुभांक-2-5-7

कन्या : धन के लेन-देन में सतर्क रहें। बातचीत में संयम बरतें। मन में चंचलता बढ़ेगी। भावुकतावश निर्णय न लें। कर्ज देने से बचें। मानसिक व्यथा व संतान के कारण परेशानी होगी। कला क्षेत्र के जातकों को मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शुभांक-2-6-8

तुला : सरकारी पक्ष से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पुराना विवाद समाप्त होगा। आर्थिक मजबूती हेतु मन केन्द्रित होगा। मिल रहे अवसरों का लाभ उठाएं। आर्थिक योजनाएं फलित होंगी। बकाया धन की प्राप्ति के योग हैं। शुभांक-1-5-8

वृश्चिक : उत्साह में वृद्धि होगी। आलस्य का त्याग करें। नये आय के स्त्रोत बनेंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। पसंदीदा भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। लम्बे प्रवास व चुनौती पूर्ण कार्यों का सामना हो सकता है। व्यवसायिक क्षेत्र में आपकी मेहनत व लगन की परीक्षा होगी। शुभांक-3-6-9

धनु : लेन-देन में स्पष्टता बनाये रखें। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। शुभांक-3-5-7

मकर : आज की सुविधा कल नहीं मिल पायेगी, लाभ उठाएं। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। शुभ कार्यों में व्यय होगा व हर्ष पूर्ण माहौल बनेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। धार्मिक यात्रा शुभ है। शुभांक-3-5-8

कुंभ : अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। आज का परिश्रम आगे लाभ देगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-3-6-9

मीन : व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। कारोबारी यात्रा सफल होगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-8

सऊदी अरब के जम्बू में ड्यूटी कर रहे युवक की कंटेनर से कुचलकर मौत

बिजनौर, 13 सितम्बर (हि.स.) अफजलगढ़ के फैसल (26वर्ष) की सऊदी अरब में काम करते समय कंटेनर से कुचलकर दर्दनाक मौत हो गई सूचना मिलने पर परिवार में मातम छा गया है

मालूम हो कि फैसल सऊदी अरब के जम्बू में ड्यूटी कर रहा था। फैसल यहाँ प्लम्बर का काम करता था । ड्यूटी करते समय कंटेनर के नीचे दबने के कारण फैसल की मौत हुई है फैसल पुत्र लियाकत अफजलगढ़ के मौहल्ला नेजो सराय का रहने वाला था। उसके माता-पिता की पहले ही मौत हो चुकी है फैसल मजदूरी कर अपनी दो बहनों व एक भाई का पालन-पोषण करता था उसकी मौत की सूचना मिलने पर दोनों बहन व भाई का रो रोकर बुरा हाल है

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: सेवा के सौ वर्षों की स्वर्णिम यात्रा

हृदयनारायण दीक्षित

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 बरस का होने जा रहा है। संघ संप्रति दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। दुनिया का कोई भी देश ऐसा स्वयंसेवी संगठन नहीं बना पाया। डॉ. हेडगेवार ने इसकी स्थापना विजयदशमी (सन 1925) के दिन की थी। तबसे अब तक हजारों झंझावात झेलते हुए संघ लगातार सक्रिय है। संघ की कार्य पद्धति विशिष्ट है, इसके बारे में कम लोग जानते होंगे। कई स्वयंभू विद्वान संघ को ब्रेनवाश कर देने वाला संगठन मानते हैं। कई इसे सांप्रदायिक भी कहते हैं। केवल कहते ही नहीं संघ का विरोध करने के लिए हिन्दू विरोधी तमाम घटनाओं में संघ की साजिश बताते हैं, लेकिन संघ अपने सेवा कार्यों में संलग्न रहता है। सो डॉ. हेडगेवार द्वारा रोपा गया बीज अब विराट वृक्ष बन गया है।

संघ और भाजपा के रिश्तों पर बहसें चलती हैं। तब भाजपा का नाम जनसंघ था। देश की राजनीति में तुष्टिकरण था। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारतीय स्वाधीनता की घोषणा (20-2-1947) की। मुस्लिम लीग की अलग मुल्क की मांग पर युद्ध जैसी आक्रामकता थी। कट्टरपंथी अलगाववाद को तुष्टिकरण का पुष्टाहार मिला। देश बंट गया। हजारों हिन्दू मारे गए। महात्मा गांधी की भी हत्या हुई। संघ पर प्रतिबंध लगा। पाकिस्तानी कबाइली हमला (1948) हुआ। तत्कालीन राजनैतिक दल व नेता राष्ट्रवाद से दूर थे। हिन्दुओं के मर्म से दूर थे। एक राष्ट्रवादी दल की आवश्यकता थी। श्री गुरुजी की प्रेरणा से भारतीय जनसंघ की स्थापना (1951) हुई। जम्मू कश्मीर के दो निशान, दो प्रधान, दो विधान का विरोध, गोवध निषेध और समान नागरिक कानून जैसे राष्ट्रवादी मुद्दे गरमाए। सरसंघचालक गुरु जी ने गोवध निषेध व हिन्दू श्रद्धा स्थान को नष्ट करने की प्रवृत्ति पर लिखते (1952) हुए कहा, ह्यह्यगाय अनादि काल से आराध्य है। समाज विजेता के उन्माद में पराजित जाति को अपमानित करते हुए श्रद्धा स्थानों को नष्ट करना, धन, मान लूटना, मानो विजय आनन्द लेना है।ह्यह्य

तिब्बत पर चीनी कब्जा हुआ, गुरु जी ने इसे हृदय विदारक (18 मई 1959) बताया। भारत पर चीन का हमला 1962 में हुआ था। तत्कालीन सरसंघचालक ने दिल्ली में कहा था, ह्यह्यसेना के लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिए। उनके परिवारों की सहायता करनी चाहिए। जाति, भाषा और राजनीति सहित सभी मतभेदों को हृदय से हटाएं। हमारा समूचा राष्ट्र और उसके सामने खड़ा शत्रु, केवल इतना ही ध्यान में रखें।ह्यह्य संघ चीन युद्ध के दौरान सरकार के साथ था। राजनैतिक दलों व संघ के ध्येय व लक्ष्यों में भी अंतर है। संघ की दृष्टि में पृथ्वी माता है। भारत माता है। संघ के लोग इसी सेवा में निस्वार्थ भाव से जुटे हैं। संघ के स्वयंसेवकों ने स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया था।

लेकिन राहुल गांधी ने संघ के सम्बंध में अपनी समझ में एक मजेदार टिप्पणी की है। उनकी इस टिप्पणी की खासी चर्चा है। उन्होंने कहा है कि, ह्यह्यराष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कुछ मतों व भाषाओं को कमतर आंकता है। राहुल गांधी की टिप्पणी निराधार है। राहुल गांधी ने कुछ समय पहले संघ को समझने का प्रयास किया था। उन्होंने कहा था कि संघ से सीधी लड़ाई लड़ने के लिए उपनिषद् और गीता पढ़ेंगे। आलोचना बुरी नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति और संगठन को आलोचना का अधिकार है। लेकिन संघ कार्य पारदर्शी है। कह सकते हैं कि संघ एक ओपन यूनिवर्सिटी है। राष्ट्र का सर्वांगीण विकास व अभ्युदय के लिए संघ के स्वयंसेवक सदा तत्पर रहते हैं। नासमझी में अनेक सुशिक्षित विद्वान भी संघ के आलोचक हैं। तुष्टिकरणवादी वोट बैंक के कारण संघ की निंदा करते हैं।

राष्ट्रीय स्तर के एक वरिष्ठ पत्रकार खुशवंत सिंह से द्वितीय सरसंघचालक म. स. गोलवलकर की भेंट हुई थी। उनसे मिलने के बाद खुशवंत सिंह ने लिखा था, ह्यह्यकुछ लोग ऐसे होते हैं जिनको बिना समझे ही हम घृणा करते हैं। ऐसे लोगों की मेरी सूची में गुरु गोलवलकर प्रथम थे।ह्यह्य खुशवंत सिंह ने ह्यआरएसएस एंड हिन्दू मिलिटरिज्मह्य के हवाले से कई सवाल पूछे। ईसाइयों के सम्बंध में पूछे गए सवाल के जवाब में गुरु जी ने कहा, ह्यह्यधर्मांतरित करने के तरीकों के अलावा हमारा उनसे कोई विरोध नहीं है।ह्यह्य मुसलमानों के बारे में कहा कि, ह्यह्यमुसलमानों को भारतीयता के प्रवाह में मिल जाना चाहिए।ह्यह्य ईरानी मूल के पत्रकार डॉ. जिलानी से कहा, ह्यह्यपाकिस्तान ने पाणिनि की 5000वीं जयंती मनाई है। पाणिनि पूर्वज हैं। भारत के मुसलमान पाणिनि, व्यास और वाल्मीकि आदि को महान पूर्वज क्यों नहीं मानते? भारतीय राष्ट्रवाद प्राचीन धारणा है। यहां राष्ट्र संस्कृति आधारित है। इस राष्ट्रवाद के स्रोत वैदिक वांगमय में हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद में राष्ट्र शब्द की आवृत्ति कई बार हुई है। स्वयंभू विद्वान स्वाधीनता संग्राम के दौरान विकसित राष्ट्रभाव को अलग मानते हैं और सनातन राष्ट्रवाद को कमतर। स्वाधीनता आंदोलन हर तरह से प्रत्येक भारतवासी को प्रिय है। स्वाधीनता आंदोलन के आदर्श व मूल्य आदर योग्य हैं।

दुर्भाग्य से भारत को आजादी मिलने के बाद नए सत्ताधीश राष्ट्रवाद से पृथक हो गए। बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा लिखी गई अंतरराष्ट्रीय ख्याति की कविता ह्यवंदे मातरमह्य के एक हिस्से को संविधान सभा ने राष्ट्रगीत घोषित किया था। लेकिन स्वाधीनता के बाद अनेक पंथिक मजहबी संस्थाओं ने वंदे मातरम गाने से इनकार किया, लेकिन संघ के कार्यक्रमों में वंदे मातरम प्रशंसा पूर्वक गाया जाता है। आज भारत के कोने-कोने में वंदे मातरम का गान होता है। वंदे मातरम गाने से इनकार करने वाले संगठन अकड़ते रहे। संघ ने सबको साथ लेते हुए भारतीय राष्ट्रवाद को सर्वोपरि बताया है। सांस्कृतिक प्रतीकों को सम्मान देने की परंपरा संघ ने यत्र तत्र सर्वत्र प्रसारित की। संघ की सांगठनिक क्षमता बड़ी है। उच्च शिक्षित युवा संघ कार्य को राष्ट्रीय दायित्व मानते हैं। वे उच्च शिक्षा से प्राप्त अवसरों की चिन्ता नहीं करते। वे घर परिवार छोड़कर संघ कार्य में जुटते हैं। वे संघ का अनुशासन मानते हैं और देश के लिए काम करते हैं। संघ राजनैतिक दल की तरह मेम्बरी नहीं कराता। संघ के पास सैकड़ों पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं। दुनिया का कोई भी देश ऐसे सुशिक्षित समर्पित कार्यकताओं का स्वयंसेवी संगठन नहीं बना पाया।

आने वाली विजयादशमी के दिन संघ 100 बरस का हो जाएगा। संघ शाखा पर प्रार्थना में लक्ष्य सुस्पष्ट हैं- परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं, समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्-यहां राष्ट्र का परम वैभव ही संघ का लक्ष्य है। संघ के कार्यकर्ता सुबह उठते ही भारत भक्ति स्तोत्र पढ़ते हैं। इस स्तोत्र में अनेक महापुरुषों के मध्य डॉक्टर अम्बेडकर को भी प्रणाम किया गया है। जाति-पाति, पथ, मत और मजहब से भिन्न राष्ट्र की सर्वोपरिता संघ की मान्यता है। संघ कार्य देश के सनातन विचार प्रवाह का हिस्सा है। राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत कार्यकताओं का निर्माण होता रहता है। संघ राष्ट्रवादी संस्कार देने के काम में संलग्न है। संघ के कार्यकर्ता निस्वार्थ भाव से काम करते हैं।

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

रानी रेवती देवी ने प्रांतीय विज्ञान मेला एवं क्षेत्रीय खेलकूद में परचम लहराया

प्रयागराज, 13 सितम्बर (हि.स.)। विद्या भारती से सम्बद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने लालगंज अझारा, प्रतापगढ़ में आयोजित प्रांतीय विज्ञान मेला एवं फतेहपुर में आयोजित क्षेत्रीय बैडमिंटन एवं कबड्डी प्रतियोगिता में 11 स्वर्ण, 9 रजत एवं 2 कांस्य पदक सहित कुल 23 पदक प्राप्त कर विद्यालय के साथ-साथ अपने परिवार का मान बढ़ाया है।

इस उपलब्धि पर विद्यालय के प्रधानाचार्य बांके बिहारी पाण्डेय ने शुक्रवार को वंदना सभा में सभी का सम्मान कर शुभकामनाएं प्रदान कीं।

यह जानकारी विद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं संगीताचार्य मनोज गुप्ता ने देते हुए बताया कि प्रांतीय विज्ञान मेले के प्रदर्श के तरुण वर्ग में श्लोक त्रिपाठी एवं अव्यक्त शुक्ला, किशोर वर्ग में नमन वर्मा एवं रागिनी यादव तथा बाल वर्ग में नैतिक तिवारी ने स्वर्ण पदक, भौतिकी प्रयोग तरुण वर्ग आदर्श गिरी, किशोर वर्ग प्रश्न मंच में माही सिंह,अमीषा पटेल, अग्रज रावत तथा किशोर वर्ग पत्र वाचन में अश्विनी यादव एवं किशोर वर्ग प्रदर्श में अभिजीत सिंह एवं धैर्य वर्मा ने रजत पदक तथा तरुण वर्ग प्रदर्श में वैभव यादव एवं धीरज सिंह ने जीव विज्ञान प्रयोग में कांस्य पदक प्राप्त किया।

क्षेत्रीय बैडमिंटन एवं कबड्डी प्रतियोगिता की बैडमिंटन विधा बालक वर्ग के अंडर 14 में लकी सिंह एवं अंडर 17 में शुभम यादव ने स्वर्ण पदक तथा अंडर 19 में विष्णु पाण्डेय ने रजत पदक, इसी प्रकार बैडमिंटन में ही बालिकाओं के अंडर 17 में दीपशिखा कोटार्या एवं वैष्णवी केसरवानी ने रजत पदक तथा अंडर 19 में आकांक्षा तिवारी, रिद्धिमा केसरवानी, पूर्वी केसरवानी एवं अमीषा ने स्वर्ण पदक हासिल किया।

उक्त प्रतियोगिता में विजयी भैया-बहनों को स्थान प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन के लिए शिवनारायण सिंह, लक्ष्मी सिंह, विमल चंद्र दुबे एवं संतोष तिवारी का विशेष योगदान रहा।

महज दो वर्ष में इंसेफेलाइटिस पर पाया काबू : आदित्यनाथ

पहली बार पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज का निर्माण करा रही केंद्र और राज्य सरकार

लखनऊ, 13 सितंबर (हि.स.)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पांच वर्ष पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश इंसेफेलाइटिस से ग्रस्त था। वहां

15 जुलाई से 15 नवंबर के बीच 1200 से 1500 मौतें होती थीं। अकेले गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में 500 से 700 मौतें होती थीं। यह क्रम पिछले 40 वर्ष से चल रहा था। इस दौरान 50 हजार बच्चों की मौतें हुईं, लेकिन पिछली सरकारों का इससे कोई लेना-देना नहीं था। जब इसे रोकने के लिए सुविधा देनी होती थी तो वह भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते थे। यह सिस्टम की नाकामी थी। उन्होंने सांसद रहते हुए सड़क से लेकर सदन तक मुद्दा उठाया, जिसके बाद काम शुरू हुआ।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के चतुर्थ स्थापना दिवस समारोह के दौरान वार्षिक रिपोर्ट का विमोचन और नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। इस दौरान योगी ने कई प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और प्रोफेसर जेआर को मेडल-सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया। योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेनअद्र मोदी ने इंफेसेलाइटिस पर लगाम लगाने के लिए गोरखपुर को एम्स दिया। वहीं 2017 में मुख्यमंत्री बनने पर इसे खत्म करने की जिम्मेदारी मेरी हो गयी। इस पर काम शुरू किया गया और वर्ष 2019 में इस पर नियंत्रण पा लिया गया। उसी का पाया है, जबकि इसके खात्मे के बारे में पहले कोई सोच नहीं सकता था।

उन्होंने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में इंसेफेलाइटिस को लेकर इस बार भी दो बार सर्वे कराया गया, जिसमें सामने आया कि एक भी बच्चे की मौत नहीं हुई है। आज पूर्वी उत्तर प्रदेश खुशहाल है। यह सब बेहतर समन्वय और संवाद से हो पाया। आज इंसेफेलाइटिस को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है, लेकिन अफसोस है कि अब तक इस पर कोई स्टडी पेपर नहीं लिखा गया, जबकि यह सफलता का मॉडल है। वहीं वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी आई तो टीम 11 का गठन कर काबू पाया गया। यह हमें इंसेफेलाइटिस के सफलतापूर्वक समाधान के बाद प्राप्त हुए अनुभव से संभव हुआ।

कोविड-19 पर काबू पाने में इसी अनुभव का लाभ प्राप्त हुआ। योगी ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश वन डिस्ट्रिक्ट वन मेडिकल कॉलेज की दिशा में तेजी के साथ बढ़ रहा है। पहली बार केंद्र और राज्य सरकार पीपीपी मोड पर भी मेडिकल कॉलेज बनाने की कार्रवाई को बढ़ा रही हैं।

आने वाले अगले 5 से 7 वर्ष में डॉक्टरों की कमी नहीं मिलेंगे। इसके साथ ही आरएमएल, एसजीपीजीआई, केजीएमयू समेत अन्य संस्थानों को अच्छे विशेषज्ञ चिकित्सक मिलेंगे। इसके लिए हमें टीमवर्क के साथ काम करना होगा। आरएमएल उत्तर प्रदेश और उत्तर भारत का गेटवे है। यह उपब्लधि ऐसे ही नहीं मिली है। इसके पीछे सकारात्मक सोच और टीमवर्क है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश अकेला ऐसा राज्य है, जहां 5 करोड़ 11 लाख से अधिक आयुष्मान भारत के गोल्डन कार्ड जारी किये जा चुके हैं। यूनियन कैबिनेट ने 70 वर्ष से ऊपर के हर एक व्यक्ति को आयुष्मान कार्ड का लाभ देने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि 5 वर्ष से 7 वर्ष पहले इसके बारे में कोई सोच नहीं सकता था। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री राहत कोष से बिना भेदभाव के इलाज के लिए पैसे दिये जा रहे हैं।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह, प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और चिकित्सा शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा, संस्थान के निदेशक डॉ. सीएम सिंह, प्रो. अजय कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

पुलिस महानिदेशक ने बारावफात और विश्वकर्मा जयंती पर सुरक्षा व्यवस्था के निर्देश दिए

लखनऊ, 13 सितम्बर (हि.स.)। पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने शुक्रवार को जिलों के पुलिस अधिकारियों व कमिश्नरों को निर्देश दिए हैं कि बारावफात और विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किया जाए।

डीजीपी ने कहा कि कई वर्षों से जिन-जिन स्थानों पर किसी प्रकार का विवाद हुआ हो। वहां पर राजपत्रित अधिकारी, पुलिस एवं राजस्व विभाग के अधिकारी स्थिति का अध्ययन का विवाद को सुलझा लिया जाए। प्रत्येक थानों पर उपलब्ध त्योहार रजिस्टर एवं रजिस्टर नम्बर आठ में उपलब्ध प्रविष्टियों का अध्ययन कर लिया जाए। असामाजिक तत्वों की सूची बना ली जाए। जुलूस एवं अन्य आयोजनों को सूचीबद्ध कर आयोजनकताओं एवं सभी धर्मों के गुरुओं के साथ बैठक कर व्यवस्था बना ले। शोभायात्रा एवं जुलूस का वीडियोग्राफी करायी जाए। जरूरत पड़े तो ड्रोन कैमरे को भी उपयोग में लाया जाए। थानाध्यक्ष एवं क्षेत्राधिकारी छोटी-छोटी घटनाओं का संज्ञान लेकर मौके पर पहुंचकर निस्तारण करायें। बैरियर, पुलिस चेक पोस्ट लगाकर संदिग्ध वाहनों की चेकिंग की जाए। यातायात बाधित न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा जाए। सोशल मीडिया पर भी नजर रखी जाए। भ्रामक एवं आपत्तिजनक पोस्ट प्रसारित होने पर तत्काल संज्ञान लें।

कानपुरः शराबी युवक ने लाइसेंसी बंदूक से गोली मारकर की आत्महत्या

कानपुर, 13 सितम्बर (हि.स.)। सजेती थाना क्षेत्र के जल्ला गांव में शराब के नशे में एक युवक ने अपनी लाइसेंसी दोनाली बंदूक से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि अब तक यह पता नहीं चल पाया है कि उसके त्महत्या करने का कारण क्या है।

पुलिस उपायुक्त दक्षिण रवीन्द्र कुमार ने बताया कि सजेती के जल्ला गांव निवासी अरविंद कुमार यादव (35) पुत्र लाल सिंह खेती करके अपना खर्च चलाता था। हालांकि उसकी शराब पीने की आदत हो गई थी। शुक्रवार को वह कतिपय कारणों से क्षुब्ध होकर शराब के नशे में अपनी दोनाली लाइसेंसी बंदूक से खुद को गोली मार ली। गोली की आवाज सुनकर परिवार के लोग पहुंचे तो उसकी मौत हो गई थी। यह देखते ही लोगों ने वारदात की सूचना तत्काल पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। घटनास्थल पर जांच के लिए फॉरेंसिक टीम भी बुलाई गई। पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्टया उसकी गोली लगने से मृत्यु हुई है। मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। हालांकि अभी जांच जारी है। इस सम्बंध में यदि कोई तहरीर मिलती है तो आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

राज्य मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को मिला प्रमाण पत्र

लखनऊ, 13 सितंबर (हि.स.)। उत्तर प्रदेश राज्य मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति के नव निर्वाचित पदाधिकारियों और सदस्यों को शुक्रवार को जीत का प्रमाण पत्र दिया गया। लोक भवन में आयोजित प्रमाण पत्र वितरण समारोह में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव संजय प्रसाद, निदेशक शिशिर व मुख्य मंत्री के मीडिया सलाहकार रहीस सिंह शामिल हुए। प्रमाण पत्र वितरण समारोह को संबोधित करते हुए प्रमुख सचिव सूचना संजय प्रसाद ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों और सदस्यों को बधाई दी। उन्होंने लंबे समय से लंबित पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं के निस्तारण का आश्वासन दिया।

प्रमुख सचिव ने कहा कि समिति की जो भी अन्य मांगें हैं, उसे सूचीबद्ध कर लिखित रूप से अवगत कराएं। पत्रकारों हितों के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। चुनाव समिति के शरत प्रधान, वीरेन्द्र सक्सेना व सुरेश बहादुर सिंह ने भी सभी निर्वाचित पदाधिकारियों व सदस्यों को बधाई दी।

इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष हेमंत तिवारी और सचिव भारत सिंह ने वरिष्ठ पत्रकारों को पेंशन दिए जाने की मांग रखी। पत्रकार कल्याण कोष की माँग के तहत पत्रकारों के स्वास्थ्य कोष की माँग की गई। समिति के सचिव भारत सिंह ने कहा कि लघु व मध्यम समाचार पत्र आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। सरकार उन्हें निमानुसार विज्ञापन जारी कर आर्थिक संकट से उबरने में मदद करे। प्रमाण पत्र वितरण समारोह में मुख्य रूप से समिति के निर्वाचित उपाध्यक्ष आकाश शेखर शर्मा, अविनाश, चंद्र मिश्रा,राघवेंद्र त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष, आलोक कुमार त्रिपाठी, संयुक्त सचिव विजय कुमार त्रिपाठी, अनिल कुमार सैनी,नीता देवी मिश्रा, कार्यकारिणी सदस्य दिलीप सिन्हा, रितेश सिंह, शेखर पंडित, अब्दुल वहीद, नवेद सिकोह, वेद प्रकाश दीक्षित, भूपेंद्र मणि त्रिपाठी, राघवेंद्र प्रताप सिंह, रेनू निगम, सतेंद्र राय उपस्थित थे।

कार्यक्रम में चुनाव समिति के सदस्य डॉ. कलानिधि मिश्र, विजय उपाध्याय, डॉ. सुल्तान शाकिर हाशमी, डॉ. नासिर खान, नायला किदवई, आसिफ रजा जाफरी, डॉ. अशोक यादव, आलोक द्विवेदी, गंगेश और शाश्वत तिवारी भी उपस्थित थे।

योगी सरकार 2 अक्टूबर को देगी 'स्वच्छता ही सेवा' अवार्ड

लखनऊ, 13 सितंबर (हि. स.)। महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि देने के लिए योगी सरकार पूरे प्रदेश में 17 से 2 अक्तूबर तक स्वच्छता अभियान 'स्वच्छता ही सेवा' का आयोजन कर रही है। नगर विकास विभाग ने इस पूरे अभियान को चलाने के लिए कार्ययोजना बना ली है। इसके अंतर्गत योगी सरकार 2 अक्टूबर को स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले सफाई मित्रों समेत अन्य लोगों को 'स्वच्छता ही सेवा अवार्ड" से सम्मानित करेगी।

यह अवार्ड कुल 9 श्रेणियों में दिया जाएगा, जिसमें जनभागीदारी के साथ ही सहयोगियों और विशिष्ट पहलों को भी सम्मानित किया जाएगा। अवॉर्ड पाने वालों का चयन राज्य और जनपद स्तर पर चयन समिति द्वारा किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 15 दिवसीय यह अभियान दैनिक आधार पर थीम आधारित आईईसी गतिविधियों के माध्यम से संपन्न कराया जाएगा।

राज्य और जनपद स्तर पर दिया जाएगा सम्मान

राष्ट्र को स्वच्छता का संदेश देने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 155वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित हो रहे स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत समस्त नगरीय निकायों में विभिन्न आयोजन संपन्न कराए जाएंगे। कार्यक्रम के अंतिम दिन यानी 2 अक्टूबर को इन सभी कार्यक्रमों का समापन करते हुए उल्लेखनीय कार्य करने वालों को राज्य और जनपद स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। इस अवॉर्ड का उद्देश्य ट्रांसफॉर्म्ड सीटीयू (स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों) साइट्स का जश्न मनाना, सफाई मित्र और अन्य राज्य स्तरीय विजेताओं को सम्मान देना, स्वच्छता ही सेवा 2024 के तहत बेस्ट परफॉर्मर्स को सम्मानित करना और कम्युनिटी टॉयलेट्स (सीटी), पब्लिक टॉयलेट्स (पीटी), सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट (एसडब्ल्यूएम) प्रोजेक्ट्स, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स, फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट्स (एफएसटीपी) और अन्य पहलों का इनॉग्रेशन और फाउंडेशन शामिल है।

9 श्रेणियों में दिया जाएगा पुरस्कार

स्वच्छता ही सेवा 2024 अवाड्र्स के तहत कुल 9 श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इन श्रेणियों में स्वच्छता की भागीदारी, स्वच्छता लक्षित इकाई - सीटीयू ट्रॉसफॉर्मेशन, सफाई मित्र सुरक्षा शिविर, स्वच्छ फूड स्ट्रीट्स, एसबीएम कल्चर फेस्टिवल्स, एसबीएम वेस्ट टू आर्ट इंस्टॉलेशंस, पब्लिक एडवोकेसी, पार्टनर्स और स्पेशल इनीशिएटिव्स को शामिल किया गया है। इन सभी श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान करने के लिए राज्य और जनपद स्तर पर गठित ज्यूरी द्वारा अवार्डीज का चयन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वार्ड में स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति का गठन किया गया है, जो प्रत्येक वार्ड में स्वच्छ घर के लिए सर्वेक्षण में भूमिका निभाएगी व प्रत्येक वार्ड में सर्वश्रेष्ठ 3 घरों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करेगी। साथ ही प्रत्येक वार्ड में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सफाई कर्मियों को सम्मानित भी किया जाएगा।

सुनिश्चित होगी जनभागीदारी

राज्य सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि इस पूरे अभियान में व्यापक स्तर पर जनभागीदारी को सुनिश्चित किया जाएगा, जिसमें सीएम से लेकर जनसामान्य तक हिस्सा लेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश सरकार के मंत्रीगण, जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण विभिन्न स्थलों पर श्रमदान करेंगे। इसी तरह स्वयं सेवी संस्थानों व स्कूल-कॉलेज द्वारा साफ सफाई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया जाएगा। वहीं युवाओं की भागीदारी एवं स्वच्छता की जागरूकता के लिए विभिन्न आईईसी कार्यक्रम पूर्ण कराए जाएंगे, जिनमें प्लॉगरन, मैराथन, साइक्लॉथान, पौधरोपण, जीरो वेस्ट इवेंट, स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के सदस्यों द्वारा वार्डों में जनजागरूकता कार्यक्रम सुनिश्चित करना शामिल है। इसके अतिरिक्त विभिन्न अभियानों के माध्यम से क्लबों की सहभागिता, स्कूल परिसरों को प्लास्टिक मुक्त बनाया जाना, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों के परिसर की साफ सफाई करना और छात्रों द्वारा स्वच्छता की प्रतिज्ञा जैसे कार्यक्रम संपन्न होंगे।

विद्यालयों के कायाकल्प के लिए टेक्निकल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट का होगा गठन

लखनऊ, 13 सितम्बर (हि.स.)। उत्तर प्रदेश को 'उत्तम प्रदेश' बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार प्रदेश के कायाकल्प को लेकर तमाम तरह के प्रयास कर रही है। इसी क्रम में, प्रदेश की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक तकनीक से युक्त कर भविष्य की जरूरतों के अनुसार विकसित करने की दिशा में कार्य शुरू हो गया है।

सीएम योगी के विजन अनुसार, प्रदेश के बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों के कायाकल्प की प्रक्रिया जारी है और अब इन्हें स्मार्ट क्लास सेटअप से युक्त करने की प्रक्रिया योगी सरकार आगे बढ़ा रही है। प्रदेश के बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों के कायाकल्प के लिए तैयार की गई कार्ययोजना अनुसार, विद्यालयों को स्मार्ट क्लास सेटअप से युक्त करने के लिए एक टेक्निकल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट का गठन जल्द ही किया जाएगा। इस कार्य को पूरा करने का जिम्मा उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स कॉपोर्रेशन लिमिटेड (यूपीएलसी) को सौंपा गया है तथा विभाग द्वारा इस प्रक्रिया की शुरूआत कर दी गई है।

–स्मार्ट क्लास के विभिन्न कॉम्पोनेंट्स से विद्यालयों को किया जाएगा लैस

प्रदेश के बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों को स्मार्ट क्लास व ई-लर्निंग प्रक्रिया से युक्त करने के लिए विभिन्न कॉम्पोनेंट्स की स्थापना व संचालन प्रक्रिया को पूरा किया जाएगा। इसमें इंटरैक्टिव बोर्ड, इंटरैक्टिव डिस्प्ले तथा आधुनिक ऑडियो वीजुअल सेटअप प्रमुख हैं। इस कार्य को पूरा करने के लिए टेक्निकल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट (टीपीएमयू) का गठन किया जाएगा। इसके लिए बाकायदा यूपीएलसी में पहले से इम्पैनल्ड एजेंसी का निर्धारण व कार्यावंटन होगा जिसकी प्रक्रिया शुरू हो गई है। एजेंसी के निर्धारण के बाद टीपीएमयू का गठन किया जाएगा जो यूपीएलसी, बेसिक व माध्यमिक शिक्षा विभागों से समन्वय व संवाद स्थापित करते हुए प्रदेश के सभी बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों को स्मार्ट क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर से युक्त करने का कार्य करेगा।

–डीटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट होगी तैयार, कार्यों की रेगुलर मॉनिटरिंग होगी सुनिश्चित

राज्य सरकार के प्रवक्ता के अनुसार टीपीएमयू द्वारा प्रदेश के बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों को स्मार्ट क्लास व ई-लर्निंग प्रक्रिया से युक्त करने के लिए सबसे पहले डीटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) बनाई जाएगी। इस कार्य को यूपीएलसी व शिक्षा विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए किया जाएगा। इसके बाद, स्मार्ट क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर्स की स्थापना व विकास के लिए विभिन्न चरणों में डीपीआर के अनुसार कार्यों को कराया जाएगा। टीपीएमयू द्वारा तीन वर्षों की कार्यावधि के हिसाब से कार्य किया जाएगा। इस दौरान परियोजना के अंतर्गत जारी कार्यों की अद्यतन स्थिति की रेगुलर मॉनिटरिंग व प्रॉग्रेस रिपोर्ट फॉर्मुलेशन जैसे कार्यों को पूरा किया जाएगा। इसके साथ ही, डाटा एनालिटिक्स, रिसोर्स मैनेजमेंट व रिपोर्टिंग, स्टेकहोल्डर एंगेजमेंट, डॉक्यूमेंटेशन सपोर्ट व रिस्क मैनेजमेंट व मिटिगेशन जैसी प्रक्रियाओं को भी पूरा किया जाएगा।

उत्तर भारत का बड़ा चिकित्सा केंद्र बन रहा लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ, 13 सितंबर (हि.स.)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को लोहिया संस्थान के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के ऋषि परम्परा के अनुरूप यह संस्थान अब एक हॉस्पिटल से इंस्टिट्यूट बनकर उत्तर भारत का बड़ा चिकित्सा केंद्र बन रहा है। इस उपलब्धि के लिए यहां के प्रबंधन रेजिडेंट डॉक्टर्स स्टूडेंट्स को हृदय से बधाई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छा करेंगे तो अच्छे परिणाम आएंगे, गलत करेंगे तो उसके दुष्परिणाम भी आपके सामने आएंगे। आपके द्वारा किये गए पुरुषार्थ से जनता को लाभ मिल रहा है, लेकिन अगर कोई संस्था या संस्थान गलत हाथों में चला गया तो अपयश भी मिलता है। लखनऊ आज उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा केंद्र है, लखनऊ पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार या नेपाल का गेटवे है, वहां के लोग इलाज के लिए लखनऊ के लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान आते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इंसेफ्लाइटिस से मौते होती थीं, सरकारें सोई रहती थी। गोरखपुर सांसद रहते मैंने सड़क से लेकर सदन तक आवाज उठाई। 2017 में जब मुख्यमंत्री बना तो इससे निपटने की जिम्मेदारी मेरी हो गई। आज इंसेफ्लाइटिस की रोकथाम हुई है।

योगी ने कहा कि जब दुनिया का कोई व्यक्ति उत्तर प्रदेश के बारे में सुनता है कि 25 करोड़ की आबादी यहां निवास करती है तो चौक जाता है। इतनी अधिक जनसंख्या के बावजूद यूपी के अस्पतालों में बेहतर सुविधाएं मिल रही हैं।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, स्वास्थ्य राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह और मुख्य सचिव मनोज सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। संस्थान के निदेशक प्रो. सी.एम. सिंह ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

चार पीपीएस अधिकारियों का तबादला

लखनऊ, 13 सितम्बर (हि.स.)। प्रान्तीय पुलिस सेवा संवर्ग (पीपीएस) के चार अधिकारियों का तबादला शुक्रवार को हुआ है।

तबादलों के दौर में बलवन्त कुमार चौधरी को अपर पुलिस अधीक्षक (देहात) गाजीपुर से अपर पुलिस अधीक्षक (देहात) अयोध्या बनाया गया है। उनकी जगह पर अतुल कुमार सोनकर को अपर पुलिस अधीक्षक (देहात) अयोध्या से अपर पुलिस अधीक्षक (देहात) गाजीपुर भेजा गया है। शिव ठाकुर को पुलिस उपाधीक्षक कानपुर देहात से पुलिस उपाधीक्षक बुलंदशहर और पुलिस मुख्यालय में तैनात जिलाजीत की नवीन तैनाती पुलिस उपाधीक्षक सीबीसीआईडी मुख्यालय लखनऊ में की गई है।

अखिलेश ने फोन उठाना बंद कर दिया था इसलिए सपा-बसपा का गठबंधन टूटा: मायावती

लखनऊ, 13 सितंबर (हि.स.)। बसपा अध्यक्ष

मायावती ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के बिना बताये गठबंधन तोड़ लेने के बयान पर शुक्रवार को कहा कि उन्होंने उनका और उनकी पार्टी के किसी भी नेता का फोन उठाना तक बंद कर दिया था। इसके बाद बसपा ने सपा के साथ गठबंधन तोड़ लिया था। दोनों दलों ने वर्ष 2019 का चुनाव साथ मिलकर लड़ा था।

मायावती ने एक्स पोस्ट में शुक्रवार को कहा कि बसपा सैद्धांतिक कारणों से गठबंधन नहीं करती है और किसी बड़े उद्देश्यों को लेकर कभी गठबंधन करती भी है तो फिर उसके प्रति ईमानदार रहती है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में बसपा के 10 और सपा के 05 उम्मीदवार जीते थे। इसके बाद गठबंधन टूटने के बारे में उन्होंने सार्वजनिक तौर पर यही कहा कि सपा प्रमुख ने मेरे फोन का भी जवाब देना बंद कर दिया था। इसको लेकर उनके द्वारा अब इतने साल बाद सफाई देना कितना उचित व विश्वसनीय है, सोचने वाली बात।

बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि सपा के साथ सन 1993 और 2019 में हुए गठबंधन को निभाने का भरपूर प्रयास किया गया लेकिन बहुजन समाज का हित व आत्म-सम्मान सर्वोपरि रखने के कारण अलग रास्ता भी अख्तियार करना पड़ा। उन्होंने कहा कि बसपा जातिवादी संकीर्ण राजनीति के विरुद्ध है और यह बहुजन समाज में आपसी भाईचारा बनाकर राजनीतिक शक्ति बनाने का एक आंदोलन है ताकि बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का मिशन सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त कर आत्मनिर्भर हो सके।

पुलिस जांच में झूठी निकली हेलीकॉप्टर चोरी की बात

मेरठ, 13 सितम्बर (हि.स.)। मेरठ की परतापुर हवाई पट्टी से हेलीकॉप्टर के पुर्जे खोलकर ले जाने का मामला पूरे प्रदेश में चर्चा का विषय बन गया। जब पुलिस ने विस्तृत जांच की तो यह पूरा मामला झूठा निकला। दरअसल हेलीकॉप्टर चोरी नहीं हुआ था, बल्कि उसे खरीदने वाली कंपनी ही उसके पुर्जे खोलकर उसे ट्रक पर लादकर ले गए। विरोध करने पर उसके साथ मारपीट की और धमकी भी दी। शिकायत के बाद भी परतापुर पुलिस ने कार्रवाई नहीं की। गुरुवार को हेलीकॉप्टर के पुर्जे खोलकर ले जाने का यहा मामला पूरे प्रदेश में चर्चा में आ गया। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने भी प्रदेश सरकार को

खोलकर ट्रक पर लादकर ले गई थी। पायलट ने आपसी विवाद के चलते एसएसपी से यह शिकायत की थी।

सार एविएशन कंपनी के पूर्व पायलट रविंद्र सिंह ने 11 सितम्बर को एसएसपी डॉ. विपिन ताड़ा से मिलकर दस मई 2024 को परतापुर हवाई पट्टी पर मरम्मत के लिए आए हेलीकॉप्टर चोरी होने की शिकायत की थी। उसने बताया था कि दस मई को कई लोग हेलीकॉप्टर के पुर्जे कटघरे में खड़ा करते हुए कानून व्यवस्था पर सवाल उठाए।

एसएसपी मेरठ ने इस पूरे मामले की जांच एएसपी व सीओ ब्रह्मपुरी अंतरिक्ष जैन को सौंप दी। एएसपी ने विस्तार से पूरे मामले की जांच की तो हेलीकॉप्टर चोरी की बात सिरे से झूठ साबित हुई। पता चला हकि सार एविएशन कंपनी में रविंद्र सिंह अक्टूबर 2023 तक पायलट था। इसके बाद वह फर्म में दस प्रतिशत का पार्टनर बन गया। कंपनी के मालिक कैप्टन जीसी पांडेय के अनुसार, रविंद्र को पिछले साल कंपनी से निकाल दिया गया था। इसके बाद रविंद्र ने शौर्य एयरोनाटिक्स कंपनी ज्वाइन कर ली। सार एविएशन के हेलीकॉटर व चार्टर विमान मेंटेनेंस के लिए शौर्य एयरोनाटिक्स के परतापुर हवाई पट्टी हैंगर पर भेजे जाते हैं। सार एविएशन ने अपना एक हेलीकॉप्टर परतापुर हवाई पट्टी पर मेंटेनेंस के लिए भेजा था। इसी बीच कंपनी ने यह हेलीकॉप्टर रोहतक के उद्योगपति अतुल जैन को बेच दिया।

अतुल की गांधीनगर गुजरात में मोड एयर नामक कंपनी है। अतुल इस हेलीकॉप्टर को दस मई को लेने आए थे। खराबी आने के कारण हेलीकॉप्टर को उड़ाकर ले जाने की बजाय पुर्जे खोलकर ट्रक में लादकर ले जाया गया। उस समय परतापुर थाना पुलिस भी मौजूद थी।इस मामले में पायलट रविंद्र सिंह ने बेवजह विवाद पैदा किया। उधर उद्योगपति अतुल जैन ने इस मामले की शिकायत नागर विमानन महानिदेशालय से करने की बात कही है।

एसएसपी डॉ. विपिन ताड़ा के अनुसार, आपसी विवाद के मामले को चोरी का रंग देने की कोशिश की गई है। एएसपी से विस्तृत रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। रिपोर्ट मिलने के बाद इस मामले में कार्रवाई की जाएगी।

बिजनौर में बसपा नेता डॉ. शकील हाशमी समेत चार पर दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज

बिजनौर, 13 सितम्बर (हि.स.)। जनपद में चांदपुर थाना पुलिस ने बसपा नेता और अस्पताल संचालक डॉ. शकील हाशमी समेत चार लोगों पर दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस ने पीड़िता महिला के आरोपी की जांच शुरू कर दी है।

चांदपुर थाना प्रभारी पुष्कर सिंह मेहरा के मुताबिक इलाके में रहने वाली एक महिला ने तहरीर देते हुए पतियापाड़ा बाईपास पर स्थित बसपा नेता डॉ.शकील हाशमी के अस्पताल में चार माह पूर्व वह अपने एक मिलने वाले वसीलुद्दीन उर्फ लोरे के साथ उपचार कराने आई थी। यहां पर उसे नर्स नामालूम और अजीम ने साजिश के तहत डॉ. शकील हाशमी द्वारा दिए गए इंजेक्शन के बाद बेहोश कर दिया गया। इसके बाद परिचित वसीलुद्दीन उर्फ लोरे ने दुष्कर्म किया। इस सम्बंध में मिली तहरीर के आधार पर बसपा नेता डॉ. शकील हाशमी पर मुकदमा दर्ज किया है। मामले की जांच में पुलिस जुट गई है।

क्षेत्राधिकारी राजेश सिंह ने बताया कि चांदपुर थाना में एक महिला की तहरीर पर दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज किया गया है। इसमें मुख्य आरोपी वसीलुद्दीन उर्फ लोरे है। जबकि सह आरोपी में डॉ. शकील हाशमी के साथ महिला नर्स व एक अन्य आरोपी है। मुकदमा दर्ज करते हुए प्रकरण की गंभीरता से छानबीन की जा रही है। जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मुठभेड़ में दिल्ली-एनसीआर में लूट व स्नैचिंग करने वाले तीन शातिर बदमाश गिरफ्तार, दो को लगी गोली

गाजियाबाद, 13 सितंबर (हि.स.)। थाना इन्दिरापुरम पुलिस टीम ने दिल्ली एनसीआर में लूट व स्नैचिंग की अनगिनत घटनाओं को अंजाम देने वाले तीन शातिर बदमाशों को गुरुवार की रात मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है। यह मुठभेड़ कनावनी पुलिया के पास उस समय हुई जब पुलिस दो बदमाशों को गिरफ्तार कर हथियार बरामद कराने के लिए जा रही थी। इस दौरान पुलिस की गोली से दोनों घायल हो गए।

एसीपी स्वतन्त्र कुमार सिंह ने बताया कि 12 सितंबर को थाना इंदिरापुरम पुलिस ने चेकिंग के दौरान अरशु उर्फ समीर, आसिम निवासीगण संगम विहार थाना तिमारपुर बजीराबाद दिल्ली व नोसीन सुभाष मौहल्ला नोर्थ घोंडा थाना भजनपुरा दिल्ली को कनावनी पुलिया ग्रीन बेल्ट से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने टीम अरशु उर्फ समीर व अभियुक्त नोसीन से मोबाइल व चैन लूट की घटनाओं के सम्बन्ध में पूछताछ की गयी। पूछताछ में दोनों आरोपियों को पुलिस टीम हथियार बरामदगी के लिए हिण्डन बैराज के पास लेकर पहुंची। गाड़ी रुकते ही आरोपितों ने पुलिस को चकमा देते हुए हिण्डन बैराज की झाड़ियों में घुस गए और अपने-अपने तमंचे निकालकर पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस की जवाबी कार्यवाही में अभियुक्तगण अरशु उर्फ समीर और नोसीन के दाहिने पैर की पिंडली में गोली जा लगी और दोनों घायल हो गए। दोनों को घायल अवस्था में अस्पताल में दाखिल कराया गया है।

एसीपी ने बताया कि तीनों ही बदमाश दिल्ली के निवासी हैं। उनके कब्जे से दो तमंचे, एक जिन्दा मिस कारतूस, एक खोखा कारतूस, लूट की एक चैन पीली धातु, लूट व स्नैचिंग के सामान को बेचकर प्राप्त 32 हजार 300 रुपये व घटना में प्रयुक्त चोरी की मोटर साइकिल बरामद किये गए हैं।

तीनों आरोपितों पर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

कानपुरः सड़क किनारे मिला युवक का शव

कानपुर, 13 सितम्बर(हि.स.)। साढ़ थाना क्षेत्र के दरगाहीलाल पुल के पास शुक्रवार को एक युवक का शव मिला है। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मौके पर फॉरेंसिक टीम भी पहुंची है। पुलिस कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। हालांकि मृत्यु का स्पष्ट कारण जानने के लिए पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

सहायक पुलिस आयुक्त रंजीत कुमार ने बताया कि साढ़ थाना क्षेत्र के राजपुर गांव निवासी शिव सागर सिंह (40) पुत्र जय प्रताप का शव आज दरगाहीलाल पुल के पास मिला है। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मौके पर फॉरेंसिक टीम भी पहुंचकर साक्ष्य जुटाए गए हैं। पुलिस कहना है कि जांच के दौरान प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत हो रहा है

कि उसकी मृत्यु कोई जहरीला पदार्थ खाने से हुई है। हालांकि मृत्यु का स्पष्ट कारण जानने के लिए पोस्टमार्टम कराया जाएगा, शव का पंचनामा करके विधिक कार्रवाई की जा रही है।

बारिश को लेकर अधिकारी रहें अलर्ट, खुले रखें फोन : जिलाधिकारी

-जिलाधिकारी ने रात में लगातार हो रही बारिश से जल निकासी व्यवस्था का लिया जायजा

हाथरस, 13 सितम्बर (हि.स.)। मौसम में हुए बदलाव और लगातार हो रही बारिश और उससे होने वाले जलभराव की समस्या को देखते हुए गुरुवार की रात जिलाधिकारी आशीष कुमार जल निकासी की व्यवस्था देखने निकले। जिले के तालाब चौराहे पर पहुंचकर उन्होंने जल निकासी का मौका मुआयना किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बारिश की चेतावनी को देखते हुए सभी अधिकारी अलर्ट रहे और अपने फोन खुलें रखें।

जनपद में निरंतर हो रही वर्षा के दृष्टिगत जल निकासी की व्यवस्था को परखने जिलाधिकारी आशीष कुमार बीती रात तालाब चौराहा पहुंचे। यहां पर आसपास की स्थिति को देखा। जिलाधिकारी के रात में मौका मुआयना किए जाने से जिम्मेदार विभाग के अधिकारी और कर्मियों में घबरा गये। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को जलभराव से होने पर मौके पर जाकर पानी की निकासी के लिए सुलभ व्यवस्थाएं बनाने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वर्षा के दौरान सभी अधिकारी अलर्ट मोड पर रहेंगे तथा अपना फोन खुला रखेंगे, ताकि जलभराव तथा अन्य किसी प्रकार की संभावित आपदा के दृष्टिगत त्वरित कार्यवाही की जा सके। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी वित्त/ राजस्व, उप जिलाधिकारी सदर, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका हाथरस आदि उपस्थित रहे।

संतुलित सोच के लिए नियंत्रित जीवन जीना उत्तम संयम धर्म : समर्पण सागर

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की पूजा की गई

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। संतुलित सोच के लिए नियंत्रित जीवन जीना उत्तम संयम धर्म है। सयंम के द्वारा अपने जीवन को सफल बना सकता है। सयंम इस बात का भी होना चाहिए कि किसी दुसरे जीव को हमारे द्वारा कोई कष्ट न पहुंचे। छह प्रकार के जीवों की रक्षा करना भी उत्तम सयंम की श्रेणी में आता है, जिसे प्राणी सयंम कहते है। साथ ही पांच प्रकार की इन्द्रियों व मन को वश में करना भी इन्द्रिय सयंम कहलाता है। यह संदेश रामगंगा विहार स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर समर्पण भवन में विराजमान बालयोगी गिरनार पीठाधीश्वर क्षुल्लक रत्न 105 श्री समर्पण सागर ने शुक्रवार प्रातःकाल जैन श्रावकों को सम्बोधित करते हुए दिया।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की पूजा की गई। श्रद्धालुओं द्वारा भगवान जिनेंद्र का मंगल जलाभिषेक किया गया एवं विश्व मंगल की कामना के साथ शान्तिधारा की गई। शान्तिधारा करने का परम सौभाग्य जैन समाज के लोगों को प्राप्त हुआ। इस धार्मिक सभा में जैन समाज के अनुयायियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

व्यवस्थाओं में रामगंगा विहार जैन समाज के अध्यक्ष संदीप जैन, मंत्री नीरज जैन वरिष्ठ कार्यकर्ता सर्वोदय जैन, पवन कुमार जैन, अनुज जैन, अजय जैन, अंकुर जैन, राहुल जैन, विकास जैन, मोहित जैन, सुषमा जैन, उषा जैन, रजनी जैन, सजल जैन, ऋतु जैन, अंजलि जैन, शिवानी जैन, आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

माध्यमिक विद्यालयों की दो दिवसीय जिला स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता सम्पन्न

-मंडलीय तीरंदाजी प्रतियोगिता के लिए बालक वर्ग में सात और बालिका वर्ग में छह खिलाड़ियों का चयन

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। आरएन इंटर कॉलेज में शुक्रवार को माध्यमिक विद्यालयों की दो दिवसीय जिला स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

इसमें मंडलीय तीरंदाजी प्रतियोगिता के लिए बालक वर्ग में सात और बालिका वर्ग में छह खिलाड़ियों का चयन किया गया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन आरएन इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य छोटेलाल और मंडलीय क्रीड़ा सचिव वंश बहादुर ने किया। प्रतियोगिता में बालक वर्ग में आरएन इंटर कॉलेज मुरादाबाद, पीएलजेएल रस्तोगी इंटर कॉलेज, चित्रगुप्त इंटर कॉलेज तथा जीजी हिंदू इंटर कॉलेज मुरादाबाद के छात्रों ने प्रतिभाग किया। वहीं बालिका वर्ग में फूलवती कन्या इंटर कॉलेज तथा राजकीय इंटर कॉलेज मुरादाबाद की छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

सचिन चौधरी, नरपत सिंह यादव, वीरेंद्र सिंह, स्वाति राठी और निशा परवीन चयनकर्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस मौके पर व्यवस्था में शिक्षक राजपाल सिंह, यशपाल सिंह, संगीता चौधरी, प्रीति अग्रवाल मौजूद रहे।

ट्यूबवेल पर सो रहे वृद्ध की गला रेत कर हत्या, आरोपी गिरफ्तार

-मोबाइल से खुला राज, घटना में प्रयुक्त चाकू बरामद

जौनपुर, 13 सितंबर (हि.स.)। सरपतहा थाना क्षेत्र के कुसियाबहार गांव में शुक्रवार को उस समय सनसनी फैल गई जब गांव के ही एक वृद्ध की गला रेत कर हत्या कर दी गई। घटना की सूचना पर पहुंची स्थानीय थाने की पुलिस व आलाधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने छानबीन करते हुए एक हत्यारोपी को घटना में प्रयुक्त चाकू समेत गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेजते हुए कार्रवाई की।

कुसियाबहार गांव में रहने वाले रामजीत बिंद (65) अपने चार भाइयों रमेश, कमलेश व गणेश में सबसे बड़ा था। उसके कोई संतान नहीं थी। शादी के कुछ ही दिनों बाद उसकी पत्नी उसे छोड़ कर चली गई थी और वह अपने छोटे भाई गणेश के साथ रहता था। मृतक गांव के बाहर ट्यूबवेल पर कई सालों से अपना आशियाना बना कर रहता था और खेती बाड़ी करता था। बीती गुरुवार की रात वह ट्यूबवेल पर ही सो रहा था, जहां उसकी गला रेत कर हत्या कर दी गई। शुक्रवार तड़के भाई गणेश अपने खेत से परवल तोड़कर बेचने के लिए निकाला तो भाई को जगाने ट्यूबवेल पर गया। ट्यूबवेल पर बड़े भाई रामजीत को मृत देख छोटे भाई को घटना की जानकारी हुई। सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया।

ग्रामीणों की सूचना पर स्थानीय थाना पुलिस समेत एएसपी अरविन्द वर्मा और क्षेत्राधिकारी शाहगंज अजीत सिंह चौहान भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने घटनास्थल पर छानबीन किया।

मौके पर परिजनों ने गांव के ही एक युवक पर हत्या करने का आरोप लगाया।

पुलिस जांच के दौरान घटनास्थल के पास एक मोबाइल पड़ा मिला। जांच में आरोप युवक का ही मोबाइल निकला। इस पर बिना समय गवांए पुलिस ने आरोपी विकास बिंद पुत्र दलसिंगार को हत्या में प्रयुक्त चाकू के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी ने अपना जुर्म कबूल किया।

अपर पुलिस अधीक्षक शहर अरविंद कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस पूछताछ में गिरफ्तार आरोपी ने जानकारी दी कि गुरुवार शाम को मृतक के भांजे के मोबाइल चोरी के मामले में वो पकड़ा गया था।

जिससे वह काफी नाराज था। इसी चलते उसने ट्यूबवेल पर जाकर रामजीत की हत्या कर दी थी।

शिक्षिका पत्नी के हस्ताक्षर करने पर शिक्षिक पति-पत्नि दोनों निलंबित

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। भगतपुर टांडा ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय रानी नागंल में शिक्षिका पत्नी के हस्ताक्षर करने के मामले में शुक्रवार को बेसिक शिक्षा अधिकारी विमलेश कुमार ने आरोपित शिक्षक-शिक्षिका पति-पत्नी को निलंबित कर दिया है। इसके साथ ही कंपोजिट विद्यालय सेहल की प्रधानाध्यापिका के खिलाफ भी निलंबन की कार्रवाई की। गुरुवार को बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्राथमिक विद्यालय रानी नागंल के निरीक्षण में मामले का खुलासा हुआ था। पहुंचकर

बीते दिन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी विमलेश कुमार ने भगतपुर टांडा ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय रानी नागंल और कंपोजिट विद्यालय सेहल का औचक निरीक्षण किया। प्राथमिक विद्यालय रानी नागंल में पति राजकुमार, पत्नि अनु दोनों सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

इसी बात का फायदा दोनों पति पत्नी उठाते थे। पत्नी पढ़ाने के लिए नियमित स्कूल नहीं आती थीं और उनके स्थान पर राजकुमार हस्ताक्षर कर देते थे। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी विमलेश कुमार ने इस बाबत ग्रामीणों से भी जानकारी ली थी। इसलिए प्रथम दृष्टया आज आरोपित शिक्षिका अनु और शिक्षक राजकुमार को दोषी पाए जाने पर तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है।

वहीं, कंपोजिट विद्यालय सेहल में जब बेसिक शिक्षा अधिकारी पहुंचे थे तो वहां पर परिसर में स्थित जर्जर भवन को बंद नहीं किया गया था। इसकी वजह से विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के लिए भी खतरा था। इसके अलावा मध्याह्न भोजन पंजिका नहीं बनी थी और विद्यालय के अभिलेख पूर्ण नहीं थे। विद्यालय संचालन व रखरखाव में लापरवाही बरती जा रही थी। इस पर बेसिक शिक्षा अधिकारी ने प्रधानाध्यापिका शाइस्ता अंजुम को निलंबित कर दिया।

मुरादाबाद : गृहकर, जलकर एवं सीवर कर पर छूट सीमा 31 अक्टूबर तक के लिए बढ़ाई

-गृहकर, जलकर 30 सितम्बर तक जमा करने पर 15 प्रतिशत की छूट देने की घोषणा थी

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। नगर निगम ने गृहकर, जलकर एवं सीवर कर छूट के साथ जमा करने की अवधि शुक्रवार को 31 अक्टूबर तक के लिए बढ़ा दी है। महानगरवासियों के अनुरोध पर नगर आयुक्त दिव्यांशु पटेल ने छूट की सीमा एक माह बढ़ाने का आदेश दिया।

नगर निगम की ओर से वर्ष 2024-25 के लिए गृहकर, जलकर एवं सीवर कर 30 सितम्बर तक जमा करने पर 15 प्रतिशत की छूट देने की घोषणा की गई थी।

इसके बाद बड़ी संख्या में लोगों ने कर जमा किया। वहीं अभी भी तमाम ऐसे लोग हैं जो अपना कर नहीं जमा कर सके हैं। इसी के चलते शहर की कुछ संस्थाओं ने कर में छूट की अवधि बढ़ाने की मांग की थी। इसके बाद आज नगर आयुक्त ने छूट की अवधि 31 अबक्टूर तक बढ़ा दी है।

मुख्य कर निर्धारण अधिकारी आरती सिंह ने शुक्रवार को बताया कि भवन स्वामी गृहकर, जलकर एवं सीवर कर क्षेत्रीय कार्यालय के काउंटर पर या ऑनलाइन जमा कर सकते हैं।

शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में कर जमा कराने के लिए कैम्प भी लगाए जा रहे हैं।

किशोरी से दुष्कर्म का प्रयास करने व अश्लील वीडियो बनाने का आरोपित गिरफ्तार

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। थाना ठाकुरद्वारा कोतवाली के एक गांव घर में घुसकर किशोरी के साथ दुष्कर्म का प्रयास करने और उसकी अश्लील वीडियो बनाने के आरोपित युवक को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित वीडियो वायरल करने की धमकी देकर पीड़िता किशोरी को ब्लैकमेल भी कर रहा था।

गांव निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर कहा कि वह और उसकी पत्नी बीती 28 अगस्त को घर पर नहीं थे। आरोप है कि उसी दौरान आरोपित युवक उनके घर के अंदर घुस गया और बेटी के साथ दुष्कर्म करने का प्रयास किया।

आरोप है कि इस दौरान युवक ने किशोरी का अश्लील वीडियो भी बना लिया। किशोरी के विरोध करने पर उसने उसके साथ मारपीट की।

शोर मचाने पर युवक वहां से भाग गया। शिकायतकर्ता का कहना है कि इस बारे में उनकी बेटी ने उन्हें कुछ नहीं बताया। कुछ दिन बाद आरोपित युवक ने किशोरी को ब्लैकमेल करने की कोशिश की और उसकी बात न मानने पर वीडियो को वायरल करने की धमकी दी तो किशोरी ने परिजनों को आपबीती बताई। इसके बाद किशोरी को लेकर उसके पिता कोतवाली पहुंचे। पुलिस ने आरोपित प्रशांत के खिलाफ पॉक्सो और अन्य धाराओं में उसी दिन रिपोर्ट दर्ज कर ली थी।

ठाकुरद्वारा कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक सुदेशपाल सिंह ने बताया कि मामले में आरोपित युवक को आज गिरफ्तार कर लिया गया है। उसे कोर्ट में पेश किए जाने की कार्रवाई चल रही है।

मुरादाबाद में 20 घंटे से लगातार रुक रुककर बारिश जारी, पानी से लबालब हुई पीतलनगरी

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। जनपद में 20 घंटे से लगातार रुक-रुककर बारिश हो रही हैं। बुधवार की रात्रि से गुरुवार दोपहर तक बरसात हुई और फिर गुरुवार शाम से प्रारंभ हुई बारिश शुक्रवार दोपहर तक जारी है। लगातार बारिश से बाजारों, गली-मोहल्लों और कॉलोनियों में लबालब बरसात का पानी भर गया हैं। बारिश से जिले का न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है।

सप्ताह भर में मुरादाबाद का अधिकतम औसतन तापमान 7 डिग्री और न्यूनतम तापमान 4 डिग्री तक घट गया है। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि जनपद में पांच दिन की बारिश के बाद शनिवार को मौसम साफ रहने की उम्मीद हैं।

इस सप्ताह सोमवार और मंगलवार को दो से तीन घंटे की बारिश हुई। बुधवार को पहले शाम को बरसात हुई ओर फिर बुधवार देर रात्रि से प्रारंभ हुई बारिश गुरुवार दोपहर तक जारी रही। गुरुवार शाम से प्रारंभ हुई बारिश शुक्रवार दोपहर तक जारी हैं।

प्रतिदिन जिले में बरसात से मौसम काफी सुहावना हो गया और भाद्रपद माह की उमस भरी गर्मी से लोगों को राहत मिल गई।

इस बारिश से एमडीए व आवास विकास की कालोनियों, कटघर, लाइनपार, लालबाग, वारसी नगर, मोहल्ला दौलत बाग, बंगला गांव, लाइनपार, सीतापुरी दससराय, जयंतीपुर आदि मोहल्ला व कालोनियां में बारिश का पानी इस कद्र भर गया कि लोगों का निकलना बढ़ना दूभर हो गया हैं। राजकीय इंटर कॉलेज में बनी मौसम प्रयोगशाला के प्रभारी निसार अहमद ने बताया कि मुरादाबाद में आज रात तक रुक-रुक कर बारिश पड़ेगी और शनिवार को भी मुरादाबाद का मौसम खुल जाएगा।

देवरों ने पत्थर से कर दी भाभी की हत्या

बलिया, 13 सितम्बर (हि.स.)। कोतवाली अन्तर्गत राजपूत नेवरी गांव में देवरों ने शुक्रवार को अपनी भाभी की हत्या कर दी। पुलिस आरोपितों की गिरफ्तारी में जुट गई।

राजपूत नेवरी की रहने वाली 45 वर्षीय संध्या गुप्ता का सगे देवर विजय गुप्ता व कृष्ण कुमार गुप्ता के साथ पारिवारिक विवाद था। शुक्रवार सुबह करीब साढ़े नौ बजे विवाद बढ़ गया तो संध्या गुप्ता के दोनों देवरों ने उनके सिर पर पत्थर मारकर घायल कर दिया।

आसपास के लोगों ने गम्भीर रूप से घायल संध्या गुप्ता को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। जानकारी पर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने भी फॉरेंसिक टीम के साथ घटना स्थल का मुआयना किया। उन्होंने कहा कि मृतका के परिजन से प्राप्त तहरीर के आधार पर सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपितों की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम का गठन किया गया है।

मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के तहत 136 बच्चों को लेपटॉप वितरित

मेरठ, 13 सितम्बर (हि.स.)। मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (कोविड) के तहत शुक्रवार को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अटल सभागार में लैपटॉप वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रदेश के ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर ने 136 बच्चों को लैपटॉप वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर स्थित अटल सभागार में शुक्रवार को मुख्य अतिथि राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर की अध्यक्षता तथा मुख्य विकास अधिकारी नूपुर गोयल की उपस्थिति में मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (कोविड) के तहत लैपटॉप वितरण कार्यक्रम हुआ। राज्य मंत्री ने सभी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया।

जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल सोनी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम में 136 बच्चों को लैपटॉप प्रदान किए गए। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड के अंतर्गत ऐसे बच्चे जिनके माता अथवा पिता अथवा माता-पिता दोनों की मृत्यु कोविड महामारी के कारण हुई थी, उन्हें योजना के अन्तर्गत 4000 रुपए प्रतिमाह भरण पोषण, शिक्षा और चिकित्सा के लिए प्रदान किया जाता है। साथ ही बच्चों को स्कूली शिक्षा (9वीं से लेकर 12वीं तक) को प्रोत्साहित करने के लिए लैपटॉप वितरित किया जाता है, जिससे उनकी टेक्निकल जानकारी बढ़ सके और उन्हें शिक्षा में तकनीकी रूप से मदद मिल सके।

ऊर्जा राज्य मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सभी वर्गों का सर्वांगीण विकास करने के कार्य में संलग्न हैं। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश प्रगति के नए पथ पर अग्रसर है।

दुनिया की सबसे बड़ी भाषा है हिन्दी: प्रो. नवीन चंद्र लोहनी

मेरठ, 13 सितम्बर (हि.स.)। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि कहा कि हिंदी दुनिया की बड़ी भाषा है। हम सभी को हिंदी कोअपनी मातृभाषा की भांति अपनाना चाहिए। हिंदी दिवस हिंदी के

संवैधानिक अधिकार का स्मरण दिवस है। संविधान समिति में शामिल सदस्यों ने हिंदी को उसका उचित सम्मान प्रदान किया। अब हमारा और नवीन पीढ़ी का कर्तव्य है कि व्यवहार में भी हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करें और भारतीय संस्कृति और साहित्य के विकास की परंपरा से खुद को जोड़ें।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग में हिन्दी दिवस के पूर्व दिवस पर निबंध लेखन एवं आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के 17 विभागों से 33 विद्यार्थियों और आशु भाषण में 12 विभागों के 22 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि पूर्व आईआरएएस अधिकारी रामकिशोर उपाध्याय रहे। निर्णायक मंडल में मेरठ कॉलेज की प्रोफेसर कविता त्यागी, एनएएस कॉलेज की डॉ. कविश्री, वरिष्ठ पत्रकार प्रोफेसर रविंद्र प्रताप राणा रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉक्टर यज्ञेश कुमार ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि नई पीढ़ी के लिए विरासत में हिंदी को मजबूत भाषा की तरह आगे भेजें ताकि भारत की नवीन पीढ़ी हिंदी में अपना भविष्य देख सके। शुद्धता किसी भी भाषा का पैमाना नहीं होती।

मुख्य अतिथि रामकिशोर उपाध्याय ने कहा कि इस प्रकार के प्रतियोगी कार्यक्रमों से हमारी अपनी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ती है। अभिव्यक्ति की भाषा सरल होनी चाहिए। कोई भी भाषा तब तक समृद्ध नहीं होती जब तक उसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को शामिल नहीं किया जाता। इससे अभिव्यक्ति की व्यापकता का विस्तार होता है। हिंदी में बोलने वालों की संख्या अरबों में है लेकिन हिंदी भाषा में अभी तक कोई नोबेल पुरस्कार नहीं मिल पाया है। ऐसे उत्कृष्ट साहित्य लेखन की संभावना अभी भी हिंदी में है। हिंदी के लिए कथनी से अधिक करनी की आवश्यकता है। निर्णायक मंडल में प्रो. कविता त्यागी ने कहा कि सर्वप्रथम जिन लोगों ने हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया उनमें अहिंदी भाषी लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही इसलिए हिंदी किसी क्षेत्र का मुद्दा नहीं है बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर गंभीर रूप से विचार अभिव्यक्ति की। विद्यार्थियों को लोक भाषा का प्रयोग भी अपने विचार अभिव्यक्ति में करना चाहिए।

प्रो. रविंद्र प्रताप राणा ने कहा कि हमें अपनी बात करते समय छोटे-छोटे वाक्य में अपनी बात को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करना चाहिए। लंबे वाक्य से विचार में अस्पष्टता और बोझिलता आती है। सोशल मीडिया में क्षेत्रीय बोलियों को अपार सफलता मिली है। विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोग क्षेत्रीय भाषाओं में सोशल मीडिया पर सफल हो रहे हैं। हिंदी अन्य भाषाओं से भी शब्द ग्रहण करती रही है। देश की स्थानीय बोलियों के शब्दकोष को भी हिंदी में शामिल किया जाना चाहिए। साहित्य जटिल, परिष्कृत और बोझिल शब्दों की ओर झुक रहा है हमें देशज बोलियों के शब्दों और साहित्य को भी अपनाना चाहिए। डॉ. कविश्री ने कहा कि प्रतियोगिता में तत्काल विषय चयन होने के बावजूद भी विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता मजबूत रही। विद्यार्थियों को अपनी भाषा मे शब्दकोश को बढ़ाना चाहिए, जिससे उनकी अभिव्यक्ति और अधिक मजबूत बन सके। प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के कौशल और योग्यताओं को निखारने का काम करती हैं।

स्टेट बैंक के पूर्व सहायक महाप्रबंधक भारत भूषण ने कहा कि हमें अपनी हिंदी को अपनाना है। अपनी बोली कौरवी का मान करना है। हिंदी को बोलने में शर्म नहीं करनी चाहिए हिंदी हमारा गर्व है और इसे गर्व के साथ ही अपनी भावाभिव्यक्ति और विचार अभिव्यक्ति कर माध्यम बनाएं। आयोजन सचिव डॉ. प्रवीण कटारिया रहे। इस अवसर पर डॉ. आरती राणा, डॉ. अंजु, डॉ. विद्यासागर सिंह, विनय कुमार, पूजा यादव, सचिन कुमार, रेखा सोम, ख्याति भारद्वाज, सृष्टि, प्रिंसी, आयुषी त्यागी, शुभम शर्मा आदि उपस्थित रहे।

आज की पीढ़ी ऑडियो विजुअल में कंटेंट स्वीकार कर रही : प्रो.अनुभूति यादव

प्रयागराज, 13 सितम्बर (हि.स.)। यूजीसी-मालवीय मिशन टीचर्स ट्रेनिंग सेंटर, ईश्वर शरण पीजी कॉलेज की ओर से आयोजित 24 दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम में आज इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, नई दिल्ली की प्रोफेसर अनुभूति यादव ने कहा कि वर्तमान की युवा पीढ़ी मोबाइल पर ज्यादातर कंटेंट ऑडियो विजुअल माध्यमों में स्वीकार कर रही है। इसलिए शिक्षकों को भी अपने शिक्षण पद्धति में वर्तमान की जरूरत के मुताबिक ऑडियो विजुअल कंटेंट को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

उन्होंने भारत के व्यापक प्रिंट मीडिया और डिजिटल मीडिया क्षेत्रों में सम्भावनाओं और उनकी चुनौतियों को व्याख्यायित करते हुए कहा कि हर तरह की मीडिया में आज कंटेंट निर्मित किया जा रहा है, जिसमें निमार्ता की प्राथमिकताएं और वैचारिकी शामिल होती हैं। उन्होंने सोशल मीडिया के दौर में फैलाए जा रहे सूचना के प्रदूषण से बचने के लिए ट्रुथ वारियर की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कई ऑनलाइन टूल्स के माध्यम से स्टोरी मैप, टाइमलाइन, डाटा विजुअलाइजेशन, इंफोग्राफिक्स, इंफोस्फीयर आदि के निर्माण की प्रक्रिया को प्रतिभागियों के समक्ष रखा।

दूसरे सत्र में युवा इतिहासकार और शोधकर्ता डॉ.रमाशंकर सिंह ने कहा कि शोध की नई प्रवृत्तियों में विमुक्त और हाशिए के समुदायों का अध्ययन भी शामिल होना चाहिए।

उन्होंने नदियों के किनारे बसे समुदायों के जीवन, उनकी आर्थिकी, सामाजिकी, और राजनीति से जुड़े तथ्यों को नीतिगत सच्चाई का हिस्सा बनाने पर जोर दिया। डॉ.रमाशंकर सिंह ने उजागर किया कि कैसे कलंदर समुदाय की आजीविका संकट में डाल दी गई है। उन्होंने हाशिए के समुदायों के बच्चों के जीवन की शिक्षा, स्वास्थ्य और मनोरंजन की चुनौतियों को विश्लेषित करते हुए बताया कि बच्चों की एक बड़ी आबादी मुख्यधारा से दूर जा रही है।

तीसरे सत्र में ह्यऐतिहासिक शोध प्रविधिह्न विषय पर युवा इतिहासकार और लेखक डॉ. शुभनीत कौशिक ने कहा कि इतिहास की विविध व्याख्याएं और इतिहास लेखन की विभिन्न धारणाएं कई ऐतिहासिक शोध प्रविधियों का रास्ता खोलती हैं। एक ओर कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास अतीत और वर्तमान के मध्य अंतहीन संवाद है और दूसरी ओर कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास अतीत को वैसे ही दिखाना है जैसे वह कभी घटित हुआ था।

इन दोनों परिप्रेक्ष्यों के अलावा उन्होंने इतिहास में क्यों की तलाश को जानना इतिहासकार का दायित्व माना।

कार्यक्रम की संयोजिका डॉ शाइस्ता इरशाद ने सभी वक्ताओं का स्वागत किया तथा कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ अंकित पाठक ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

बाढ़ की चपेट में दर्जनों गांव, ग्रामीणों का रेस्क्यू जारी

जालौन, 13 सितंबर (हि.स.)। जनपद में नदीगांव ब्लॉक का गाँव मऊ पहूज नदी की बाढ़ की चपेट में आ गया है। जिससे ग्रामीणों के मकानों में बाढ़ का पानी घुस गया है। माताटीला और राजघाट से पानी छोड़े जाने के कारण पहूज नदी में उफान आ गया है, जिससे गाँव के कई हिस्सों में पानी भर गया है।

ग्रामीणों के अनुसार, बाढ़ के कारण उनके मकानों में पानी घुस गया है।

जिससे उनके घरों में रखे सामान और फसलें खराब हो गई हैं। ग्रामीणों ने बताया कि बाढ़ के कारण उन्हें अपने घरों से निकलना मुश्किल हो गया है और वे अपने परिवार के साथ सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए मजबूर हैं।

पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी गाँव में राहत और बचाव कार्य में जुटे हुए हैं। उन्होंने ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए नावों और अन्य साधनों का उपयोग किया जा रहा है। अधिकारियों ने बताया कि वे ग्रामीणों को खाने, पीने के पानी और अन्य आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करा रहे हैं।

पहुज नदी का बढ़ा जलस्तर, तीन हजार की आबादी प्रभावित

जालौन, 13 सितंबर (हि.स.)। जालौन के मध्य प्रदेश से सटे सीमावर्ती क्षेत्र की तहसील कोंच तथा माधौगढ़ से बहने वाली पहुज नदी का देर रात्रि से लगातार जल स्तर बढ़ने के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है। जबकि यहां से गुजरने वाली जालौन की मुख्य नदियाँ यमुना और बेतवा खतरे के निशान से लगभग दो मीटर नीचे है, किंतु पहुज नदी की बाढ़ से कोंच तहसील के दो गाँव सलैयाबुजुर्ग और मऊ तथा तहसील माधोगढ़ के दो गाँव कूसेपुरा और इकौली जागीर प्रभावित है। जिसने लगभग 3250 जनसंख्या प्रभावित हुई है।लगभग 315 मकान ऐसे है। जिनके आसपास पानी भर गया है और लगभग 190 पशुओं को गाँव में स्थित ऊँचे स्थान पर ले जाया गया है।

गाँवों में बाढ़ चौकी को अलर्ट किया गया है। जिनमें कम्युनिटी किचन ,स्वास्थ्य सुविधा व पीने का पानी भी उपलब्ध है। बाढ़ प्रभावित गाँव में लोगों के रेस्क्यू के लिए नाव व स्टीमर मंगा लिए गए हैं। ज़िलाधिकारी जालौन राजेश कुमार व पुलिस अधीक्षक दुर्गेश कुमार के द्वारा बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का भ्रमण कर बाढ़ से निपटने के लिए अधिकारियों को उचित दिशा निर्देश दिए गए हैं।

बलिया में छात्रा को मारपीट कर नहर में फेंका

बलिया, 13 सितंबर (हि.स.)। बलिया में ग्यारहवीं की छात्रा को मनबढ़ युवकों ने मारपीट कर नहर में फेंक दिया। घटना गुरुवार की है। पुलिस अधीक्षक विक्रांत वीर ने हमलावरों की गिरफ्तारी के लिए तीन टीमें गठित की हैं।

एसपी विक्रांत वीर ने शुक्रवार को बताया कि खेजुरी थाना क्षेत्र के स्थानीय गांव स्थित आनन्द बालिका इण्टर कॉलेज की कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा को पकड़ी थाना क्षेत्र के थाना क्षेत्र के जगदरा टोला के पास मारा-पीटा गया व नहर में डाल दिया गया। जिसकी सूचना मिलते ही पुलिस ने तत्काल मौके पर पहुँचकर पीड़िता को सीएचसी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल में भर्ती कारया गया है। एसपी के अनुसार पीड़िता की स्थिति सामान्य है। परिजनों से प्राप्त तहरीर के आधार पर सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया जा चुका है। क्षेत्राधिकारी सिकन्दरपुर के नेतृत्व में तीन टीमों का गठन किया गया है। शीघ्र ही घटना को अंजाम देने वालों की गिरफ्तारी की जाएगी। उन्होंने कहा कि छात्रा की साइकिल दो दिन पहले हमला करने वाले तीन में से एक युवक की साइकिल से टकरा गई थी, जिसके बाद उन्होंने छात्रा के साथ मारपीट की।

रिश्तेदार भाई पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म का आरोप, चार पर रिपोर्ट दर्ज

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। थाना भोजपुर क्षेत्र में रहने वाली युवती ने पुलिस महानिरीक्षक को दिए शिकायती पत्र में अपने रिश्ते में लगने वाले भाई पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया। युवती का कहना है कि जब उसने शादी के लिए कहा तो युवक ने साफ इनकार कर दिया। इसके साथ ही पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया दुष्कर्म के दौरान उसने उसकी अश्लील वीडियो बना ली थी, जिसे वह वायरल करने की धमकी दे रहा है। डीआईजी के आदेश पर थाना पुलिस ने शुक्रवार को आरोपित युवक सहित चार पर मुकदमा दर्ज कर लिया और जांच शुरू कर दी।

भोजपुर के एक ग्राम निवासी युवती ने शुक्रवार को पुलिस उपमहानिरीक्षक मुनिराज को दी तहरीर में कहा कि उसका प्रेम प्रसंग रिश्तेदार भाई से चल रहा था।

प्रेमी युवक उसे अपने घर ले गया और शादी करने का झांसा देकर उसके साथ सम्बंध बनाए। इसके बाद वह उसे बहाने से होटल में भी ले गया, जहां उसने उसके साथ दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने बताया प्रेमी ने उसकी अश्लील वीडियो भी बनाया और वायरल करने की धमकी दी।

युवती का कहना हैं कि उसने शादी करने के लिए कहा तो आरोपित प्रेमी ने मना कर दिया। मामले में उसने उसके परिजनों से शिकायत की तो उन्होंने उल्टा उसे पीटा और जान से मारने की धमकी देकर घर से भगा दिया।

मेरठ में युवक की घर में सोते समय गोली मारकर हत्या

मेरठ, 13 सितम्बर (हि.स.)। रोहटा थाना क्षेत्र के मिजार्पुर गांव में शुक्रवार की सुबह युवक की घर में सोते समय गोली मारकर हत्या कर दी गई। गोली की आवाज सुनकर परिजन जाग गए तो आरोपित फरार हो गए। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है।

रोहटा थाना क्षेत्र में दो दिन पहले भी रसूलपुर मढ़ी गांव में विनीत की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। अब रोहटा थाना क्षेत्र के मिजार्पुर गांव में युवक की हत्या कर दी गई। गांव निवासी प्रवेश शर्मा पुत्र नंदकिशोर उर्फ पप्पू शर्मा गुरुवार की रात अपने परिजनों के साथ घर के आंगन में सोया हुआ था। शुक्रवार की अल सुबह किसी ने आंगन की छत में लगे लोहे के जाल से प्रवेश को गोली लगी। सिर में गोली लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद हमलावर फरार हो गए। गोली चलने की आवाज सुनकर परिजन जाग गए, लेकिन मौके पर उन्हें कोई नहीं मिला।

सूचना पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। फोरेंसिक टीम को भी मौके पर बुलाकर साक्ष्य जुटाए गए। घर के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज जांची जा रही है।

थाना पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है। एसपी देहात राकेश कुमार के अनुसार, पुलिस मामले की जांच कर रही है। सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है।

जिलाधिकारी से की स्काउट गाइड की योजनाओं को जल्द लागू करने की मांग

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। स्काउट गाइड की योजनाओं को लागू कराने को लेकर शुक्रवार को भारत स्काउट गाइड संस्था के सदस्यों ने प्रदेश मुख्यालय से आए सहायक प्रदेश संगठन आयुक्त बृजेश सिंह के साथ जिलाधिकारी से मुलाकात की।

जिला सचिव डॉ. सुरेंद्र वर्मा ने बताया कि जिलाधिकारी अनुज कुमार सिंह ने आश्वासन दिया हैं कि स्काउट गाइड की योजनाओं को शीघ्र लागू किया जाएगा। सहायक प्रदेश संगठन आयुक्त बृजेश सिंह ने कहा कि जिले में शीघ्र जिला परिषद की बैठक की जाएगी।

इसमें आगामी योजनाओं को गति दी जाएगी। जिला कमिश्नर स्काउट डॉ. हिमांशु यादव डॉ. सुरेंद्र वर्मा ने सभी का आभार जताया। इस मौके पर प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. मधुबाला त्यागी,, जिला सचिव डॉ. सुरेंद्र वर्मा, डीटीसी शुभम सैनी मौजूद रहे।

बड़ा भक्तमाल में 14 व15 सितंबर को होगा सहकार भारती का प्रदेश अधिवेशन

अयोध्या, 13 सितंबर (हि.स.)। सहकार भारती का 5 वां प्रदेश अधिवेशन 14 और 15 सितम्बर को बड़ाभक्त मॉल की छावनी में आयोजित होगा। शनिवार को अधिवेशन का उद्घाटन सहकारिता मंत्री जे पी एस राठौर एवं इफ्को के प्रबंध निदेशक उदय शंकर अवस्थी, राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनानाथ ठाकुर करेंगे।अधिवेशन के एक दिवस पूर्व शुक्रवार को आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री डा. उदय जोशी ने कहा कि सहकार भारती का एकमात्र उद्देश्य समाज कल्याण ही है।

हम सहकारीजन भारत माता के वैभव के लिए सहकारिता की साधना करते हैं। धर्म और प्रेम के ध्येय को लेकर सहकार भारती समाज में अपना कार्य संपादित करती है। उन्होंने कहा कि सहकार भारती सहकारिता के क्षेत्र में राष्ट्र व्यापी संगठन हो चुका है।

वर्तमान समय में सहकारिता ही एक ऐसा मॉडल है जो भारत को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है। हम सभी को सहकारिता में सहकारी मूल्यों पर आधारित शुद्धता को बचाते हुए गांव-गांव में नए सहकारी संस्थाओं का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि सहकारिता शक्ति के बिना तो मानवता एक कदम भी आगे बढ़ नहीं सकती है।

अगर हम भारत को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो तेरा, मेरा इससे ऊपर उठकर हम की भावना से कार्य करना होगा। दो दिवसीय प्रदेश अधिवेशन का शुभारंभ 14 सितंबर को सुबह 10.30 बजे बड़ा भक्त माल छावनी के सभागार में सहकारिता मंत्री जीपीएस राठौर ,इफको के प्रबंध निदेशक उदयशंकर अवस्थी एवं चार सौ से अधिक कार्यकताओं की उपस्थिति में होगा। इस दो दिवसीय अधिवेशन में विभिन्न सत्रों के माध्यम से संगठनात्मक चर्चा होगी और प्रदेश अध्यक्ष,महामंत्री व प्रदेश कार्यकारिणी का निर्वाचन होगा।

इस अवसर प्रदेश संगठन प्रमुख डॉ अरुण सिंह, प्रदेश मंत्री कृष्ण कुमार ओझा, अरविंद दुबे ,प्रदेश संपर्क प्रमुख अशोक शुक्ला, कोषाध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह व प्रदेश मीडिया प्रभारी विवेक कुमार राय उपस्थित रहे।

25 लाख रुपए के 101 एंड्राइड मोबाइल बरामद, पुलिस ने मोबाइल स्वामियों को सौंपा

जौनपुर,13 सितंबर (हि.स.)। जनपद में लगातार हो रहे साइबर फ्रॉड को रोकने के लिए पुलिस लगाकर कदम उठा रही है, साथ ही एंड्राइड मोबाइल की चोरी की घटनाओं पर रोक लगाने के उद्देश्य से लगातार काम जारी है। इसी के तहत शुक्रवार को साइबर क्राइम थाना प्रभारी विनय प्रकाश सिंह व क्षेत्राधिकारी शहर देवेश कुमार सिंह द्वारा जनपद में गुम हुए 101 मोबाइल बरामद करते हुए पुलिस लाइन सभागार में संबंधित मोबाइल स्वामियों को सौंपा गया।

इस संबंध में शुक्रवार को जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक देवेश सिंह ने बताया कि गुम व खोये हुये मोबाइल के सम्बन्ध में सूचना देने के लिए सेंट्रल इक्यूपमेंट आइडेन्टिटी रजिस्टर (उएक्स) पोर्टल बनाया गया है।

इस पोर्टल पर जिला में गुमशुदा मोबाइल के संबंध में सूचना प्रविष्ट की जाती है।

पोर्टल का संचालन साइबर सेल थाना द्वारा किया जाता है। साइबर सेल द्वारा समय-समय पर प्राप्त मोबाइल गुमशुदगी की शिकायतों के आधार पर मोबाइल ढूंढ़ने का कार्य किया जाता है।

जिले में गुम हुए मोबाइल की बरामदगी के लिए पुलिस अधीक्षक जौनपुर डॉ. अजय पाल शर्मा के सुपरविजन में जिला साइबर सेल थाना की विशेष टीम गठित कर विभिन्न थानों में दर्ज की गई मोबाइल गुमशुदगी की रिपोर्ट के आधार पर 100 से अधिक मोबाइल नम्बरों की सीडीआर व आईएमईआई का विश्लेषण कर दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड, बिहार व उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से बरामद किये गये। बरामद मोबाइलों में आईफोन, एप्पल, वन प्लस, वीवो, रेडमी, ओप्पो व समसंग कम्पनी की मोबाइल है जिनका बाजार मूल्य लगभग 25 लाख रुपये है।

मीडिया में अपार सम्भावनाएं, अपनी स्किल निखारे विद्यार्थी : प्रो. संजय सक्सेना

-इविवि के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग में दीक्षारम्भ

प्रयागराज, 13 सितम्बर (हि.स.)। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग में शुक्रवार को एमए प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए दीक्षारम्भ का आयोजन किया गया। कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. संजय सक्सेना ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि वीडियो प्रोडक्शन में रोजगार की असीम सम्भावनाएं मौजूद हैं। विद्यार्थियों को अपना स्किल निखारने की आवश्यकता है।

प्रो. संजय संक्सेना ने कहा कि लेखन ऐसी कला है जिसे निरंतर अभ्यास से सीखा जा सकता है। प्रारम्भ में शब्द, वाक्य और पैराग्राफ को लिखने में अड़चन आती है। लेकिन लगातार लिखते रहने से बेहतर लेखक बना जा सकता है। उन्होंने कहा कि जनसंचार के क्षेत्र में प्रोफेशनल्स का मूल्य उनकी स्किल्स से तय होता है। उनकी आमदनी उसके बोलने, लिखने और कंटेंट प्रोड्यूस करने की गुणवत्ता और क्षमता पर तय होने लगी है। डिजिटल मीडिया प्लेटफार्म पर दर्शकों की रूचि के अनुरूप कंटेंट परोसा जा रहा है। एक पत्रकार अपनी लेखनी से समाज का एक चित्रण पाठकों के सामने रखता है।

इसके पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. अश्वजीत चौधरी ने दीक्षारम्भ कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने पत्रकारिता और जनसंचार विभाग की विकास यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अनुशासन सफलता के लिए बेहद जरूरी है।

एक बेहतर इंसान बनने के लिए विद्यार्थी जीवन में अनुशासन अनिवार्य है। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ.हरिनाथ कुमार और डॉ.शिवगोपाल ने किया। विभाग के प्राध्यापक डॉ.राम अवतार यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक सुनील उमराव, डॉ.रवि सूर्यवंशी और डॉ.अमित शर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम के बाद एंटी रैगिंग वीक के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में बेहतर करने वाले विद्यार्थियों को शील्ड और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इन्हें दिए गए पुरस्कार इविवि की जनसम्पर्क अधिकारी प्रो. जया कपूर ने बताया कि पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में इशिका केसरवानी को प्रथम पुरस्कार, कार्तिकेय यादव को द्वितीय और रोनित चौरसिया और श्रुति पांडे को संयुक्त रूप से तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में दर्शन सिंह प्रथम, समीर तिवारी द्वितीय और उत्तम यादव को तृतीय पुरस्कार दिया गया।

वहीं, भाषण प्रतियोगिता में समीर तिवारी को प्रथम, प्रीति कुमारी को द्वितीय और दर्शन यादव को तृतीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

सर्किल रेट बढ़ने की सम्भावना पर मुरादाबाद में बीते वर्ष अगस्त की अपेक्षा इस बार 391 बैनामे हुए अधिक

मुरादाबाद, 13 सितम्बर (हि.स.)। सर्किल रेट बढ़ने की सम्भावना को देखते हुए जिले में लोगों ने धड़ाधड़ बैनामे कराए। इस बार अगस्त माह तक पिछले वर्ष की तुलना में 391 अधिक बैनामे हुए हैं। इसी कारण 2024 में अचानक राजस्व में बढ़ोत्तरी हुई।

बीते 1 सितम्बर से नए सर्किल रेट जारी होने के बाद बैनामों में कमी आई है। इस बार शहरी इलाकों में सर्किल रेट में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। एआईजी स्टॉप अनिल सिंह ने शुक्रवार को बताया कि मुरादाबाद विकास प्राधिकरण की नई सिटी स्थापित होने वाली है। एमडीए किसानों की जमीन के बैनामा कराएगी। इस कारण बैनामे की संख्या में आगे भी बढ़ोत्तरी होने की सम्भावना है।

राजस्व विभाग के अनुसार 2023 में अगस्त माह में कुल 4,471 बैनामे करवाए गए थे। वहीं इस बार अगस्त में बैनामों की संख्या बढ़कर 4,862 पहुंच गई। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि सर्किल रेट का प्रस्ताव तैयार होने पर सम्भावना जताई जा रही थी कि शहर का सर्किल रेट बढ़ेगा। इसी कारण अगस्त माह में बैनामों की संख्या बढ़ गई। इसमें सबसे अधिक बैनामे प्रापर्टी डीलरों ने कराए थे। सितम्बर माह में नए सर्किल रेट बढ़ने थे, लेकिन जिलाधिकारी अनुज कुमार सिंह ने समीक्षा के बाद महानगर के सर्किल रेट नहीं बढ़ाने का निर्णय ले लिया। इससे प्रापर्टी डीलरों को काफी नुकसान उठाना पड़ा। जिलाधिकारी अनुज कुमार सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में 5 से 10 प्रतिशत तक सर्किल रेट बढ़ाया। नए सर्किल रेट जारी होने के बाद बैनामों में कमी आई है।

जम्मू कश्मीर में शहीद सैनिक का पार्थिव शरीर पहुंचा गांव, नम आंखों से दी विदाई

जालौन, 13 सितंबर (हि.स.)। शहीद सौरभ द्विवेदी का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव मुसमरिया पहुंचा। जहां हजारों की संख्या में लोग उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। गांव वालों ने नम आंखों से शहीद के सम्मान में नारे लगाए और उन्हें श्रद्धांजलि दी। शहीद सौरभ द्विवेदी का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

बता दें कि, सौरभ द्विवेदी जम्मू-कश्मीर के जम्मू में तैनात थे। जहां ड्यूटी के दौरान उनकी तबियत बिगड़ी और 10 सितंबर को उनका देहांत हो गया था। उन्होंने देश की सेवा करते हुए अपनी जान गंवा दी। उनकी शहादत को देशभर में सलाम किया गया है। नम आंखों से ग्रामीणों ने अन्तिम विदाई देते हुए सम्मान में नारे लगाए।

शहीद सौरभ द्विवेदी के परिवार को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता और अन्य सुविधाएं देने की घोषणा की गई है।

उनके गांव में एक स्मारक बनाया जाएगा। जो उनकी शहादत की याद में रहेगा। शहीद के परिजनों का कहना है कि शहीद सौरभ द्विवेदी की शहादत को कभी नहीं भुलाया जाएगा। उनकी बहादुरी और बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा।

रोल मॉडल बनने को अग्रसर है महायोगी गोरखनाथ विवि : एमपी अग्रवाल

गोरखपुर, 13 सितंबर (हि.स.)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का इंफ्रास्ट्रक्चर, यहां की शैक्षिक गुणवत्ता और परिसर संस्कृति किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए अनुकरणीय है। स्थापना के मात्र

तीन सालों में ही यह विश्वविद्यालय उच्च और रोजगारपरक शिक्षा के क्षेत्र में रोल मॉडल बनने की तरफ अग्रसर है।

यह बातें उच्च शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव एमपी अग्रवाल ने शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम बालापार गोरखपुर के भ्रमण-के दौरान कही। पूरे विश्वविद्यालय परिसर और यहां की अवस्थापना सुविधाओं, शिक्षण पद्धति आदि का अवलोकन करने के बाद श्री अग्रवाल काफी खुश दिखे। उन्होंने कहा कि किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान के लिए यह विश्वविद्यालय मानक बन सकता है। प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा ने भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी डॉ. अश्वनी मिश्रा, विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव के साथ आयुर्वेद कॉलेज, नर्सिंग संकाय, पैरामेडिकल संकाय, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, फामेर्सी संकाय, कृषि संकाय आदि का निरीक्षण किया। सभी संकायों के इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही उन्होंने यहां शिक्षण पद्धति को भी बारीकी से समझा। विश्वविद्यालय में इसी सत्र से एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए नीट काउंसिलिंग से प्रवेश लिए गए हैं। प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा ने एमबीबीएस की कक्षाओं के संचलन को लेकर की गई तैयारियों को भी परखा और अबतक की व्यवस्थाओं को उत्कृष्ट बताया। उन्होंने कहा कि स्थापना के इतने कम समय में मॉडर्न मेडिकल, आयुर्वेद, नर्सिंग, पैरामेडिकल, फामेर्सी आदि विधाओं के शिक्षण के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, मान्यता प्राप्त करना और बिना किसी सीट के रिक्त रहे पढ़ाई एक असाधारण उपलब्धि है।

प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा के निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति ने उन्हें बताया कि इस विश्वविद्यालय का जोर रोजगारपरक शिक्षा के नए आयामों से जुड़ने, शोध-अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने पर है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने प्रमुख सचिव श्री अग्रवाल को बताया कि स्थापना के पहले से साल से इस विश्वविद्यालय ने शोध-अनुसंधान, नवाचार के साथ आत्मनिर्भरतापरक स्टार्टअप के लिए देश की कई ख्यातिलब्ध शिक्षण, चिकित्सकीय संस्थानों, अनुसंधान परिषदों, उद्योग समूहों से एमओयू किया है। उन्होंने बताया कि इस विश्वविद्यालय में जिन भी पाठ्यक्रमों का संचालन है, वे सभी पूर्ण क्षमता से संचालित हैं।

डॉ. राव ने प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा को विश्वविद्यालय की परिसर संस्कृति, कार्य प्रबंधन में छात्र सहभागिता, सामाजिक सरोकारों और भावी कार्ययोजना के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। जन स्वास्थ्य एवं अन्य नागरिक सेवाओं को लेकर विश्वविद्यालय की पहल की प्रमुख सचिव श्री अग्रवाल ने सराहना की।

एसपी ने ली साप्ताहिक परेड की सलामी, पुलिस कर्मियों से लगवाई दौड़

-दंगा निरोधक उपकरणों के रख-रखाव एवं क्रियाशीलता का कराया अभ्यास

मीरजापुर, 13 सितम्बर (हि.स.)। पुलिस लाइन स्थित परेड ग्राउण्ड पर शुक्रवार को साप्ताहिक परेड की सलामी लेकर पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन ने परेड का निरीक्षण किया। जवानों को शारिरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहने के लिए दौड़ लगवाई गई।

पुलिस अधीक्षक ने परेड में शामिल जवानों में एकरूपता व अनुशासन बनाए रखने के लिए ड्रिल कराई। उन्होंने साप्ताहिक परेड के दौरान पीआरवी 112 व थानों के वाहनों को चेक किया तथा उपकरणों के रख रखाव व उपकरणों से घटनास्थल को सुरक्षित करने का अभ्यास कराते हुए सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

पुलिस अधीक्षक ने जवानों को आपात स्थिति से निपटने व अपराधों की रोकथाम के लिए दंगा निरोधक उपकरणों के रख-रखाव एवं क्रियाशीलता का अभ्यास कराया।

परेड के दौरान क्षेत्राधिकारी नगर, क्षेत्राधिकारी सदर, प्रभारी पुलिस लाइन, यातायात उपनिरीक्षक तथा अन्य अधिकारी वकर्मचारी उपस्थित थे।

बारिश का कहर: मकान की छत व दीवार गिरने से महिला की दबकर मौत, बेटियां घायल

गाजियाबाद, 13 सितंबर (हि.स.)। लोनी बॉर्डर क्षेत्र के परमहंस कालोनी में शुक्रवार को लगातार हो रही बारिश एक परिवार पर कहर बन गयी। यहां पर एक मकान की दीवार व छत गिर गयी। जिसमें दबकर एक महिला की मौत हो गयी, जबकि उसकी दो बेटियां दीवार व छत के नीचे दबकर घायल हो गए। जिनका अस्पताल में इलाज चल रहा है।

मरने वाली महिला सुंदर देवी है। वह परमहंस कालोनी में परिवार के साथ रहती थी। शुक्रवार को बारिश के कारण मकान की छत व दीवार गिर गयी, जिसमें दबने से सुंदर देवी की मौत हो गयी, जबकि उनकी दो बेटियां घायल हो गईं। घायलों का इलाज चल रहा है। मृतक महिला के पति की पहले ही मौत हो चुकी है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

दर्दनाक सड़क हादसा, पिता-पुत्र की मौत,परिजनों का रो रो कर बुराहाल

प्रतापगढ़। जिले में 12 सितंबर की देर रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार कन्हैया लाल यादव और उनके बेटे आशीष यादव की मौत हो गई। यह हादसा उस वक्त हुआ जब दोनों गैस बेल्डिंग का काम निपटाकर घर लौट रहे थे। रास्ते में एक अज्ञात कार ने उनकी बाइक को कुचल दिया, जिससे पुत्र आशीष की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पिता कन्हैया लाल ने अस्पताल ले जाते समय दम तोड़ दिया। इस घटना से उनके परिवार में कोहराम मच गया है।जानकारी के अनुसार, लालगंज कोतवाली क्षेत्र के पूरे हिराऊ गांव निवासी कन्हैया लाल यादव अपने 18 वर्षीय बेटे आशीष कुमार यादव, जो इंटर का छात्र था, के साथ लालगंज स्थित एक दुकान से काम खत्म कर घर लौट रहे थे। जैसे ही वे मेढ़ावां मोड़ के पास लखनऊ-वाराणसी हाईवे पर पहुंचे, एक तेज रफ्तार अज्ञात कार ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी।इस हादसे में आशीष की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कन्हैया लाल को गंभीर हालत में लालगंज ट्रामा सेंटर लाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी भी मौत हो गई। मृतक आशीष राम अंजोर मिश्र इंटर कॉलेज में बारहवीं का छात्र था और अपने पिता के साथ काम में भी मदद करता था।घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। लालगंज कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक नीरज कुमार यादव ने बताया कि हादसे में किसी अज्ञात कार का हाथ है। तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच की जा रही है, और हादसे के जिम्मेदार वाहन की तलाश जारी है।

परिवार के दो सदस्यों की एक साथ हुई मौत से गांव में शोक की लहर है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

गोरक्षपीठ में गुरुजनों के प्रति श्रद्धा समर्पण का साप्ताहिक पर्व आज से शुरू

गोरखपुर, 13 सितंबर (हि.स.)। गुरु-शिष्य परंपरा के निर्वहन के साथ लोक कल्याण के लिए समर्पित नाथपंथ के विश्व प्रसिद्ध गोरक्षपीठ में गुरुजन के प्रति श्रद्धा समर्पण का साप्ताहिक समारोह शनिवार (14 सितंबर) से प्रारंभ होगा।

युगपुरुष की उपाधि से विभूषित ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और राष्ट्रसंत के रूप में ख्याति प्रतिष्ठित ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के पुण्य स्मरण का यह आयोजन गोरक्षपीठाधीश्वर की देखरेख में प्रतिवर्ष होता है। इस आयोजन में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ब्रह्मलीन महंतद्वय के विचारों के अनुरूप धर्म और राष्ट्र से जुड़े कार्यक्रम समानांतर चलेंगे। श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से धर्म के प्रकल्प को मजबूती मिलेगी तो सामयिक रूप से राष्ट्र को प्रभावित करने वाले विषयों पर सम्मलेन में विद्वतजन मंथन करेंगे। गोरखनाथ मंदिर में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी 55वीं और ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी की 10वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में होने वाले इस आयोजन को लेकर मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

14 से 21 सितंबर तक चलने वाले साप्ताहिक कार्यक्रमों की श्रृंखला के संबंध में जानकारी देते हुए गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ ने बताया कि 14 सितंबर से श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का शुभारंभ होगा जबकि समाज और राष्ट्र से जुड़े विषयों पर सम्मेलन 15 सितंबर से। श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञानयज्ञ में श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत कथा का रसपान काशी से पधारे, कथाव्यास जगद्गुरु अनंतानंद काशीपीठाधीश्वर स्वामी डॉ. राम कमलदास वेदांती जी (श्रीराम मंदिर, गुरुधाम, वाराणसी) कराएंगे। श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ 14 सितंबर, शनिवार को अपराह्न 2:30 बजे से अखंड ज्योति व श्रीमद्भागवत महापुराण पोथी के शोभायात्रा के साथ होगा।

मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ और प्रतिष्ठित धमार्चार्य, साधु-संत तथा यजमानगण के साथ अखंड ज्योति तथा श्रीमद्भागवत महापुराण की भव्य शोभायात्रा गोरखनाथ मंदिर गर्भगृह से कथा स्थल (दिग्विजयनाथ स्मृति भवन) तक जायेगी। इस कथा श्रवण का पुण्य लाभ 20 सितंबर तक अपराह्न 3:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक प्राप्त किया जा सकेगा।

सम्मेलन के उद्घाटन दिवस पर राज्यसभा के उपसभापति होंगे मुख्य अतिथि

योगी कमलनाथ ने बताया कि ब्रह्मलीन महंत द्वय की पावन स्मृति में उनके विचारों के अनुरूप समसायिक विषयों पर सम्मेलन का शुभारंभ 15 सितंबर को पूर्वाह्न 10:30 बजे से महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में होगा। इसके उद्घाटन दिवस पर रविवार (15 सितंबर) को ह्यलोकतंत्र की जननी है भारतह्न विषयक सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि हरिवंश नारायण सिंह उपसभापति, राज्यसभा उपस्थित रहेंगे। स्थानीय वक्ता प्रो. सदानन्द गुप्त पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ होंगे।

16 सितंबर को ह्यविश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने की ओर बढ़ता भारतह्न विषयक सम्मेलन में बतौर मुख्य वक्ता प्रो. अमरेश दूबे, सेवानिवृत्त आचार्य, अर्थशास्त्र, जेएनयू, नई दिल्ली व स्थानीय वक्ता प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, आचार्य रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीदउ गोरखपुर विश्वविद्यालय होंगे। 17 सितंबर को ह्यसामाजिक समरसता: महायोगी गोरखनाथ और नाथपंथ के विशेष सन्दर्भह्न विषयक सम्मेलन में बतौर मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा आयोग, प्रयागराज स्थानीय वक्ता डॉ. पद्मजा सिंह प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृत विभाग, दीदउ गोरखपुर विश्वविद्यालय होंगी। 18 सितंबर को ह्यसंस्कृत एवं भारतीय

संस्कृतिह्न विषयक सम्मेलन में बतौर मुख्य वक्ता प्रो. विनय कुमार पाण्डेय पूर्व अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग एवं मानित निदेशक श्रीविश्वनाथ मन्दिर, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी और स्थानीय वक्ता के रूप में डॉ. लक्ष्मी मिश्रा सह आचार्य एवं समन्वयक, संस्कृत विभाग, दीदउ गोरखपुर विश्वविद्यालय की सहभागिता होगी। 19 सितंबर को ह्यभारतीय संस्कृति एवं गो-सेवाह्न विषयक सम्मेलन में श्रीधराचार्य जी, महंतराघवाचार्य जी, डॉ. राम विलास वेदांती अपने विचार व्यक्त करेंगे। इसके अलावा प्रतिदिन 10:40 बजे से होने वाले इस सम्मेलन में कई संत-महात्मा का सानिध्य प्राप्त होगा।

20 और 21 को श्रद्धांजलि सभा

पुण्य तिथि समारोह के आखिरी दो दिन श्रद्धांजलि सभा के नाम होंगे। 20 सितंबर को युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में मुख्य अतिथि महंत बालकनाथ जी, महंत शेरनाथ जी, डॉ. राम विलास वेदांती जी, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सभी संस्थाओं के संस्थाध्यक्ष तथा अनेक संत, महात्मा श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इसी तरह 21 सितंबर को राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में मुख्य अतिथि महंत बालकनाथ जी, महंत शेरनाथ जी, डॉ. राम विलास वेदांती जी, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा अनेक संत, महात्मा श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। श्रद्धांजलि सप्ताह समारोह में देश के अनेक विद्वान संत, महंत महात्मा, धमार्चार्य, समाजसेवी भाग लेंगे। श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञान-यज्ञ, सप्तदिवसीय सम्मलेन एवं श्रद्धांजलि सभा का लाइव प्रसारण गोरखनाथ मंदिर के फेसबुक पेज, एक्स (ट्विटर हैंडल) और यू-ट्यूब चैनल पर किया जायेगा।

श्रद्धालुओं के लिए गोरखनाथ मंदिर की तरफ से निशुल्क बस सेवा

योगी कमलनाथ ने बताया कि गोरखनाथ मंदिर में श्रीमद्भागवत महापुराण कथा सुनने वाले श्रद्धालुओं के लिये गोरखनाथ मंदिर की ओर से प्रतिदिन निशुल्क बस सेवा कथा स्थल तक लाने-ले जाने हेतु निर्धारित स्थानों से अपराह्न 2.00 बजे से उपलब्ध होगी। यह बस सेवा इन पांच रूटों से मिलेगी :-

-लालडिग्गी पार्क, बाबा चैनसिंह मंदिर, इलाहीबाग, सूर्यकुंड ओवरब्रिज, रामलीला मैदान अंधियारी बाग होते हुये गोरखनाथ मंदिर तक

-मुंशी प्रेमचंद पार्क, टीडीएम चौराहा, रीड्स साहब धर्मशाला, शास्त्री चौक, गोलघर, धर्मशाला होते हुये गोरखनाथ मंदिर तक।

-मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गिरधरगंज, छात्रसंघ चौराहा, विश्वविद्यालय चौराहा, रेलवे स्टेशन महाराणा प्रताप तिराहा होते हुये गोरखनाथ मंदिर तक।

-गीता गार्डेन, धर्मपुर तिराहा, पादरी बाजार पुलिस चौकी, खजांची चौराहा, स्पोर्ट्स कॉलेज राणी सती मंदिर, जंगल नकहा ओवरब्रिज, रामनगर चौराहा होते हुये गोरखनाथ मन्दिर तक।

-महेसरा, बरगदवा, राजेंद्र नगर होते हुये गोरखनाथ मंदिर तक।

आईजीआरएस पर शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करे।

निर्माण कार्यों को ससमय पूर्ण करते हुए हैंडओवर की कार्यवाही की जाए। जिन कार्यों में बजट का आभाव हो वहां यूसी भिजवाए।

मथुरा 13 सितंबर/ कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार सिंह की अध्यक्षता में ग्राम्य विकास/विद्युत/लोक निर्माण/पंचायती राज/ शिक्षा/वन/उद्योग/श्रम/नियोजन विभाग/कृषि/सिंचाई/गन्ना/ उद्यान/ मत्स्य/लघु सिंचाई/सहकारिता/ दुग्ध एवं पशुपालन विभाग तथा 50 लाख से अधिक लागत की परियोजनाओं की मासिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई।

सीएम डैशबोर्ड की मॉनिटरिंग शासन स्तर पर निरंतर होती है और डैशबोर्ड की रिपोर्ट के आधार पर ही जनपदों की रैंकिंग तय की जाती है, इसलिए अधिकारीगण इसकी महत्ता को समझते हुए अपने-अपने विभागों में क्रियान्वन योजनाओं एवं विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ससमय भरे। जनपद के विकास कार्यों को गति प्रदान करने एवं सीएम डैशबोर्ड पर सभी विकास कार्यों व योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट शत प्रतिशत फीड कराने हेतु जिलाधिकारी ने निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री डैशबोर्ड की खराब रैंकिग पर लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता अजय कुमार वर्मा, बीएसए सुनील दत्त, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी प्रशांत कुमार को चेतावनी दी और रैंकिग में सुधार लाने के निर्देश दिए।

आई.जी.आर.एस पर प्राप्त शिकायतों को प्रति दिन मॉनिटर करे, डिफॉल्टर होने पर उसकी पुनः जांच कर फाइनल रिपोर्ट लगाई जाए। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि समस्त अधिकारी आई.जी.आर.एस शिकायतों के निस्तारण को ससमय पूर्ण करे।

जिलाधिकारी ने 50 लाख रुपए से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक की। समस्त कार्यों की गुणवत्ता एवं पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जाये। उन्होंने कहा कि जिन कार्यों में धन अभाव से कार्य रूका हुआ है वे शीघ्र ही यूसी भिजवाने की कार्यवाही करें तथा जहां पत्राचार की आवश्यकता है उसके संबंध में पत्रावली प्रस्तुत की जाए।

श्री सिंह ने कहा कि जो भी निमार्णाधीन कार्य प्रगति पर है वहा पर मूलभूत सुविधायें जैसे पानी, विद्युत, शौचालय, रैंप, बाउंड्री वॉल आदि का कार्य समय से पूर्ण करते हुए मा0 जनप्रतिनिधियों से लोकार्पण करवाया जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि जो कार्य पूर्ण हो गये हैं, उनकी जांच करायी जाये और सभी मानकों को पूर्ण कराते हुए संबंधित को हैण्डोवर कर दिये जायें।

समस्त कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिये कि सभी विभागों से समन्वय स्थापित कर कार्यों में तेजी लायें और जहां पर समस्या उत्पन्न हो रही है वहां मुख्य विकास अधिकारी, संबंधित उप जिलाधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी के माध्यम से समस्याओं का समाधान कराया जाये और टीम भावना के साथ कार्य किया जाये।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि जो भी स्कूलों, सरकारी आवासों, समाज कल्याण विभाग योजनाओं के अंतर्गत छात्रावास व स्कूल, जिला कारागार में आवास आदि से संबंधित कार्य प्रगति पर हैं, उन्हें शीघ्रता एवं गुणवत्ता तथा पारदर्शिता के साथ पूर्ण किया जाये। उन्होंने कहा कि जहां कार्य धीमी प्रगति पर हो वहां पर आवश्यकतानुसार लेवर व कर्मचारी बढ़ाये जायें।

श्री सिंह ने कहा कि जो भी निमार्णाधीन कार्य प्रगति पर हैं वहां पर रैन वॉटर हार्वेस्टिंग प्लांट अनिवार्य रूप से लगाया जाए। जिन निर्माण कार्यों में शिकायत प्राप्त हो वहां के कार्यों की सैम्पलिंग करायी जाये और यदि मानकानुसार कार्य नहीं है, तो संबंधित के खिलाफ कार्यवाही की जाये।

विभाग गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता के साथ कार्यों को पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। किसी भी कार्य में गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के लिए लापरवाही क्षम्य नहीं होगी।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी मनीष मीना, डीडीओ गरिमा खरे, लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता अजय कुमार, उपायुक्त उद्योग रामेंद्र कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त, जिला विद्यालय निरीक्षक रविन्द्र सिंह, रोडवेज, लोक निर्माण, सेतु निगम, जल निगम, नगर निगम, आरईएस सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

केजरीवाल को जमानत सुप्रीम कोर्ट का स्वागत योग्य कदम-प्रमोद तिवारी

राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता ने पेट्रोलियम पदार्थो के दामों में कमी न करने के सरकार के रूख की किया तल्ख आलोचना

प्रमोद श्रीवास्तव

प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट द्वारा जमानत दिये जाने के निर्णय को स्वागत योग्य कहा है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा है कि सर्वोच्च न्यायालय ने इसके पहले इण्डिया गठबंधन के झारखण्ड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को जमानत प्रदान की। वही सर्वोच्च न्यायालय ने सभी तथ्यों के मददेनजर यह माना है कि अरविन्द केजरीवाल की याचिका जमानत योग्य है। शुक्रवार को राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि भाजपा जांच एजेन्सियों का दुरूपयोग फ्रन्टल संगठन के रूप में कर रही है। उन्होने कहा कि मोदी सरकार देश में विपक्ष के नेताओं की आवाज दबाने के लिए इन एजेन्सियों के सहारे आतंक तथा भय माहौल बना रही है।

उन्होने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा केजरीवाल की जमानत को मंजूर किये जाने का फैसला भाजपा सरकार की तानाशाही पर करारा तमाचा है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि इससे मोदी सरकार यह सबक ले कि लोकतंत्र में विरोधी नेताओं को प्रताड़ित करना उचित नही है। वहीं उन्होने सुप्रीम कोर्ट द्वारा बुल्डोजर चलाने के मामले मे भी सुप्रीम कोर्ट की तल्खी को सर्वथा उचित करार दिया।

उन्होनें कहा कि शीर्ष अदालत ने कानून के विपरीत सम्पत्ति ध्वस्तीकरण को कानून के राज के विपरीत करार देकर भाजपा की तुगलकी नीति को कड़वी नसीहत दी है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि ताजा रिर्पोट है कि दुनिया के बाजार में इस समय कच्चे तेल की कीमतो मे भारी गिरावट आ रही है।

उन्होने कहा कि इसके बावजूद मोदी सरकार देश में पेट्रोल व डीजल के मूल्य सिर्फ चंद पूंजीपतियों के हित में सस्ते नही कर रही है। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने मौजूदा समय में अघोषित विद्युत कटौती को लेकर भी सरकार की अक्षमता पर सवाल दागा।

उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार आवश्यकता की मांग के बावजूद सरप्लस बिजली नही खरीदने की अदूरदर्शिता दिखला रही है। उन्होनें सरकार से कहा कि वह हर हाल में यह सुनिश्चित करे कि लोगों को सुचारू विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी का बयान शुक्रवार को यहां मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल के हवाले से निर्गत हुआ है।

जनता की सेवा का मिला प्रतिफल रचना पाठक को नगर निगम मथुरा मैं कैबिनेट सदस्य किया मनोनित

मथुरा वृंदावन नगर निगम की बोर्ड बैठक मै नगर निगम महापौर विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा मथुरा शहर के वार्ड नंबर 61 से निर्वाचित पार्षद रचना पाठक को कैबिनेट सदस्य के रूप मै मनोनित किया गया।

रचना पाठक लगातार वार्ड नंबर 61 की जनता की आवाज को नगर निगम में प्रखरता के साथ उठाती रही है, जिनके जनता के प्रति सेवा कार्य को देखते हुए नगर निगम महापौर विनोद कुमार अग्रवाल ने अपनी कैबिनेट में जगह दी।

रचना पाठक के नगर निगम मथुरा मैं कैबिनेट सदस्य मनोनीत होने की खबर पाकर वार्ड की जनता मै उत्साह की लहर दौड़ गई। सभी भाजपा कार्यकताओं व वार्ड के निवासियों ने इसके लिये महापौर विनोद अग्रवाल जी व नगर निगम बोर्ड के सभी पार्षदो का आभार व्यक्त किया है

रचना पाठक को कैबिनेट सदस्य मनोनीत होने पर मार्गदर्शक गोपेश्वर नाथ चतुवेर्दी जी,वार्ड अध्यक्ष दीपेंद्र चतुवेर्दी व अशोक गुप्ता जी,जिला मंत्री कुंजविहारी चतुवेर्दी,पार्षद बालकृष्ण चतुवेर्दी, पूर्व पार्षद रामदास चतुवेर्दी व ऋचा रामकृष्ण चतुवेर्दी पूर्व सभासद घनश्याम हरियाणा जी व पूर्व सभासद बालकृष्ण पाठक, नगर मंत्री नितिन चतुवेर्दी ,अखिलेश गौतम, हरिओम शर्मा,सुनील चतुवेर्दी,संजीव चतुवेर्दी,धीरज धारी चतुवेर्दी,ऋषभ सक्सेना,पुलकित शर्मा,कन्हैया वर्मा,राजू चतुवेर्दी,अमित पाठक,अनिल चतुवेर्दी,विनय शर्मा,कृष्णा चतुवेर्दी,सूर्यकांत चतुवेर्दी, सोमेंद्र शर्मा,राजू शर्मा,अजय चतुवेर्दी, अनिल अग्रवाल, मयंक पाठक, मानोज चतुवेर्दी, लालजी शास्त्री, अयोध्यानाथ चतुर्वेदि,द्वारका चतुवेर्दी,सतीश चतुवेर्दी एडवोकेट,ग्वाला चतुवेर्दी, कुलदीप चतुवेर्दी,बालू चतुवेर्दी,पंकज चतुवेर्दी,जमुना चतुवेर्दी,दिलीप चतुवेर्दी,अतुल पाठक,मथुरेश पाठक,लक्ष्मण चतुवेर्दी, ज्योति चतुवेर्दी,छाया रावत,अनुपमा चतुवेर्दी,आरती चतुवेर्दी, साधना चतुर्वडी आदि शामिल है

नगरिया पट्टी देवरी में एक मकान गिरने से भारी क्षति, चार बेटियां और मां घायल

हाथरस।सिकंदरराऊ तहसील क्षेत्र के गांव नगरिया पट्टी देवरी में भारी बारिश के चलते गत रात्रि एक मकान धराशाई हो गया जिससे भारी नुकसान हुआ वहीं मां एवं चार बेटियां घायल हो गईं। दो गंभीर घायल बेटियों को जिला अस्पताल हाथरस रेफर कर दिया गया। उप जिलाधिकारी ने मौके पर पहुंचकर घटना का जायजा लिया ।

गांव नगरिया पट्टी देवी निवासी रिंकी देवी पत्नी स्वर्गीय भोपाल सिंह अपनी चार बेटियों के साथ एक मकान में रहती है। 2 दिन से हो रही लगातार बारिश के कारण गुरुवार की रात्रि उनका मकान गिर गया जिससे रिंकी देवी एवं शाल , मधु , नैंसी, सुमन घायल हो गईं।

सूचना पर उप जिलाधिकारी धर्मेंद्र सिंह राजस्व टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। घायल महिला और उसकी बेटियों को एंबुलेंस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हसायन भिजवाया जहां से शालू एवं नैंसी को गंभीर घायल करने के कारण जिला अस्पताल हाथरस रेफर कर दिया गया।

भूसे की बुर्जी में दबकर ग्रामीण की मौत, पोखर में मिला ओमप्रकाश का शव

हाथरस। गांव पढील में पशुओं के लिए बुर्जी से भूसा निकालने गये ग्रामीण की बुर्जी के ढह जाने से भूसे में दबकर मौत हो गई। जिससे ग्रामीण के परिजनों में कोहराम मच गया। परिजनों ने मृतक के शव का बिना पोस्टमार्टम कराए अंतिम संस्कार कर दिया। जानकारी के अनुसार गांव पढील निवासी पचपन वर्षीय ऋषि पाठक पुत्र चंद्रपाल पाठक पशुओं के लिए बुर्जी में से भूसा निकालने गया था। बुर्जी से भूसा निकालते समय रिषी पाठक भूसे में दब गया। जानकारी भूसे में दबे रिषी को बाहर निकाला, तब तक दम घुटने के कारण रिषी ने दम तोड दिया।

परिजन रिषी को आनन-फानन में सीएचसी लेकर पहुंचे जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। देर शाम परिजनों ने मृतक के शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

दूसरी ओर ओमप्रकाश पुत्र कालू निवासी गांव भमूरी थाना छर्रा अलीगढ़, करीब पैंतीस वर्ष, का शव गांव भोजगढ़ी मदरगद्दा के निकट सड़क किनारे पोखार में मिलने से क्षेत्र में खलबली मच गई।

घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को ग्रामीणों की मदद से पोखर से निकलवाकर अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा वहीं पुलिस ने मृतक के परिजनों को दी सूचना।

माध्यमिक और बेसिक विभाग ने इन्सपायर अवार्ड मानक योजना के नामांकन वृद्धि हेतु किया शिविरों का हुआ आयोजन

फिरोजाबादः- जिला विद्यालय निरीक्षक फिरोजाबाद धीरेन्द्र कुमार और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार पांडेय के निर्देशन, जिला सह नोडल अधिकारी अश्वनी कुमार जैन एवं ब्लॉकवार नोडल अधिकारियों के संयोजन में इन्सपायर अवार्ड मानक योजना के नामांकन में वृद्धि हेतु सभी ब्लॉक एवं बी आर सी में क्रमशः फिरोजाबाद में दिनाँक 13 सितम्बर 2024 को इन्सपायर कैम्प आयोजित किए गए। कैम्प में इन्सपायर अवार्ड मानक योजना में नामांकन में वृद्धि कराएं।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार पांडेय ने सभी खण्ड शिक्षा अधिकारी, एस आर जी, ए आर पी, संकुल शिक्षकों को बीआरसी पर उपस्थित रहकर नामांकन बढ़ाने के निर्देश प्रदान किये गए थे।

अश्वनी कुमार जैन ने बताया कि दिनाँक 13 सितम्बर 2024 को ब्लॉकवार विद्यालयों में आयोजित कैम्पों में विभिन्न सिंह, सुभाष सिंह, नरेश बाबू, अजय कुमार, रोहित श्रीवास्तव, राम कुमार शर्मा, आलोक सिंह, सपना सिंह, यतेन्द्र कुमार, प्रमोद कुमार यादव, राजकपूर, हरिश्चन्द्र, श्रीमती मुदिता पाण्डे, संजीव यादव, राम पाल सिंह, कुंवरपाल करोलिया, सुधीर कुमार, प्रेमस्वरूप, श्रीमती पूनम प्रकाश, रवि प्रकाश, सुनील पाण्डे, नीरज चौहान, श्यामपाल, नीरज जैन, प्रवेश पाण्डे, अंजय जैन, सतवीर सिंह, निर्भय जैन, दीपक कुमार, राजकुमार सिंह,

डीआईओएस धीरेन्द्र कुमार ने चयनित ब्लॉकवार विद्यालय के प्रधानाचार्यों, नोडल अधिकारियों, सहयोगी विज्ञान अध्यापकों, कम्प्यूटर ऑपरेटरों को निर्देशित किया था कि वे चयनित विद्यालयो में दिनाँक 13-09-2024 को आयोजित विद्यालयों ने नामांकन के प्रथम चरण के अंतर्गत अपने विद्यालयों को इन्सपायर अवार्ड की वेबसाइट पर नामांकन कराया गया इसके साथ ही 400 से अधिक विद्यार्थियों के नामांकन भी कराए गए हैं।

ब्लॉकवार कैम्पों में उपेन्द्र दीपक शर्मा, श्रीमती प्रज्ञा भारती, हिमांशु शर्मा, हरिओम, आशीष यादव, श्रीमती भारती शर्मा, शिवांगी लवानिया, मो तोहिद, ओमवीर, कुलदीप वर्मा, राजीव कान्त, कमलेश कुमार, सुधीर यादव आदि का सहयोग रहा।

विधान परिषद में करदाताओं को भी मिले आरक्षित सीट-सुमंत

शिकोहाबाद। अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुमंत गुप्ता ने एटा रोड स्थित ग्रीन पार्क में पत्रकारों को कानपुर में 22 सितंबर को होने वाले प्रांतीय कार्यकर्ता सम्मेलन की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देश की सरकार को राजस्व देने वाले करदाता व्यापारी को विधान परिषद में अन्य लोगों की तरह सीट आरक्षित करनी चाहिए। जिससे व्यापारियों को सम्मान मिल सके।

उन्होंने बताया कि परिषद का प्रांतीय कार्यकर्ता प्रतिनिधि सम्मेलन 22 सितंबर को मंदाकिनी होटल साकेत नगर कानपुर महानगर में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र से संबंधित प्रस्ताव पारित किये जाएंगे। जिसमें केंद्र सरकार से व्यापार व उद्योग से संबंधित मांग पत्र जारी किया जायेगा। जिसमें जीएसटी प्रणाली में पेनाल्टी के साथ सजा का भी प्रावधान किया गया है, जो किसी भी दृष्टि से न्याय संगत नहीं है। मांग की जायेगी कि सजा के प्रावधान को समाप्त किया जाए। छोटे, मझोले व्यापारियों को छापे से मुक्त रखा जाए। जीएसटी को ईडी से न जोड़ा जाए। जीएसटी में पंजीकृत व्यापारियों को दस लाख रुपये का बीमा सरकार द्वारा सुनिश्चित किया जाए। व्यापारी वृद्धावस्था पेंशन व्यापारियों को 65 वर्ष की आयु में दी जाए। जीएसटी में पंजीकृत व्यापारियों की मृतक आश्रितों को 20 लाख रुपये की मदद दी जाए। समाजसेवा में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करने वाले व्यापारियों को सरकारी निगमों व अन्य महत्वपूर्ण सरकारी संस्थानों में मनोनीत किये जाएं। विधान परिषद, राज्य सभा में कर दाताओं को 10 प्रतिशत सीट आरक्षित की जाएं। इसके साथ ही समाज में फिजूल खर्ची रोकने के लिए भी कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे जायेंगे। वार्ता के दौरान राजीव गुप्ता, राजेश गुप्ता, अरुण गुप्ता, प्रिन्स जैन, अरविंद गुप्ता आदि मौजूद रहे।

सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के छात्र -छात्राओं ने किया जनपदीय विज्ञान एवं वैदिक गणित मेला में सहभागिता कर उत्कृष्ट प्रदर्शन

हाथरस।सिकंदराराऊ नगर में स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के छात्र -छात्राओं ने जनपदीय विज्ञान एवं वैदिक गणित मेला में सहभागिता कर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर नगर व विद्यालय का गौरव बढ़ाया। मेले का आयोजन सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज आगरा मार्ग हाथरस में संपन्न हुआ। जिसमें आयुष यादव, अंशु, अमन कुमार ने प्रथम स्थान, विज्ञान पत्र वाचन में रितु प्रथम स्थान, विज्ञान प्रयोगात्मक में भावना ने प्रथम स्थान, तरुण वर्ग में विज्ञान प्रदर्श में शौर्य प्रताप ने प्रथम स्थान, विज्ञान प्रश्न मंच में अभिषेक यादव, प्रियांशु, डेविड कुशवाहा ने प्रथम स्थान, विज्ञान प्रयोगात्मक में रुद्रांश साहू प्रदर्श में नितिन कुमार, प्रियांशु ने प्रथम स्थान, गणित प्रयोगात्मक में अखिलेश व पत्र -प्रस्तुति में अंकित कुमार ने प्रथम स्थान, किशोर वर्ग में गणित प्रश्न मंच में उज्ज्वल उपाध्याय, राजीव कुमार, शिवांश ने प्रथम स्थान, गणित प्रयोगात्मक में गौरी व गणित प्रदर्श में राज गौतम ने प्रथम स्थान, तरूण वर्ग प्रश्न

विज्ञान प्रश्न मंच बाल वर्ग अमृता , नैन्सी,नव्या ने तृतीय स्थान, विज्ञान प्रदर्श में चिराग कश्यप , आदर्श,प्रियांशी, नितिन कुमार, रश्मि ने प्रथम स्थान, विज्ञान पत्र वाचन में भूमि चौहान ने प्रथम स्थान, विज्ञान प्रयोगात्मक में विस्वास वार्ष्णेय ने प्रथम स्थान तथा किशोर वर्ग में विज्ञान प्रदर्श में हिमांशी ने प्रथम स्थान, विज्ञान प्रश्न मंच में भौतिक प्रयोगात्मक, रमन ने रसायन प्रयोगात्मक,प्रखर शर्मा जीवविज्ञान प्रयोगात्मक में तीनों ने प्रथम स्थान, विज्ञान पत्र वाचन में शिवांगी चौहान व वंशिका ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का सम्मान बढ़ाया।

वैदिक गणित मेला में बाल वर्ग में गणित प्रश्न मंच में सुमित कुमार, तपिश पुण्ढीर, देव कौशिक ने प्रथम स्थान, गणित मंच में नितिन कुमार, हेमंत कुमार,शिवम , गणित पत्र - प्रस्तुति में प्रभाकर, गणित प्रयोगात्मक में आदित्य शुर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किये।

आचार्य पत्र वाचन में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सिकंदरा राव के आचार्य राजकुमार ने संकुल में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

शब्दम् ने शिक्षकों को किया सम्मानित

शिकोहाबाद। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में 12 सितंबर को साहित्य, संगीत और कला को समर्पित शब्दम् संस्था ने शिकोहाबाद स्थित संस्कृति भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में चयनित शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में संस्था एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज ने मुंबई से भेजे अपने संदेश को पढ़ कर की गई।

कार्यक्रम में जिन शिक्षकों को सम्मानित किया गया उसमें कृपाशंकर शर्मा (शूल) शिक्षक यंग स्कॉलर्स एकेडमी शिकोहाबाद,सतीश कुमार यादव समर्थ पूर्व प्रधानाध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिरथुआ (मैनपुरी) एवं नरेश सिंह चैहान प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय सूरजपुर रुधैनी अरांव का सम्मान राशि, वैजयंती माला,नारियल, हरित कलश, शॉल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। सम्मान समारोह में सामाजिक उत्तरदायित्व में शिक्षक की भूमिका विषय पर एक संगोष्ठी भी आयोजित की गई। जिसमें वक्ताओं ने अपने विचार रखे। संचालन अरविंद तिवारी ने किया। सम्मानित किये गये शिक्षकों का परिचय मंजर उल वासे ने दिया। इस अवसर पर

उत्तम सिंह उत्तम, आरके बंसल, विनीत बसंत, आलोक अर्श, धमेन्द्र उपाध्याय, एनपी यादव, आचार्य शिव रतन सिंह, विनीत बसंत, शशी प्रभा, सत्यदेव पाण्डेय, पारूल राना, डॉ. मंजुला सिंह, कल्पना यादव, श्रद्धा श्रीवास्तव, मंन्जुलता दिनेश चन्द्र उपाध्याय, एमएस चौहान, प्रवीन पवार और विवेक चौहान सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सेवानिवृत्त अध्यापक को जान से मारने की धमकी, प्राथमिकी दर्ज,

थाना जसराना क्षेत्र के ग्राम बिलासपुर में सेवानिवृत्त अध्यापक ने पुलिस को शिकायती प्रार्थना पत्र देते गांव के ही दबंग लोगो पर जान से मारने व गांव छोड़कर भाग जाने की धमकी देने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है।

जसराना थाना में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए सेवानिवृत्त अधयापक लायक सिंह ने बताया कि 12 सितंबर 2024 की शाम करीब 7:30 बजे और 13 सितंबर की सुबह 6:30 बजे उनके गाँव के ही ब्रजमोहन पुत्र उदयवीर सिंह और मुकेश पुत्र लायक सिंह यादव ने उनके घर पर आकर गाली-गलौज की और जान से मारने की धमकी दी।

लायक सिंह के अनुसार, आरोपियों ने उन्हें धमकाते हुए कहा, "अगर आज शाम तक गाँव नहीं छोड़ा, तो तुम्हारी गर्दन काट देंगे और जान से मार देंगे।" लायक सिंह का कहना है कि उनका परिवार सविता समाज से है और यह घटना जातिगत आधार पर दुर्भावना से प्रेरित है।

यह पहली बार नहीं है जब लायक सिंह को इस तरह की धमकियाँ मिली हैं। उन्होंने बताया कि 18 जुलाई 2017 को भी उन्हें इसी प्रकार धमकाया गया था, लेकिन इस बार उन्हें अपनी जान का खतरा ज्यादा महसूस हो रहा है।

लायक सिंह ने थाना जसराना में शिकायत दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की माँग की है। उन्होंने पुलिस से सुरक्षा की गुहार लगाई है, ताकि भविष्य में ऐसी किसी अप्रिय घटना से बचा जा सके। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है।

थाना प्रभारी अंजीश कुमार का कहना है कि प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है

इस मामले में निष्पक्ष कार्रवाई की जाएगी और पीड़ित परिवार को हरसंभव सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

विधान सभा पास वाहन पर लगा कर जमा रहे रौब

शिकोहाबाद। शहर में विधानसभा के पास वाहनों पर लगाकर प्रशासन एवं लोगों पर रौब गांठना कुछ लोगों का एक फैशन बन चुका है। शहर में कई वाहनों पर विधानसभा के पास लगाकर गाड़ियां घूम रही हैं। इन पर पुलिस एवं प्रशासन नेताओं की वजह से कार्रवाई करने से हर बार बचता नजर आ रहा है। स्थानीय तहसील एवं पुलिस ही नहीं, बल्कि जिला प्रशासन भी इन वाहनों की चेकिंग करने की जहमत नहीं उठा रहा है।

अभी कुछ माह पहले की ही बात है। जब तत्कालीन एसपी ग्रामीण फिरोजाबाद रणविजय सिंह शिकोहाबाद शहर में पुलिस फोर्स के साथ रूटमार्च कर रहे थे। उस दौरान एक काले रंग की कार अचानक ही पुलिस के रूटमार्च में तहसील चौराहे के समीप जा पहुंची। जिसको पुलिसकर्मी ने जब रोका.टोका तो कार चालक ने पुलिस के साथ भी हददर्जे की अभद्रता कर दी थी। कार चालक की अभद्रता को देख एसपी ग्रामीण ने खुद कमान संभाली थी और शंभूनगर निवासी एक कार चालक को हिरासत में ले लिया था। उसकी कार के अंदर जब पुलिस ने चेकिंग की, तो कार के अंदर का नजारा देखकर पुलिस भी दंग रह गई थी। काले रंग की कार के अंदर एक लड़की की चुनरी,सिगरेट के पैकेट एवं शराब की बोतल के साथ कुछ स्नैक्स भी रखे हुए थे। पकड़े गए युवक से पुलिस ने जब पूछताछ की, तो उसने खुद को एक पार्टी के विधायक का भतीजा बताया था। जब मामला विधायक तक पहुंचा, तो प्रथम दृष्टया उन्होंने मामले से पल्ला झाड़ लिया था। अब इसी तरह शहर में कई वाहनों पर विधानसभा पास लगाकर लोग काले रंग के वाहन लेकर शहरभर में पुलिस प्रशासन एवं लोगों पर रौब झाड़ते हुए दिखाई देते हैं। शहर में कम से कम अब तक विधानसभा पास लगाकर गाड़ियां लेकर घूमते हुए चार से पांच वाहन देखे जा चुके हैं। जिनमें न तो कोई विधायक होता है और न ही कोई उनका रिश्तेदार। पकड़े जाने पर सभी खुद को विधायक का रिश्तेदार बताते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने से भी जिला प्रशासन गुरेज कर रहा है।

मक्खनपुर थाना पीपुल्स फ्रेंडली व पुलिस फ्रेंडली बना

एडीजी आगरा जोन आगरा एवं आईजी रेंज ने किया उदघाटन

शिकोहाबाद। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश की मंशा के अनुरूप पुलिस महानिदेशक लखनऊ उत्तर प्रदेश, अपर पुलिस महानिदेशक आगरा जोन आगरा एवं पुलिस महानिरीक्षक आगरा रेंज आगरा की प्रेरणा एवं निर्देशन में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की उपस्थित में मक्खनपुर थाना का एडीजी ने उदघाटन किया।

जनपद में मक्खनपुर थाना को पुलिस फ्रेंड्ली और पीपुल्स फ्रेंडली बनाया गया है। इस थाने में सभी आधुनिक सुविधाएं मुहैया कराई गई हैं। इस थाने को आधुनिक सुख सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। एडीजी अनुपम कुलश्रेष्ठ, जिलाधिकारी रमेश रंजन और एसएसपी सौरभ दीक्षित ने उदघाटन किया। एडीजी ने बताया कि थाने का सौंदर्यीकरण मिशन शक्ति अभियान के अंतगर्त महिला संबंधी समस्याओं के निदान व उनकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उच्चीकृत कर निष्पक्ष एवं पार्दशी व्यवस्था हेतु आधुनिक सुख सुविधाओं से सुसज्जित किया है। जिससे पुलिस एवं आमजन के मध्य परस्पर संवाद स्थापित करते हुए त्वरित एवें सुगम पुलिस सहायता उपलब्ध कराई जा सके। जिससे आमजन में सुरक्षा एवं विश्वास की भावना पैदा हो।

पुलिसकर्मियों के भी परम्परागत रहन सहन क्रियाकलाप को आधुनिक, सुविधायुक्त बनाया गया है ।

जनसुनवाई को प्रभावी बनाने के दृष्टिगत महिलाओं की शिकायतों,समस्याओं के

समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु मिशन शक्ति अभियान के तहत इंटीग्रेटेड

महिला हेल्प डेस्क रूम में तकनीकी युक्त समन्वित अन्वेषण कक्ष, महिला हेल्प डेस्क

और परिवार परामर्श काउंसलिंग काउंटर की व्यवस्था प्रदान की गयी है ।

मिशन शक्ति अभियान के तहत नवनिर्मित इंटीग्रेटेड महिला हैल्पडैक्स को तीन

भागों में विभाजित किया गया है । पहला महिला हैल्पडैक्स जिसमें महिलाएँ अपनी

शिकायत,समस्या लेकर आएँगी उनको महिला पुलिसकर्मियों द्वारा ध्यानपूर्वक सुना

जाएगा । दूसरे भाग में पीडिताओं की ऑडियो,वीडियो रिकार्ड के लिए एक काउंटर

बनाया गया है, जिसमें विधिवत घटना के सम्बन्ध में जानकारी,अन्वेषण किया

जाएगा । वहीं तीसरे भाग में एक काउँटर बनाया गया है जिसमें अगर महिला के साथ

मारपीट,चोटिल,लैगिंग अपराध होता है तो महिला पुलिसकर्मी द्वारा प्रारम्भिक

जाँच की जा सकेगी ।

सभी मालों को क्यूआर कोड़ से आच्छादित कर दिया गया है।जिसे कोर्ट में पेशी

के समय आसानी से प्राप्त किया जा सके एंवं सभी डिटेल सुगमता,आसानी से

निकाली जा सके। पूर्व में कपडे पर मुहर लगाकर कोडिंग की जाती थी, जिससे कपड़ा

गल फट जाते थे एवं अंकित डिटेल धुल मिट जाते थे । इसमें एक मार्डन वैपन रैक का

निर्माण कराया गया है जिसको बल्वा जैसी स्थिति में पुलिसकर्मी शीघ्रता से अपने

असलहों को निकालकर उपयोग कर सकें ।

नवनिर्मित प्रशिक्षण रूम का उद्देश्य इंडोर ट्रेनिंग के लिए है । एक जुलाई 2024

से लागू नए कानूनों के सम्बन्ध में नए प्रावधान व प्रक्रिया हैं। जिसको लेकर पुलिसकर्मी

व आने वाले नए 60 हजार पुलिसकर्मियों की भर्ती हो रही है। उन सभी को ट्रेनिंग की

आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए बहुउद्देश्यीय प्रशिक्षण रूम बनाया गया है । प्रशिक्षण कक्ष

में प्रोजेक्टर को भी व्यवस्थित किया गया है जिसमें प्रशिक्षण से सम्बन्धित ऑडियो वीडियो के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

मिशन शक्ति अभियान के तहत थाने पर नवनिर्मित क्रेच घर का निर्माण कराया

गया है। जिसका उद्देश्य कोर्ट के काम से दबिश या विवेचना में महिला पुलिसकर्मी को

रवाना होंना पडता है। जिसमें छोटे बच्चे उनके साथ रहते हैं। साथ ही घर पर भी उनके

बच्चों का कोई देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है। जिससे महिला पुलिसकर्मी

तनाव में रहती है । इस कारण इस क्रेच घर का निर्माण कराया गया है जिसमें महिला

पुलिसकर्मियों के बच्चों के लिए खेलने,दूध, पानी आदि की उत्तम व्यवस्था की गयी है

साथ ही क्रेच घर में एक महिला पुलिसकर्मी की भी ड्यूटी लगायी गयी है ।

पुरुष पुलिसकर्मियों के बारे में ध्यान रखते हुए बैरक का नवीनीकरण किया गया

है, जिसमें पहले बैरक में अलमारी नहीं थी जिससे वर्दी व सामान का रखरखाव

बेतरती रहता था। वर्दी भी गंदी हो जाती थी। जिससे टर्नआउट पर फर्क पड़ता था

साथ ही सोने के लिए तख्त आदि अच्छे नहीं थे। इसलिए सभी को डैडीकेटेड लॉकर

अलमारी दे दी गयी हैं। जिसमें पुलिसकर्मी अपने वर्दी व मूल्यवान वस्तू सुरक्षित रखी

जा सके एवं सभी को सिंगल बैड़ दीवान बैड़ उपलब्ध कराए गए हैं ।

थाना पर कंन्ट्रोल रूप स्थापित किया गया है। जिसमें थाने के आसपास मुख्य चौराहों,भीड़भाड़ वाले इलाकों, बाजारों में लगे सीसीटीवी कैमरों की सतत निगरानी की जा रही है ।

जिलाधिकारी ने अस्थाई गौशाला का निरीक्षण कर यथास्थिति का लिया जायजा, दिए निर्देश

हाथरस। विकास खण्ड सादाबाद के ग्राम पंचायत कजरौठी व तसींगा में संचालित अस्थाई गौशाला का जिलाधिकारी आशीष कुमार ने निरीक्षण कर यथास्थिति का जायजा लिया तथा संरक्षित गौवंश हेतु पर्याप्त मात्रा में चारा-पानी आदि व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने क्रमशः विकास खण्ड सादाबाद के ग्राम पंचायत कजरौठी में संचालित श्री राधे अस्थाई गौशाला तथा विकास खण्ड सादाबाद के ग्राम पंचायत तसींगा में संचालित अस्थाई गौशाला का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने गौशाला में बीमार गौवंश, छोटे बछड़ों और कमजोर पशुओं के लिये चारे-पानी की अलग से व्यवस्था करने के निर्देश दिए। गौवंश के लिये हरे चारे की उपलब्धता हेतु रिक्त भूमि पर नेपियर घास लगवाने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला पंचायतराज अधिकारी को ग्राम पंचायतों में संचालित समस्त गौशालाओं में मिट्टी का टापू बनवाने तथा गौशाला में जहां पर जलभराव की समस्या हो सकती है उन स्थलों पर ईंटों की रोड़ी एवं राबिस डलवाने के निर्देश दिए। उन्होंने ग्राम प्रधानों को गौशाला में जल निकासी की व्यवस्था को सुनिश्चित करने के साथ ही नियमित रूप से साफ-सफाई कराने एवं संरक्षित पशुओं का नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण/टीकाकरण कराने निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्थाई गौशाला में संरक्षित गौवंश, पीने के पानी, टीनशेड, खाने के लिए हरा चारा एवं भूसे आदि की व्यवस्था, केयर टेकर उपस्थिति, स्टॉक, पशु चिकित्सक विजिट तथा सीसीटीवी संचालन के संबंध में जानकारी की। विकास खण्ड सादाबाद के ग्राम पंचायत कजरौठी गौ-शाला में संरक्षित किये गये गौ-वंश हेतु की गई व्यवस्थाओं के संबंध में सहायक विकास अधिकारी पंचायत रामकिशन सिंह ने अवगत कराया कि यह गौशाला लगभग 2 एकड़ में फैली हुई है। गौशाला में लगभग 492 निराश्रित गौवंश मौजूद हैं। जिसमें से 115 नर तथा 377 मादा गौवंश हैं। जिनकी देखरेख हेतु 12 केयर टेकर तथा ग्राम पंचायतों से समय समय पर आवश्यकतानुसार सफाई कर्मचारी लगाए जाते हैं। गौशाला में एक पशु चिकत्सक तैनात है। 3 टीन शेड, 4 चरही, 3 पानी के हॉज, 1 समरसेबिल तथा 4 सीसीटीवी कैमरे संचालित हैं। उन्होंने बताया कि नेडा विभाग द्वारा 2 सोलर लगाये जायेगें। इसके पश्चात जिलाधिकारी ने विकास खण्ड सादाबाद के ग्राम पंचायत तसींगा स्थित अस्थाई गौशाला का निरीक्षण किया। गौ-शाला में संरक्षित किये गये गौ-वंश हेतु की गई व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी करने पर सचिव संत कुमार ने अवगत कराया कि गौशाला लगभग 3 बीघा में बनी हुई है। गौशाला में लगभग 191 निराश्रित गौवंश मौजूद हैं। जिसमें से 3 नर तथा 188 मादा गौवंश हैं। जिनकी देखरेख हेतु 4 केयर टेकर हैं। 4 टीन शेड, 5 चरही, 10 पानी के हॉज, 1 समरसेबिल तथा 2 सीसीटीवी कैमरे संचालित हैं। गौशाला में एक पशु चिकित्सक तैनात है। सभी गौवंशों की ईयर टैगिंग करा दी गई है।

फिरोजाबादः सड़को पर मवेशियों का जमावड़ा, बन चुका कई दुर्घटनाओं का कारण

उमाकांत पचौरी)
फिरोजाबाद 13 सितंबर

।जनपद फिरोजाबाद में प्रसाशन की लापरवाही से आवारा जानवर (अल्ल्रें'२) सड़को (फ्ङ्किं२) पर काल बनकर घूम रहे है। फिरोजाबाद से लगी लिंक सड़कों पर आवारा जानवरों का कब्जा है, जो किसी भी दिन बड़ी घटना (ॠल्लि३) का कारण बन सकते है।वाहन चालक सावधानी से अपनी गाड़ियों (ं१२) को निकालकर यात्रा करने को मजबूर है।

संवाददाता के अनुसार सबसे ज्यादा हालत खराब फिरोजाबाद तहसील और कलेक्ट्रेट के नजदीक मक्खनपुर तिराहा क्षेत्र की है जहाँ झुंड के झुंड आवारा जानवर सड़को पर कब्जा जमाए हुए है। फिरोजाबाद से महज दो किलोमीटर की दूरी पर राजकीय पॉलिटेक्निक व जलेसर रोड स्थित पीपल चौकी के पास में सैकड़ो आवारा पशुओं का जमावड़ा लगा रहता हैं, इस सड़क से सम्बंधित विभाग के जिले के अधिकारियों का भी आवागमन प्रतिदिन लगा रहता हैं। लेकिन किसी की नजर इन पशुओं पर नहीं जाती हैं लगता हैं किसी बड़ी दुर्घटना का सभी इंतजार कर रहे हैं।

मवेशियों का झुंड दे रहा है हादसे को दावत

दरअसल फिरोजाबाद में आवारा जानवरो के लिए लगाई गई सख्ती पूरी तरह से नाकाम साबित हो रही है। जिले के गांवों में स्थित लिंक मार्ग हो या फिर हाइवे सभी पर आवारा जानवरो का कब्जा है। झुंड के झुंड आवारा जानवर सड़को पर कब्जा जमाकर बैठे हुए है जो कभी भी किसी भी बड़े हादसे का कारण बन सकते है। बड़ी घटना होने के बाद जिले का पशु विभाग कुछ जानवरो को पकड़कर खानापूर्ति कर देता है।

आवारा पशुओं के कारण कई सड़कों पर आवागमन बाधित

जिला मुख्यालय के नजदीक मक्खनपुर तिराहा बल्टीगढ़ चौराहा, आगरा रोड, फिरोजाबाद कस्बे के बाईपास, आवास विकास कालोनी, सुहाग नगर उसायनी गांव के पास बड़ी संख्या में आवारा जानवर सड़को पर बैठे रहते है। वाहन चालक सावधानी से अपनी गाड़ियों को मौके से निकालकर अपने गंतव्य की ओर रवाना होते है। अब तक आवारा जानवरों के हमले में आधा दर्जन से अधिक लोग काल के गाल में समा गए है, बावजूद इसके जिले का पशु विभाग इन जानवरों को पकड़कर गौशालाओं में पहुंचाने के बजाय आंखे मूंद कर किसी बड़े हादसे के इंतजार में है। जलेसर रोड स्थित पचवान के आसपास दर्जनों आवारा जानवरो को किसान अपने खेतों से भगाते नजर आए।

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में आवेदन लंबित रखने वाले एवं बैंकों में अनावश्यक छोटी-छोटी बातों को लेकर लाभार्थियों को चक्कर लगवाने वाले बैंकर्स के विरुद्ध दिए कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश : जिलाधिकारी

लाभार्थियों खातो में पहुंचाएं पेंशन : जिलाधिकारी

जिलाधिकारी रमेश रंजन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में सी0एम0 डैशबोर्ड की बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने विद्युत, परियोजना अधिकारी नेडा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, कृषि, प्रधानमंत्री आवास, मुख्यमंत्री आवास, चिकित्सा, दुग्ध, दिव्यांग पेंशन, जल जीवन मिशन, पंचायती राज, पर्यटन, सामाजिक वानिकी, पशुधन, पिछड़ा वर्ग, मत्स्य, बाल विकास, समाज कल्याण, उपायुक्त उद्योग आदि विभाग की गहनता से समीक्षा की। बैठक में अनुपस्थित अधिकारियों के वेतन रोकने तथा कार्यों में शिथिलता बरतने और कार्यों को धीमी गति से करने वाले अधिकारियों को कारण बताओं नोटिस तथा विभागीय कार्यवाही करने के निर्देश सम्बन्धित को दिए। जिलाधिकारी ने मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में लंबित आवेदन होने के कारण संबंधित बैंकों को कड़े निर्देश दिए की शीघ्रतापूर्ण लंबित आवेदनों को निस्तारण कर लाभार्थियों को लाभ पहुंचाएं एवं उन्होंने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि जो बैंके शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं के अंदर शीथिलता व लापरवाही और लाभार्थियों को बैंक के अनावश्यक बार-बार चक्कर कटवा रही है उन बैंकर्स के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। जिलाधिकारी ने कृषि रक्षा अधिकारी को कड़े निर्देश दिए की सरकार की योजनाओं का प्रचार प्रसार कर किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाएं

और उनकी समस्याओं का त्वरित गति से निदान करें। उन्होंने कहा कि किसान सम्मान निधि योजना में किसानों के खाते में धनराशि पहुंचना सुनिश्चित करें।

जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग की शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में खराब प्रगति पर गहरी नाराजगी प्रकट करते हुए सहायक अभियंता और अवर अभियंताओं पर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने राजकीय स्वशासी चिकित्सालय के प्रधानाचार्य को निर्देश दिए कि मरीजों की जांच मशीनों एवं उपकरणों को सही ढंग से संचालित कराये, जिससे मरीजों को परेशानी का सामना न करना पड़े। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी और मेडिकल कॉलेज प्राचार्य तथा मुख्य चिकित्सा अधीक्षक फिरोजाबाद को निर्देशित किया कि जिला चिकित्सालय में बीपी मशीन, एक्स-रे मशीन, डायलिसिस मशीन, सी0टी0 स्कैन आदि मशीनों एवं मरीजों से जुड़े हुए एवं मरीजों की जांच करने वाले उपकरण सुव्यवस्थित रूप से संचालित हो और मरीजों की चिकित्सा का अच्छी देखभाल हो जिससे मरीजों को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े।

उन्होंने दिव्यांग सशक्तिकरण अधिकारी को जोर देकर कहा कि दिव्यांग पेंशन की अत्यंत ही दयनीय स्थिति है लाभार्थियों के खाते में पेंशन नहीं पहुंच रही है, शीघ्रता पूर्वक पेंशन दिलाए जाना सुनिश्चित करें। इसी के साथ दिव्यांगों के नए फार्म भरवाना भी सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राम बदन राम, परियोजना निदेशक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, उपायुक्त उद्योग, लीड बैंक मैनेजर सहित संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

जनपद में विभिन्न परियोजनाओं के निर्माण कार्य को करें समय से पूरा : जिलाधिकारी

जिलाधिकारी रमेश रंजन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में 50 लाख से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। जिलाधिकारी ने परियोजना के जिलाधिकारी को संयुक्त रूप से जांच कर आख्या प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था सी0एन0डी0एस0 द्वारा थाना दक्षिण के पुराने जज्जर भवनो ग्राम पेंगु में स्थित प्राचीन शिव मंदिर का पर्यटन विकास कार्य, संयुक्त चिकित्सालय शिकोहाबाद में अग्निशमन का कार्य, तहसील शिकोहाबाद के ग्राम सांथी में गौ-संरक्षण केंद्र

निर्माण कार्यों को समय सीमा अंतर्गत न करने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कार्यदायीं संस्थाओं को नोटिस देकर उन पर कार्यवाही करने तथा उनसे संबंधित विभागों के अधिकारियों को भी कारण बताओं नोटिस निर्गत किए जाने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने राजकीय महाविद्यालय टूंडला के निर्माण में राजकीय निर्माण निगम द्वारा धीमी गति से निर्मित किए जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए समय से निर्मित किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कार्यदायी संस्था यू0पी0आर0एन0एस0 द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दीदामई के निर्माण में डाटा गलत पाए जाने पर उपमुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं उप के स्थान पर अत्याधुनिक नवीन प्रशासनिक भवनों के निर्माण कार्य की धीमी प्रगति पर समय से कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उत्तर प्रदेश पुलिस आवास निर्माण निगम लिमिटेड निर्माण इकाई द्वारा थाना मक्खनपुर में प्रशासनिक भवन के निर्माण कार्य में पेंटिंग की खराब गुणवत्ता पाए जाने पर कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था यू0पी0 प्रोजेक्ट कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा राजकीय इंटर कॉलेज नसीरपुर में अतिरिक्त कक्षा कक्ष एवं मल्टीपरपज होल का निर्माण कार्य, जनपद फिरोजाबाद में चंद्रवार जैन तीर्थ स्थल का पर्यटन विकास, सिरसागंज के की स्थापना का निर्माण कार्य, तथा 132 के0वी0 उपकेंद्र फरिहा का निर्माण कार्य, विभिन्न कार्यदायीं संस्थाओं द्वारा कराया जा रहा है।

सभी कार्यदायीं संस्थाओ और उनसे संबंधित अधिकारियों को जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया कि सभी निर्माण कार्यों को समय सीमा के अंतर्गत पूर्ण कराना सुनिश्चित करें अन्यथा विभागीय कार्यवाही के लिए तैयार रहें।

बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राम बदन राम, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी एमपी सिंह सहित संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

मैक्स की टक्कर से बाइक सवार दो युवकों की मौत

फिरोजाबाद, टूण्डला एटा मार्ग पर थाना रजावली के गाँव इमलिया स्थित दूध की डेयरी के समीप मैक्स गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार दो युवकों की मौत हो गयी पुलिस दोनों के शवों को लेकर पोस्टमार्टम के लिये जिला अस्पताल आयी है

थाना रजावली के गाँव सेवला रामपुर निवासी 22 वर्षीय विष्णु पुत्र ओमप्रकाश झा अपने साथी के साथ बाइक पर सवार होकर गाँव इमलिया जा रहे थे। बाइक सवार दोनों युवक इमलिया उमर गढ़ दूध की डेयरी के समीप पहुँचे ही थे। तभी पीछे से आ रही असन्तुलित मैक्स गाड़ी ने बाइक में टक्कर मार दी। जिसके कारण बाइक अनियन्त्रित होकर गिर गयी। और दोनों की गम्भीर चोटे आने के कारण मौत हो गयी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में ले लिया। और पोस्टमार्टम के लिये जिला अस्पताल लेकर आयी है। इधर सूचना मिलते ही दोनों मृतको के परिजन जिला अस्पताल पहुँचे, जिनमे शवो को देखकर कोहराम मचा हुआ था।

ट्रेन में यात्रा कर रहे यात्री का सफर हुआ पूरा

शिकोहाबाद। ट्रेन में यात्रा कर रहे एक यात्री का सफर ट्रेन में ही पूरा हो गया। चलती ट्रेन में यात्री की अचानक हालत खराब हुई। कंट्रोल रूम की सूचना पर जीआरपी ने शिकोहाबाद रेलवे स्टेशन पर यात्री को उतारा और अस्पताल में भर्ती कराया। जहां परीक्षण के बाद चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया।

गुरुवार की रात 10 बजे अवध एक्सप्रेस ट्रेन में बड़ोदरा से गोंडा जा रहे 45 वर्षीय विनोद निवासी रामपुर टांडा थाना इकोना जिला श्रावस्ती की अचानक ट्रेन में हालत बिगड़ गई। इसकी सूचना टुंडला कंट्रोल रूम ने शिकोहाबाद जीआरपी को दी। ट्रेन के स्टेशन पर रुकते ही जीआरपी ने व्यक्ति को ट्रेन से नीचे उतारा और 108 एंबुलेंस से उपचार के लिए जिला संयुक्त चिकित्सालय लेकर आई।

इमरजेंसी में तैनात चिकित्सक ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। जीआरपी ने मृतक को फिरोजाबाद मेडिकल कालेज भेज दिया। जीआरपी ने घटना की जानकारी मृतक के बेटा वकील पासवान को उसके मोबाइल नंबर पर देदी है। सूचना पाकर मृतक के स्वजन फिरोजाबाद के लिए रवाना हो गये हैं।

मिस्ड कॉल के माध्यम से दिलाई भाजपा की सदस्यता

फिरोजाबाद की विधानसभा सिरसागंज पांचो मण्डल क्रमशः नगला खंगर, अरांव , सिरसागंज , नैशेहरा ,और मदनपुर में भारतीय जनता पार्टी फिरोजाबाद के द्वारा सदस्यता अभियान (संगठन पर्व) के महा सम्पर्क अभियान के अंतर्गत *ब्रज क्षेत्र के प्रभारी/ प्रदेश उपाध्यक्ष/ एमएलसी मा.सन्तोष सिंह व प्रदेश उपाध्यक्ष/ जिला प्रभारी मा. ब्रज सिरसागंज अंतर्गत स्थानीय निवासियों से भेंटकर उन्हें समग्र विकास के लिए दृढ़ संकल्पित भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता मिस्डकॉल के माध्यम से ग्रहण कराई।

इस अवसर पर सामूहिक सदस्यता के लिए एकत्रित क्षेत्रीयजनों को सम्बोधित कर केंद्र व प्रदेश सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों से अवगत कराया। गरीब, किसान, युवा एवं महिलाओं के कल्याण तथा विकसित भारत के निर्माण के लक्ष्य के प्रति समर्पित हर वर्ग के व्यक्ति भाजपा परिवार का हिस्सा बनें।भारत को दुनिया की तीसरी मजबूत अर्थव्यवस्था बनाने के लिए ,भाजपा से जुड़कर भारत को करें मजबूत 8800002024 पर मिस्ड कॉल करें, सदस्य बने। इस दौरान प्रमुख रूप से डॉ अमित गुप्ता

बहादुर भारद्वाज* ने बूथ संख्या 341,342 गांव व शक्तिकेन्द्र कठफोरी , बूथ संख्या 287 गांव नगला खंदारी शक्तिकेन्द्र कारीखेडा मण्डल अरांव विधानसभा सिरसागंज के बूथ संख्या -18 बूथ संख्या 267 ग्राम व शक्तिकेन्द्र रुदावली मण्डल सिरसागंज, बूथ संख्या/ गांव भावली शक्तिकेन्द्र रुदावली सिरसागंज, बूथ संख्या 242 बघेल कालौनी शक्ति केन्द्र के आई सी और कहा कि अंत्योदय एवं गरीब कल्याण को समर्पित भारतीय जनता पार्टी की इस राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान से जुड़कर राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। सेवा, सुशासन और अंत्योदय को समर्पित भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान-2024 हैं।

जिलाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने कहा कि भाजपा सदस्यता अभियान-2024 के अंतर्गत जिला प्रवक्ता / मीडिया प्रभारी , जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष अतुल प्रताप सिंह , कमलेश राजपूत राघवेन्द्र सिंह , विपिन शिवहरे ,आकाश शर्मा , रंजना सिंह चैयरमैन सिरसागंज ,विजय प्रताप सिंह छोटू पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष , पांचों मण्डल अध्यक्ष केशव गुप्ता , अजीत राजपूत , पंकज राजपूत , यशपाल यादव , वीरू धाकरे सहित पार्टी के कार्यकताओं सहित क्षेत्रीयजन उपस्थित थे।।

एका में मकान गिरने से वृद्धा की मौत बेटा गंभीर

फिरोजाबाद। थाना एका क्षेत्र में मकान गिरने से एक वृद्ध महिला की मौत हो गई। उसका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उपचार को आगरा

भेजा गया है। मृतका के शव का पोस्टमार्टम कराया गया।

हथौली जय सिंहपुर निवासी श्रीदेवी 80 वर्ष पत्नी कायम सिंह रात को अपने बेटे अमृतपाल के साथ बरामदे में सो रही थी। प्रातः मकान भर भरा कर नीचे गिर पड़ा। दोनो मकान के मलवे में दब गए। मकान गिरने की आवाज सुन पड़ोस के लोग तुरंत वहां पहुंच गए।

लोगो ने काफी प्रयासों के बाद मां बेटा को मलवे से बाहर निकाला। पता चलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। मलबे में दबे होने के कारण वृद्ध श्रीदेवी की मौत हो गई। बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया।

घायल बेटा को उपचार के लिए एटा ले जाया गया। जहां उसकी गंभीर हालत देख चिकित्सक ने आगरा रेफर कर दिया। उसके पैर में फेक्चर बताया गया है। पुलिस मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया। जहां पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया है

सांड से टकराकर ईको स्कूल में घुसी

जसराना। तेज रफ्तार इको कार अनियंत्रित होकर सांड को रौंदते हुए स्कूल में जा घुसी। स्कूल में कार के घुसने पर वहां भगदड मच गई। कार में सवार चार लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। घायलों को लोगों ने कार में से निकालकर उपचार के लिए भेजा।

थाना एका के गांव रामपुर निवासी मुमताज अली पुत्र नसीर खान, हसन अली पुत्र नसीर खान, हसमुद्दीन पुत्र सूवेदार खान, नसीर खां पुत्र छोटे खान बृहस्पतिवार की देर सायं ईको कार में सवार होकर शिकोहाबाद से अपने गांव जा रहे थे।

थाना जसराना के एटा शिकोहाबाद मार्ग के गांव नवादा पर तेज रफ्तार इको के सामने सांड आ गया।

सांड को देख चालक के हाथ पैर फूल गए। चालक कार को नियंत्रित कर पाता उससे पहले ही कार की टक्कर सांड से हो गई। टक्कर लगने के बाद जहां सांड दूर जाकर गिरा वहीं कार अनियंत्रित होकर पास मौजूद एक कांवेंट स्कूल में जा घुसी।

गनीमत रही कि कार पिलर से जाकर रुक गई नहीं तो बडा हादसा हो सकता था।

हादसे के बाद जहां कार में सवार लोगों ने चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया वहीं मौके पर लोगों की भीड़ लग गई।

लोगों ने पुलिस को सूचना देने के साथ ही कार सवारों को बाहर निकालकर उपचार के लिए जसराना के सामुदायिक स्वास्थय केंद्र भेज दिया।

थाना प्रभारी अंजीश कुमार सिंह ने कहा सांड से टकराने के बाद अनियंत्रित हुई ईका कार स्कूल में जा घुसी।

घायलों को उपचार के लिए भेजा गया है।

सड़क दुर्घटना में घायल वृद्ध ने शिकोहाबाद अस्पताल में तोड़ा दम

फिरोजाबाद थाना मक्खनपुर क्षेत्र के रूपसपुर के समीप गुरुवार की शाम सड़क दुर्घटना में घायल हुए वृद्ध ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया पुलिस शव को लेकर जिला अस्पताल आई

रूपसपुर के समीप गुरुवार की शाम एक वृद्ध सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था जिसे उपचार के लिए संयुक्त जिला चिकित्सालय में उपचार के लिए भर्ती कराया गया था जहां शुक्रवार की दोपहर उसने दम तोड़ दिया पुलिस शव को लेकर जिला अस्पताल आई है पुलिस के अनुसार मृतक ने अपना नाम महेश पुत्र शंभू ही बताया है पता नहीं बता सका उम्र लगभग 60 वर्ष है

कूलर के करंट से युवक की मौत

फिरोजाबाद थाना उत्तर के ककरऊ मैं शुक्रवार की दोपहर कलर के पानी से करंट लगने से युवक अचेत हो गया परिजनों से उपचार के लिए सरकारी ट्रामा सेंटर लेकर आए जांच चिकित्सक ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया परिजन शव को लेकर घर चले गए

ककरऊ निवासी 32 वर्षीय अखिलेश कुमार पुत्र मुन्नालाल शुक्रवार की दोपहर कूलर में भरे पानी से हाथ धो रहे थे तभी अचानक उन्हें जोरदार करंट लग गया जिसके फल स्वरुप वह जमीन पर गिरकर बेहोश हो गए परिजनों में हड़कंप मच गया वह उसे उपचार के लिए सरकारी ट्रामा सेंटर लेकर आए जहा चिकित्सक ने परीक्षण के बाद मृत घोषित कर दिया जिसे परिजनों में कोहराम मच गया परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शव घर ले गए हैं

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रशान्त वशिष्ठ के लिये पुष्प प्रिंटर्स, बौधाश्रम फिरोजाबाद से छपकर कार्यालय दैनिक सच क्या है बौधाश्रम फिरोजाबाद से प्रकाशित।
सम्पादक- छीतरिया शर्मा
फोन नं. 05612297399.
9411927251,
9259041013,
9997830502
E-mail fzd@suchkyahai.com
suchkyahai@gmail.com
suchkyahai87@gmail.com